सोलहकारण विधान

रचयिता

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के शिष्य

अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत

मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रस्तोता

बा॰ ब्र॰ संजय भैयाजी, मुरैना

कृति	:	सोलहकारण विधान
आशीर्वाद	:	संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज
कृतिकार	:	अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज
प्रसंग	:	मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज का स्वर्णिम अवतरण वर्ष एवं रजत दीक्षा वर्ष 2023
संयोजक	:	बा॰ ब्र॰ संजय भैयाजी, मुरैना
संस्करण	:	प्रथम, 1100 प्रतियाँ
सहयोग राशि	:	40/- (पुनः प्रकाशन हेतु)
प्रकाशक	:	विद्या सुव्रत संघ
प्राप्ति स्थान	:	1. बा॰ ब्र॰ संजय भैयाजी, मुरैना मोबाइल-9425128817 2. अमर ग्रंथालय इंदौर, 9425478846
मुद्रक	:	विकास ऑफसेट, भोपाल

पुण्यार्जक

अंतर्भाव

जिनेन्द्र भगवान् की भक्ति कर्म काटने का सशक्त साधन है। जैसे लैंस के फोकस से कागज जल जाता है वैसे ही भक्ति के फोकस से हमारे कर्मरूपी कागज जल जाते हैं। भगवान् का नाम मात्र स्मरण करने से सभी किरणें फोकस बनकर पाप समूह को नष्ट करती हैं।

जिस समय पूरा विश्व कोरोना जैसी महामारी से जूझ रहा है वहीं अतिशय क्षेत्र छत्री मंदिर शिवपुरी में प्रवास के दौरान प्रभु भक्ति करते हुए आगम के आधार पर पूर्वकृत पूजन विधि को ध्यान में रखकर संयमस्वर्ण महोत्सव मण्डित संतशिरोमणि परमपूज्य आचार्य श्रीविद्यासागरजीमहाराज के परम शिष्य अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत पूज्य मुनि श्रीसुव्रतसागरजीमहाराज ने प्रस्तुत कृति **'सोलहकारण विधान'** की रचना करके महान् उपकार किया है। सोलहकारण भावना भाने से तीर्थंकरप्रकृति का बंध भव्य जीव किया करते हैं और धर्मतीर्थ का प्रवर्तन करके संसारी प्राणियों को कल्याण का मार्ग प्रशस्त करते हैं। सोलहकारण पर्व वर्ष में माघ, चैत्र, भाद्र मास में तीन बार आते हैं जो कि एक माह तक चलते हैं जिसमें सुधीश्रावकजन यथायोग्य पूजन-विधान आदि करके जिनेन्द्र भगवान की भक्ति करते हैं। प्रस्तुत कृति सभी भव्यजीवों के धर्मध्यान करने में सहायक बनेगी।

राजेश बोटा, माणिक, अर्चित, रूपेश, सौरभ, पुनीत, पियूष अभिषेक और पाठशाला की बहनें प्राची, ऐशु, आशी, स्वाति, खुशी आदि जिन लोगों ने इस कृति के संयोजन में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहयोग किया उन सभी को बहुत-बहुत साधुवाद एवं मुनिश्री का आशीर्वाद...। सभी भगवान् की भक्ति करके अपूर्व पुण्यार्जन करेंगे इसी भावना के साथ सभी को सादर जय-जिनेन्द्र!

तुम्हें सारथी बना लिया है, मोक्षपुरी के गजरथ का।
तुरत हमें दर्शन करवा दो, शुद्धातम के तीरथ का॥
कहो कहाँ हस्ताक्षर कर दें, हमको भी स्वीकार करो।
भक्त खड़े नत हाथ जोड़कर, हम सबका उद्धार करो॥

– बा.ब्र. संजय, मुरैना

विषय सूची

विषय	पृ. क्र.
०१. मंगल भावना	०५
०२. नवदेवता पूजन	०६
०३. अर्घ्यावली	०९
०४. महाऽर्घ्य-शांतिपाठ-विसर्जन	१३
०५. सिद्धभक्ति	१६
०६. मंगलाचरण	१७
०७. सोलहकारण पूजन	१८
०८. दर्शनविशुद्धि भावना-पूजन	२१
०९. विनयसम्पन्नता भावना-पूजन	२८
१०. शीलव्रतेष्वनतिचार भावना-पूजन	३२
११. अभीष्णज्ञानोपयोग भावना-पूजन	३७
१२. संवेग भावना-पूजन	४३
१३. शक्तितस्त्याग भावना-पूजन	४९
१४. शक्तितस्तप भावना—पूजन	५४
१५. साधुसमाधि भावना—पूजन	५८
१६. वैयावृत्य भावना-पूजन	६२
१७. अर्हद्भक्ति भावना-पूजन	६७
१८. आचार्यभक्ति भावना-पूजन	७५
१९. बहुश्रुतभक्ति भावना-पूजन	८१
२०. प्रवचनभक्ति भावना-पूजन	८६
२१. आवश्यकापरिहाणि भावना—पूजन	९२
२२. मार्गप्रभावना भावना-पूजन	९६
२३. प्रवचनवात्सल्य भावना-पूजन	१००
२४. समुच्चय जयमाला	१०५
२५. विधान आरती	१०६

मंगल मंत्र

धर्म चाहने वाले बोलें, ओम् णमो अरिहंताणं।
मोक्ष चाहने वाले बोलें, ओम् णमो सिद्धाणं।
दीक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो आइरियाणं।
शिक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो उवज्झायाणं।
शांति चाहने वाले बोलें, ओम् णमो लोए सव्वसाहूणं॥
जिनशासन के दर्शक बोलें, ऐसो पञ्च णमोयारो।
नवदेवों के सेवक बोलें, सव्व-पावप्पणासणो।
सिद्धों के आराधक बोलें, मंगलाणं च सव्वेसिं।
शुद्धातम के भावक बोलें, पढमं होई मंगलम्॥

मंगल भावना

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निजमंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥१॥ तेरा...
जिन माँ बाबुल ने जन्मा है, उनका मंगल होवे।
जिन बन्धु ने पाला पोषा, उनका मंगल होवे॥
जिन मित्रों ने हमें सम्हाला, उनका मंगल होवे।
जिन गुरुओं ने ज्ञान दिया है, उनका मंगल होवे॥२॥ तेरा...
जो धरती नभ आश्रय देते, उनका मंगल होवे।
जिस जलवायु से जीते हैं, उसका मंगल होवे॥
जिस अग्नि से जीवन चलता, उसका मंगल होवे।
जिन तरुओं से भोजन मिलता, उनका मंगल होवे॥३॥ तेरा...
हम जिस दुनियाँ में रहते हैं, उसका मंगल होवे।
हम जिस भारत देश में रहते, उसका मंगल होवे॥
हम जिस राज्य प्रान्त में रहते, उसका मंगल होवे।
हम जिस नगर शहर में रहते, उसका मंगल होवे॥४॥ तेरा...

===

श्री नवदेवता पूजन

(हरिगीतिका)

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनाएँ गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गए जिन-तीर्थ हम॥
अरिहंत सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमाएँ जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिए हमको शरण॥

(दोहा)

नव देवों को हम भजें, करें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलाएँ।
फिर पीछे आँसु बहाके, कर हाय! हाय! चिल्लाएँ॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें वसाएँ, वे राख हमें कर देते॥
तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

हम जिनको गले लगाएँ, वे गला हमारा घोंटें।
वे हमको खूब रुलाएँ, हम जिनके आँसू पोंछें॥
यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाए।

नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के काँटे, तजने पुष्पों को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटाई।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

गोदी में जिन्हें खिलाएँ, हम काजल जिन्हें लगाएँ।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखाएँ॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।
वे घर-घर हमें फिराएँ, सब पाप हमीं पर थोपें॥
बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

बदनाम हुए हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥
अपनों की आँख-मिचौली, तुम सम तजने फल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबाएँ।
फिर देकर दाग जलाएँ, हम जिन पर प्राण लुटाएँ॥

ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

(भुजंगप्रयात)

जितेन्द्री हितैषी अरिहंत प्यारे, हमें तारते सो नमोऽस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वन्दन हमारे॥ १॥
परम पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोऽस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥ २॥
दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोऽस्तु हमारी।
यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुए पूर्ण सपने॥ ३॥
सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानन्द हमको मिलेगा।
जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शान्ति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति॥ ४॥
जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचे, करें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे॥ ५॥
यही देवता हैं नवों पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें॥ ६॥
जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोऽस्तु सदा ही इन्हें हो॥ ७॥
हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद विज्ञान से कर्म खोवें।
नवों देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहंत फिर सिद्ध हम भी॥ ८॥
हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे॥ ९॥

(दोहा)

मुक्तिरमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दु:खों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

अर्घ्यावली

अकृत्रिम चैत्यालय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अर्हंतों बिन जिन बिम्बों से, धर्म ध्यान हम करते हैं।
बिम्ब बिना चैत्यालय सुन लो, भक्त न पूजा करते हैं॥
अर्घ्य चढ़ा के मंदिर पूजें, तारणतरण खिवैया सा।
अकृत्रिम चैत्यालय भज के, पाएँ तीर तिरैया सा॥

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम चैत्यालय संबंधी जिनबिम्बेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

विद्यमान बीसतीर्थंकर का अर्घ्य (दोहा)

विद्यमान तीर्थंकरा, विदेहक्षेत्र के बीस।
आत्म द्रव्य के लाभ को, करें नमोऽस्तु धर शीश॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्य: पूर्णार्घ्यं...।

सिद्धपरमेष्ठी का अर्घ्य (सखी)

कर नष्ट अष्ट कर्मों को, तुमने निज नगर वसाया।
तब मुक्तिवधू ने तुमको, झट अपने गले लगाया॥
इस देह नगर की दुनियाँ, अपने सम दूर करा दो।
अर्घ्यार्पण करें नमोऽस्तु, हमको भी सिद्ध बना लो॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनंतानंत सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

चौबीसी का अर्घ्य

(लय–चौबीसी वत्...)

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पाएँ आत्म फुहार, सींचें निज बगिया॥

तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शांति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

तीस चौबीसी का अर्घ्य (सखी)

नहिं केवल अर्घ्य चढ़ाने, नहिं श्रेष्ठ पदों को पाने।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोऽस्तु करने॥

ॐ ह्रीं तीस चौबीसी संबंधी सप्तशत विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री वृषभनाथ स्वामी का अर्घ्य (शुद्ध गीता)

मिलाकर आठ द्रव्यों को, बनाया अर्घ्य मनहारी।
बिठा दो आठवी भू पर, नशें दुख द्वन्द्व दुखकारी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री चंद्रप्रभ स्वामी का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट अंगमय नमस्कार कर, अष्ट शुद्धिमय आये हम।
अष्ट कर्म को हरने स्वामी, अष्ट द्रव्य भी लाये हम॥
अष्टम वसुधा मिलती, अष्टम-चन्द्रप्रभु की पूजन से।
यश वैभव उत्तम पद मिलते, सविनय अर्घ्य समर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री शांतिनाथ स्वामी का अर्घ्य (मालती)

जब-जब शांति विधान किया ना, तब-तब है हर क्रिया अधूरी।
जब-जब है हर क्रिया अधूरी, तब-तब न कम हो आपस की दूरी॥
जैसे ही शांति विधान रचाये, अंदर से मुक्ति का पाया इशारा।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, चरणों में अर्पित अर्घ्य हमारा॥

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री नेमिनाथ स्वामी का अर्घ्य

(लय : श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ा के अर्घ्य, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥

प्रभु देख प्राणियों का क्रंदन, झट तजे राज राजुल बंधन।
फिर माँ-बाबुल का तज के दाना पानी, प्रभु बने भेद विज्ञानी।
श्री नेमिप्रभु के....॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री पार्श्वनाथ स्वामी का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

द्रव्य मिला वसु अर्घ्य बनाये, भक्त मूल्य इसका जानें।
ऋद्धि-सिद्धि मंगलमय सक्षम, इच्छा पूरक भी मानें॥
अर्घ्य चढ़ा अनर्घपद पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जायें॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री महावीर स्वामी का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

हम तो एक जमीं के कण हैं, तीन लोक के तुम स्वामी।
अपना जीवन निंदित है पर, श्रेष्ठ पूज्य तुम जगनामी॥
ओस बूँद हम रत्नाकर तुम, रत्नों से झोली भर दो।
हम तो अर्घ्य चढ़ाएँ सादर, नजर दया की तुम कर दो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

बाहुबली भगवान का अर्घ्य (शंभु)

वैराग्य तुम्हारा देखा तो, भरतेश झुके भू अंबर भी।
तब मुक्तिवधू नत नयना हो, वरमाला करे स्वयंवर भी॥
हो काश! हमारा भी ऐसा, सो अर्घ्य मनोहर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सोलहकारण का अर्घ्य

(आंचलीबद्ध चौपाई)

प्रासुक द्रव्य मिलाकर आठ, अर्घ्य बना करलें जिन पाठ।
करें कल्याण, पूजन कर पाएँ निर्वाण॥
भजें भावना सोलह रोज, तीर्थंकर पद की हो खोज।
बनें जिनराज, सो नमोऽस्तु कर पूजें आज॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचमेरू का अर्घ्य

पंचमेरू जिनशासन पर्व, भक्त चढ़ाके जिनको अर्घ्य।
करें त्यौहार, कर लें प्रभु सा निज उद्धार॥
पंचमेरू मंदिर जिन ईश, आठ हजार छह सौ चालीस।
भजें सुर लोग, कर नमोऽस्तु पूजें हम लोग॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरूसंबंधि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

नन्दीश्वर का अर्घ्य

यह अर्घ्य दिखे कमजोर, पर बलवान बड़े।
जो खींचे प्रभु की ओर, सो हम आन खड़े॥
हम दुख संकट लें जीत, निज पर राज करें।
छप्पन सौ सोलह बिंब, नन्दीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

दसलक्षण का अर्घ्य (सखी)

यह अर्घ्य चढ़ा हो जादू, झट धर्म बना दे साधु।
ले पिछी कमण्डल डोलें, पट मोक्षमहल के खोलें॥
दसलक्षण के केशरिया, हम रंग में रंगने आये।
पूजा में करके नमोऽस्तु, दस धर्म मनाने आये॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

रत्नत्रय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

उपसर्गों से परीषहों से, डरकर रत्नत्रय न लिया।
हीरे जैसा मानव जीवन, कौड़ी जैसा गवां दिया॥
जड़ द्रव्यों के विकल्प तज के, चेतन धाम मिले हमको।
सो यह अर्घ्य करें हम अर्पित, हो नमोऽस्तु रत्नत्रय को॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयाय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जिनवाणी का अर्घ्य (त्रिभंगी)

जिनवाणी मैया, संयम नैया, दे के भैया, मुक्त करें।
सो करें सवारी, हों अनगारी, मुक्ति नारी, प्राप्त करें॥
तीर्थंकर वाणी, सुनकर ज्ञानी, गणधर स्वामी, श्रुत रचते।
माँ सरस्वती हम, पाने आतम, अर्घ्य से अर्चन, अब करते॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदेव्यै अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सप्तर्षि का अर्घ्य (दोहा)

श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय, सर्वसुन्दर जयवान।
विनयलालस जयमित्रजी, भजें सप्तऋषि नाम॥

ॐ ह्रीं श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय सर्वसुन्दर जयवान विनयलालस जयमित्राख्य-चारणऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं...।

निर्वाणक्षेत्र का अर्घ्य (शुद्ध गीता)

उसी मय आत्मा होती, जिसे जो चाहते मन से।
किया जब ध्यान सिद्धों का, मिले सो सिद्ध भगवन से॥
करें शुद्धात्म सिद्धों सम, अतः यह अर्घ्य अर्पित है।
भजें निर्वाण क्षेत्रों को, नमोऽस्तु भी समर्पित है॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त मुनिभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री सम्मेदशिखर का अर्घ्य (शंभु)

सम्मेदशिखर का तीरथ तो, सब तीर्थों का ही सार रहा।
सो इसकी तीर्थ वन्दना बिन, हम समझें सब निस्सार रहा॥
अब अर्घ्य चढ़ा हर टोंकों को, कर परिक्रमा निज खोज रहे।
सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

अतुलनीय विद्यागुरुवरजी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमायें फीकी पड़तीं, सज न सके आभरणों से॥
यूँ तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

महार्घ्य (हरिगीतिका)

अर्हंत सिद्धाचार्य आदि, देव परमेष्ठी भजें।
रत्नत्रयी दसधर्म पूजें, भावना सोलह भजें॥
कृत्रिम अकृत्रिम बिंब आलय, हम भजें त्रयलोक के।
अनुयोग चारों तीर्थ पाँचों, पूजते हम ढोक दे॥

प्रभु नाम कल्याणक भजें, नन्दीश्वरा मेरु भजें।
श्री सिद्ध-अतिशयक्षेत्र पूजें, तीस चौबीसी भजें॥
मन से वचन से काय से हम, जैनशासन पूजते।
जिन पूजकर निज प्राप्ति हेतु, चेतना सुख खोजते॥

(दोहा)

सर्व पूज्य को हम भजें, आत्मसिद्धि के काज।
महा अर्घ्य ले पूजते, करके नमोऽस्तु आज॥

ॐ ह्रीं भावपूजा-भाववंदना-त्रिकालपूजा-त्रिकालवंदना-कृत-कारित-अनुमोदना-विषये श्री अर्हंत-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-रूप-पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोग-रूप-द्वादशांग-जिनागमेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि-दशलक्षण-धर्मेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्ध्यादि-षोडशकारणेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नमः। उर्ध्वलोक-मध्यलोक-अधोलोक-संबंधिनः-त्रिलोक-स्थित-कृत्रिम-अकृत्रिम-जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्र-स्थित-विद्यमान-विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः। पंचभरत-पंचऐरावत-दशक्षेत्र-संबंधिनः त्रिंशत्-चतुर्विंशति-संबंधिनः-सप्तशतक-विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः। नंदीश्वरद्वीप-संबंधिनः-द्विपञ्चाशत्-जिनालयस्थ-पंचसहस्त्र-षट्शतक-षोडश-जिनबिम्बेभ्यो नमः। पञ्चमेरु-सम्बधी-अशीति जिनालयस्थ-अष्टसहस्त्र-षट्शतक-चत्वारिंशत्-जिनबिम्बेभ्यो नमः। श्रीसम्मेदशिखर - अष्टापद - गिरनार - चम्पापुर - पावापुर - कुंडलपुर - पवाजी-सोनागिरादि-सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः।जैनबद्री-मूढ़बद्री-हस्तिनापुर-तिजारा-पद्मपुरा-महावीरजी आदि-अतिशय-क्षेत्रेभ्यो नमः। श्रीवृषभादि-वीरान्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरादि-नवदेवता-जिन-समूहेभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमतं भगवंतं कृपालसंतं श्री वृषभादि-वीरांतान् चतुर्विंशति तीर्थंकर आद्यानांआद्ये जम्बूद्वीपे - भरतक्षेत्रे - आर्यखण्डे - भारतदेशे - मध्यप्रदेशे-.....जिलान्तर्गते.....मासोत्तममासे.....मासे.....पक्षे....तिथौ....वासरे..मुनि-आर्यिकाणां-श्रावकश्राविकाणां सकलकर्मक्षयार्थं जलादि-महाऽर्घ्यं...।

शांतिपाठ (हरीगीतिका)

हम इन्द्र चक्री तो नहीं बस, मूढ़ जैसे भक्त हैं।
धन ज्ञान वा सम्यक् क्रिया की, शास्त्र विधि से रिक्त हैं॥
बस आपके श्रद्धालु हैं हम, भक्ति को मजबूर हों।
सो गल्तियाँ होना सहज हैं, जो क्षमा से दूर हों॥
तुम तो क्षमा अवतार हो, प्रभु दान दो उत्तम क्षमा।

तो हम क्षमाधारी बनें कुछ, पुण्य पूजा से कमा॥
जब तक क्षमा का धाम निज में, ना मिले विश्राम तो।
तब तक मिले अर्हंत शरणा, सिद्ध प्रभु का ध्यान हो॥

(दोहा)

परमेष्ठी नवदेवता, चौबीसों भगवान।
पाप हरें सुख शांति दें, करें विश्व कल्याण॥

(शांतये शांतिधारा...) (जल की धारा करें)

अपने उर में बह उठे, विश्व शांति की धार।
कर्मों के ग्रह शांति को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

(शांतये शांतिधारा...) (चंदन की धारा करें)

(हरीगीतिका)

अभ्यास शास्त्रों का करें, निर्ग्रंथ गुरु की अर्चना।
हो विश्व शांति आत्म शांति, पूर्ण हो यह प्रार्थना॥
हों रोग ना व्याधि किसी को, खेद ना दुख कष्ट हों।
मौसम सदा अनुकूल होवे, जीव ना पथ भ्रष्ट हों॥

(दोहा)

परमेष्ठी का मंत्र जो, महामंत्र णमोकार।
हम सब मिलकर अब यहाँ, मत्र जपें नौ बार॥

(पुष्पांजलिं... कायोत्सर्गं...)

विसर्जन पाठ

(दोहा)

ज्ञान और अज्ञान से, रही भूल जो नाथ।
आगम-विधि वो पूर्ण हो, पाकर तेरा हाथ॥
मंत्रादिक से हीन मैं, नहिं पूजन का ज्ञान।
मुझे क्षमा कर दीजिए, चरण शरण का दान॥
शीश झुकाऊँ आज मैं, हो पूजा सम्पन्न।
पाप हरो मंगल करो, करो मुझे प्रभु धन्य॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः अर्हदादि परमेष्ठिनः पूजन विधिं विसर्जनं करोमि। अपराध क्षमापणं भवतु। (कायोत्सर्गं...)

===

सिद्धभक्ति (प्राकृत)

असरीरा जीवघणा, उवजुत्ता दंसणेय णाणेय।
सायार मणायारा, लक्खणमेयं तु सिद्धाणं॥
मूलोत्तर पयडीणं, बंधोदयसत्त-कम्म उम्मुक्का।
मंगलभूदा सिद्धा, अट्ठगुणा तीद संसारा॥
अट्ठ वियकम्म वियला, सीदीभूदा णिरंजणा णिच्चा।
अट्ठ गुणा किदकिच्चा, लोयग्गणिवासिणो सिद्धा॥
सिद्धा णट्ठट्ठ मला, विसुद्ध बुद्धीय लद्धि सब्भावा।
तिहुअणसिर-सेहरया, पसियंतु भडारया सव्वे॥
गमणागमण विमुक्के, विहडियकम्मपयडि संघारा।
सासह सुह संपत्ते, ते सिद्धा वंदिमो णिच्चं॥
जय मंगल भूदाणं, विमलाणं णाणदंसणमयाणं।
तइलोइ-सेहराणं, णमो सया सव्व सिद्धाणं॥
सम्मत्त-णाणदंसण-वीरिय सुहुमं तहेव अवगहणं।
अगुरुलघु अव्वावाहं, अट्ठगुणा होंति सिद्धाणं॥
तवसिद्धे णयसिद्धे, संजमसिद्धे चरित्रसिद्धे य।
णाणम्मि दंसणम्मि य, सिद्धे सिरसा णमस्सामि॥

इच्छामि भंते! सिद्धभत्तिकाउस्सग्गोकओ तस्सालोचेउं सम्मणाण सम्मदंसण सम्मचरित्त जुत्ताणं अट्ठविह कम्म-विप्पमुक्क ाणं अट्ठगुण-संपण्णाणं उड्ढलोयमत्थयम्मि पइट्ठियाणं तवसिद्धाणं णयसिद्धाणं संजमसिद्धाणं चरित्तसिद्धाणं अतीताणागदवट्टमाणकालत्तय सिद्धाणं सव्वसिद्धाणं णिच्चकालं अंचेमि पुज्जेमि वंदामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बेहिलाओ सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं।

मंगलाचरण

ओम् नमः सिद्धेभ्यः-४

(जोगीरासा)

जीवों की चैतन्य शक्ति में, भाव शक्ति भी होती।
भले बुरे भावों के फल से, सुखी दुखी भी होती॥
भाव शुभाशुभ सुख दुख देते, शुद्ध भाव से मुक्ति।
अतः अशुभ भावों को तजने, यह विधान दे युक्ति॥
ओम् नमः सिद्धेभ्यः-४

इस विधान से अशुभ त्याग के, शुभ भावों को भाएँ।
अनुष्ठान व्यवहार क्रियायें, करके भाव सजाएँ॥
शुध्द भाव को करें साधना, सदा भावना भाएँ।
रोग महामारी दुख हर के, सुखी स्वस्थ हो जाएँ॥
ओम् नमः सिद्धेभ्यः-४

सोलहकारण विधान द्वारा, भव के सब सुख पाते।
और करें क्या अधिक प्रशंसा, तीर्थंकर पद पाते॥
तीर्थंकर महिमा का जग में, किसको मिला किनारा।
सो चरणो में नमोस्तु करना, है सौभाग्य हमारा॥
ओम् नमः सिद्धेभ्यः-४

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी ना होवे॥
कण-कण मंगल, क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
सोलहकारण भाय भावना, जग का मंगल होवे॥
ओम् नमः सिद्धेभ्यः-४

===

विधान प्रारम्भ

सोलहकारण पूजन

स्थापना (दोहा)

सोलहकारण भावना, भव्य जीव जो भाएँ।
तीर्थंकर वो हम भजें, कर नमोऽस्तु गुण गाएँ॥

(ज्ञानोदय)

मिथ्या हर सम्यग्दर्शन कर, सोलहकारण जो भाएँ।
तीर्थंकरप्रकृति वो बाँधे, पाँचों कल्याणक पाएँ।
धर्म चक्र के बनें प्रवर्तक, निज पर का उद्धार करें।
लोक पूज्य को हम भी पूजें, नमोऽस्तु बारम्बार करें॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणाणि अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(आंचली बद्ध चौपाई)

जल धोता मिथ्या मल गाँव, देता रत्नत्रय का गाँव।
अतः ले नीर, भवसागर तैरें बन वीर।
भजें भावना सोलह रोज, तीर्थंकर पद की हो खोज।
बनें जिनराज, सो नमोऽस्तु कर पूजें आज॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

चन्दन हरता तन का ताप, पथ दे हर ले भव संताप।
अतः ले गंध, पाएँ संयम परमानन्द॥ भजें...

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

क्षत विक्षत में कर विश्वास, धर न सके अक्षय संन्यास।
अतः ले पुंज, हम भी पाये आतम कुंज॥ भजें...

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

विषयों की नित उड़ती धूल, सो कर बैठे कामी भूल।
अतः ले फूल, विषय भोग के त्यागें शूल॥ भजें...

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यः कामबाण विध्वंसानाय पुष्पाणि...।

बिन विवेक हम कर आहार, दुखी हुए हो कर बीमार।
अतः नैवेद्य, भेंट करें बनने निज वैद्य॥ भजें...

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

भेद ज्ञान के खोलें नैन, सो हम करें आरती जैन।
मिटे अंधयार, दीपों वाला हो त्यौहार॥
भजें भावना सोलह रोज, तीर्थंकर पद की हो खोज।
बनें जिनराज, सो नमोऽस्तु कर पूजें आज॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

शुद्ध भाव तो मिल न पाएँ, शुभ भावों पर हम ललचाँए।
अतः ले धूप, खे महकायें चिन्मय रूप॥ भजें...

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

विष फल है सारा संसार, जिसे भोगकर हों लाचार।
अतः फल भेंट, पूजा कर पाएँ निज भेंट॥ भजें...

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

प्रासुक द्रव्य मिलाकर आठ, अर्घ्य बना करलें जिन पाठ।
करें कल्याण, पूजन कर पाएँ निर्वाण॥ भजें...

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

भाकर सोलह भावना, हों तीर्थंकर सिद्ध।
नमोऽस्तु कर जयमाल कर, होते भक्त प्रसिद्ध॥

(चौपाई)

प्राणी अनादि मिथ्यादृष्टि, पाकर साँची करुणा दृष्टि।
मिथ्या हर हों सम्यग्दृष्टि, भाएँ भावना बदले सृष्टि॥१॥
जीवमात्र के हों हितकारी, दरशविशुद्धि धरें उपकारी।
विनय मोक्ष का महल घुमाये, सब में मैत्री भाव जगाये॥२॥
जो निर्दोष शील आचारी, उसे पूजते सब संसारी।
ज्ञान तत्त्व का जो अभ्यासी, मोक्ष चले बनकर संन्यासी॥३॥
धर संवेग तजे जग-जाला, निज वैभव का खोले ताला।
दान-त्याग जो खुश हो करते, ऋद्धि-सिद्धि से निज घर भरते॥४॥
यथाशक्ति जो करें तपस्या, निज पर की वह हरें समस्या।
साधुसमाधि करें जो प्राणी, अंत समाधि हो कल्याणी॥५॥
वैयावृत्य करें जो सेवा, वही बनें देवों के देवा।

अरिहंतों के जो अनुरागी, वही बनें आतम के स्वादी॥६॥
आचार्यों के जो श्रद्धालु, धर्म अहिंसा धरें दयालु।
उपाध्याय बहुश्रुत की ज्योति, पाप हरें दे आतम मोती॥७॥
प्रवचन शास्त्रों के अध्येता, मोक्षमार्ग के बनते नेता।
जो अवश्य आवश्यक पाले, दुख संकट से नाँव तिरा ले॥८॥
जिनशासन ध्वज जो फहराये, वो शुद्धातम को चमकाये।
गौ-बछड़े सी ममता धारे, निजानन्द चैतन्य निखारे॥९॥
यही भावना भव की नाशी, परमातम गुण आत्म विकासी।
'सुव्रत' यही भावना भाएँ, तीर्थंकर बन सिद्ध कहायें॥१०॥

(सोरठा)

तीर्थंकर के योग्य, सोलहकारण भावना।
कर नमोऽस्तु हम लोग, भाएँ करने साधना॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

सोलहकारण नित करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, सोलहकारण भाय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

-: समुच्चय जाप्य :-

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारण-भावनायै नमः।

-: प्रत्येक भावना की जाप :-

१. ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि-भावनायै नमः।
२. ॐ ह्रीं श्री विनयसम्पन्नता-भावनायै नमः।
३. ॐ ह्रीं श्री शीलव्रतेष्वनतिचार-भावनायै नमः।
४. ॐ ह्रीं श्री अभीक्ष्णज्ञानोपयोग-भावनायै नमः।
५. ॐ ह्रीं श्री संवेग-भावनायै नमः।
६. ॐ ह्रीं श्री त्याग-भावनायै नमः।
७. ॐ ह्रीं श्री तपो-भावनायै नमः।
८. ॐ ह्रीं श्री साधुसमाधि-भावनायै नमः।
९. ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्य-भावनायै नमः।
१०. ॐ ह्रीं श्री अर्हद्भक्ति-भावनायै नमः।
११. ॐ ह्रीं श्री आचार्यभक्ति-भावनायै नमः।
१२. ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुतभक्ति-भावनायै नमः।
१३. ॐ ह्रीं श्री प्रवचनभक्ति-भावनायै नमः।
१४. ॐ ह्रीं श्री आवश्कापरिहाणि-भावनायै नमः।
१५. ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावना-भावनायै नमः।
१६. ॐ ह्रीं श्री प्रवचनवात्सल्य-भावनायै नमः।

१. दर्शनविशुद्धि भावना-पूजन

स्थापना (शंभु)

जिन मोक्ष मार्ग पर श्रद्धा रख, सम्यग्दर्शन निर्मल करना।
फिर जीव मात्र का हित चाहें, निज आतम को उज्जवल करना॥
ये दर्शनविशुद्धि भावनाएँ, प्रभु तीर्थंकर पद दान करें।
सो करके नमोऽस्तु हम पूजें, मन मंदिर में आह्वान करें॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि भावना अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(हाकलिका)

मिथ्या का जल हरने को, सम्यक् निर्मल करने को।
दर्शनविशुद्धि हम पूजें, नमोऽस्तु के स्वर भी गूँजें॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि-भावनायै जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

राग द्वेष संताप हरें, चंदन सा जिन जाप करें।
दर्शनविशुद्धि हम पूजें, नमोऽस्तु के स्वर भी गूंजें॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि-भावनायै संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

भ्रमण हरें निज घर जाएँ, तीर्थंकर पदवी पाएँ।
दर्शनविशुद्धि हम पूजें, नमोऽस्तु के स्वर भी गूंजें॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि-भावनायै अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

कामबाग को शुष्क करें, ब्रह्मबाग के पुष्प खिलें।
दर्शनविशुद्धि हम पूजें, नमोऽस्तु के स्वर भी गूंजें॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि-भावनायै कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

भोजन के रसपान तजें, आतम का रसपान करें।
दर्शनविशुद्धि हम पूजें, नमोऽस्तु के स्वर भी गूंजें॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि-भावनायै क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

हर लें मोह रात काली, कर लें सम्यक दीवाली।
दर्शनविशुद्धि हम पूजें, नमोऽस्तु के स्वर भी गूंजें॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि-भावनायै मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

कर्मों की दुर्गंध हरें, निज में निज की गंध भरें।
दर्शनविशुद्धि हम पूजें, नमोऽस्तु के स्वर भी गूंजें॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि-भावनायै अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

अशुभ भाव की जड़ काटें, शुभ शुद्धों के फल बाँटें।
दर्शनविशुद्धि हम पूजें, नमोऽस्तु के स्वर भी गूँजें॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि-भावनायै मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

अर्घ्य चढ़ा ये भाव भजें, तीर्थंकर दरबार सजें।
दर्शनविशुद्धि हम पूजें, नमोऽस्तु के स्वर भी गूँजें॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि-भावनायै अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अर्घ्यावली

आठ दोष गुण (दोहा)

देव शास्त्र गुरु धर्म में, शंका भय निष्काम।
दर्शनविशुद्धि का यही, निःशंकित गुण नाम॥

ॐ ह्रीं श्री निःशंकित-गुणसहित दर्शनविशुद्धि-भावनायै अर्घ्यं...॥ १॥

नहीं चाहते धर्म कर, सुर चक्री के धाम।
दर्शनविशुद्धि का यही, निःकांक्षित गुण नाम॥

ॐ ह्रीं श्री निःकांक्षित-गुणसहित दर्शनविशुद्धि-भावनायै अर्घ्यं...॥ २॥

घृणा योग्य पर वस्तु में, जब नहिं घिन का काम।
दर्शनविशुद्धि का यही, निर्विचिकित्सा नाम॥

ॐ ह्रीं श्री निर्विचिकित्सा-गुणसहित दर्शनविशुद्धि-भावनायै अर्घ्यं...॥ ३॥

धर्म आयतन जाँच के, तजें मूढ़ता धाम।
दर्शनविशुद्धि का यही, अमूढ़दृष्टि गुण नाम॥

ॐ ह्रीं श्री अमूढ़दृष्टि-गुणसहित दर्शनविशुद्धि-भावनायै अर्घ्यं...॥ ४॥

निज-गुण पर-अवगुण ढकें, तीर्थंकर श्रद्धान।
दर्शनविशुद्धि का यही, उपगूहन गुण नाम॥

ॐ ह्रीं श्री उपगूहन-गुणसहित दर्शनविशुद्धि-भावनायै अर्घ्यं...॥ ५॥

शिव पथ विचलित जीव को, दें शिक्षा लें थाम।
दर्शनविशुद्धि का यही, स्थितिकरण गुण नाम॥

ॐ ह्रीं श्री स्थितिकरण-गुणसहित दर्शनविशुद्धि-भावनायै अर्घ्यं...॥ ६॥

गौ-बछड़े जैसा रखें, साधर्मी का ध्यान।
दर्शनविशुद्धि का यही, वात्सल्य गुण नाम॥

ॐ ह्रीं श्री वात्सल्य-गुणसहित दर्शनविशुद्धि-भावनायै अर्घ्यं...॥ ७॥

तन मन धन अर्पित करें, उच्च धर्म का नाम।

दर्शनविशुद्धि का यही, प्रभावना गुण नाम॥

ॐ ह्रीं श्री प्रभावना-गुणसहित दर्शनविशुद्धि-भावनायै अर्घ्यं...॥ ८॥

आठ मद (चौपाई)

हुए वेद पुराण पढ़ ज्ञानी, हम सा कौन कहें अज्ञानी।
यही ज्ञानमद हम भी हर लें, दर्शनविशुद्धि सम्यक् कर लें॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानमदरहित दर्शनविशुद्धि-भावनायै अर्घ्यं...॥ ९॥

अपनी पूजा मान प्रशंसा, सुनकर खुश हो मानी मंशा।
यह पूजामद हम भी हरलें, दर्शनविशुद्धि सम्यक् कर लें॥

ॐ ह्रीं श्री पूजामदरहित दर्शनविशुद्धि-भावनायै अर्घ्यं...॥ १०॥

दादा बापू का यश पाकर, वंश कथा कहना इठलाकर।
ऐसा कुलमद हम भी हर लें, दर्शनविशुद्धि सम्यक् कर लें॥

ॐ ह्रीं श्री कुलमदरहित दर्शनविशुद्धि-भावनायै अर्घ्यं...॥ ११॥

नाना मामा माँ की चर्चा, कह के कैसे हो निज अर्चा।
यही जातिमद हम भी हर लें, दर्शनविशुद्धि सम्यक् कर लें॥

ॐ ह्रीं श्री जातिमदरहित दर्शनविशुद्धि-भावनायै अर्घ्यं...॥ १२॥

कह के अपना शौर्य पराक्रम, महाबली कहलाना उत्तम।
ऐसा बलमद हम भी हर लें, दर्शनविशुद्धि सम्यक् कर लें॥

ॐ ह्रीं श्री बलमदरहित दर्शनविशुद्धि-भावनायै अर्घ्यं...॥ १३॥

करके साधना हुईं ऋद्धियाँ, पाखण्डों की करें सिद्धियाँ।
यही ऋद्धिमद हम भी हर लें, दर्शनविशुद्धि सम्यक् कर लें॥

ॐ ह्रीं श्री ऋद्धिमदरहित दर्शनविशुद्धि-भावनायै अर्घ्यं...॥ १४॥

घोर तपस्या कर तूफानी, हम हैं बड़े कहें अभिमानी।
ऐसा तपमद हम भी हर लें, दर्शनविशुद्धि सम्यक् कर लें॥

ॐ ह्रीं श्री तपमदरहित दर्शनविशुद्धि-भावनायै अर्घ्यं...॥ १५॥

कामदेव सा पा सुंदर तन, सब की हंसी उडाये यौवन।
यही रूपमद हम भी हर लें, दर्शनविशुद्धि सम्यक् कर लें॥

ॐ ह्रीं श्री रूपमदरहित दर्शनविशुद्धि-भावनायै अर्घ्यं...॥ १६॥

छह अनायतन

वीतराग सर्वज्ञ नहीं जो, रागी द्वेषी देव नहीं वो।
यह कुदेव अनायतन हर लें, दर्शनविशुद्धि सम्यक् कर लें॥

ॐ ह्रीं श्री कुदेव-अनायतनरहित दर्शनविशुद्धि-भावनायै अर्घ्यं...॥ १७॥

कुदेव देवि के भक्त पुजारी, मिथ्या करें प्रशंसा भारी।
कुदेव भक्त अनायतन हर लें, दर्शनविशुद्धि सम्यक् कर लें॥
ॐ ह्रीं श्री कुदेवभक्त-अनायतनरहित दर्शनविशुद्धि-भावनायै अर्घ्यं...॥ १८॥

हिंसामय जो धर्म बतायें, वो कुधर्म दुख मार्ग दिखाएँ।
यह कुधर्म अनायतन हर लें, दर्शनविशुद्धि सम्यक् कर लें॥
ॐ ह्रीं श्री कुधर्म-अनायतनरहित दर्शनविशुद्धि-भावनायै अर्घ्यं...॥ १९॥

कुधर्म के सेवक अनुयायी, क्या सुख पाएँ कहो न भाई।
कुधर्मभक्त अनायतन हर लें, दर्शनविशुद्धि सम्यक् कर लें॥
ॐ ह्रीं श्री कुधर्मभक्त-अनायतनरहित दर्शनविशुद्धि-भावनायै अर्घ्यं...॥ २०॥

अस्त्र शस्त्र तिय पुत्र वस्त्र को, रखकर कैसे गुरु पवित्र हो।
यही कुगुरु अनायतन हर लें, दर्शनविशुद्धि सम्यक् कर लें॥
ॐ ह्रीं श्री कुगुरु-अनायतनरहित दर्शनविशुद्धि-भावनायै अर्घ्यं...॥ २१॥

कुगुरुओं के सेवक जन की, करें प्रशंसा पाप व्यसन की।
कुगुरु भक्त अनायतन हर लें, दर्शनविशुद्धि सम्यक् कर लें॥
ॐ ह्रीं श्री कुगुरुभक्त-अनायतनरहित दर्शनविशुद्धि-भावनायै अर्घ्यं...॥ २२॥

तीन मूढ़ता

अग्नि-गमन गिरिगिर नदि-न्ह्वना, ढेर बालू पत्थर के करना।
लोकमूढ़ता हम यह हर लें, दर्शनविशुद्धि सम्यक् कर लें॥
ॐ ह्रीं श्री लोकमूढ़तारहित दर्शनविशुद्धि-भावनायै अर्घ्यं...॥ २३॥

भव सुख का वरदान चाहना, रागी द्वेषी देव पूजना।
देव-मूढ़ता हम यह हर लें, दर्शनविशुद्धि सम्यक् कर लें॥
ॐ ह्रीं श्री देवमूढ़तारहित दर्शनविशुद्धि-भावनायै अर्घ्यं...॥ २४॥

हिंसारम्भ परिग्रह वाले, पाखण्डी गुरु भजने वाले।
गुरु-मूढ़ता हम यह हर लें, दर्शनविशुद्धि सम्यक् कर लें॥
ॐ ह्रीं श्री गुरुमूढ़तारहित दर्शनविशुद्धि-भावनायै अर्घ्यं...॥ २५॥

सप्त व्यसन (दोहा)

यहाँ महाभारत हुआ, जुआ खेलकर खेल।
जुआ व्यसन को त्यागकर, कटे कर्म की जेल॥
ॐ ह्रीं श्री जुआव्यसनरहित दर्शनविशुद्धि-भावनायै अर्घ्यं...॥ २६॥

जिसे मांस खाना रुचे, राजा बक सा होय।
मांस व्यसन को त्यागकर, स्वस्थ सुखी जग होय॥

ॐ ह्रीं श्री मांसव्यसनरहित दर्शनविशुद्धि-भावनायै अर्घ्यं...॥ २७॥

क्या फल मदिरा मद्य के, सुनो द्वारिका बोल।
मद्य व्यसन को त्याग कर, जीवन हो अनमोल॥

ॐ ह्रीं श्री मद्यव्यसनरहित दर्शनविशुद्धि-भावनायै अर्घ्यं...॥ २८॥

गणिका नारी झूठ सम, त्यागें सज्जन लोग।
त्याग व्यसन वेश्या रमण, करें चेतना भोग॥

ॐ ह्रीं श्री वेश्यारणव्यसनरहित दर्शनविशुद्धि-भावनायै अर्घ्यं...॥ २९॥

दुखी मनोरंजन करें, हिंसक जीव शिकार।
त्याग व्यसन आखेट का, सुखी रहे संसार॥

ॐ ह्रीं श्री शिकारव्यसनरहित दर्शनविशुद्धि-भावनायै अर्घ्यं...॥ ३०॥

वस्तु चुराकर अन्य की, भरें स्वयं का कोष।
चौर्य व्यसन यह त्याग कर, रखें धैर्य संतोष॥

ॐ ह्रीं श्री चौर्यव्यसनरहित दर्शनविशुद्धि-भावनायै अर्घ्यं...॥ ३१॥

माँ बहना पुत्री समझ, परनारी को त्याग।
पर रमणी का व्यसन तज, धारो सब वैराग्य॥

ॐ ह्रीं श्री परस्त्रीरणव्यसनरहित दर्शनविशुद्धि-भावनायै अर्घ्यं...॥ ३२॥

श्रावक के अष्ट मूलगुण (विद्योदय)

मद्यपान से बुद्धि नष्ट हो, नशा चढ़ेगा।
वृत्ति प्रवृत्ति दोनों बिगड़ें, घर उजड़ेगा॥
अतः मद्य का त्याग करो रे, लाज बचेगी।
दर्शनविशुद्धि तीर्थंकर के, योग्य बनेगी॥

ॐ ह्रीं श्री मद्यत्याग-मूलगुणसहित दर्शनविशुद्धि-भावनायै अर्घ्यं...॥ ३३॥

जीवन दान न कर सकते तो, प्रण यह लेना।
जीभ स्वाद वश हो जीवों के, प्राण न लेना॥
अतः मांस का त्याग करो रे, राह दिखेगी।
दर्शनविशुद्धि तीर्थंकर के, योग्य बनेगी॥

ॐ ह्रीं श्री मांसत्याग-मूलगुणसहित दर्शनविशुद्धि-भावनायै अर्घ्यं...॥ ३४॥

एक बूंद भी भक्षण का यह, पाप मानिए।
सात ग्राम के दग्ध योग्य वह, शहद जानिए॥
अतः शहद का त्याग करो रे, शान बढ़ेगी।

दर्शनविशुद्ध तीर्थंकर के, योग्य बनेगी॥

ॐ ह्रीं श्री मधुत्याग-मूलगुणसहित दर्शनविशुद्धि-भावनायै अर्घ्यं...॥ ३५॥

बरगद पीपल पाकर ऊमर, और कठूमर।
त्रस हिंसा हो पंच उदम्बर, फल भक्षण कर॥
पंच उदम्बर फल को त्यागो, सृष्टि सजेगी।
दर्शनविशुद्धि तीर्थंकर के, योग्य बनेगी॥

ॐ ह्रीं श्री पंचउदम्बरफलत्याग-मूलगुणसहित दर्शनविशुद्धि-भावनायै अर्घ्यं...॥ ३६॥

बिना छना जल अगर पिया तो, हिंसा होगी।
जल का संरक्षण हम करके, बनें निरोगी॥
जल गालन का पालन कर, हर बात बनेगी।
दर्शनविशुद्ध तीर्थंकर के, योग्य बनेगी॥

ॐ ह्रीं श्री जलगालन-मूलगुणसहित दर्शनविशुद्धि-भावनायै अर्घ्यं...॥ ३७॥

त्रस हिंसा का पाप, रात्रि भोजन में लगता।
धर्म-कर्म में दोष स्वास्थ्य को, झटका लगता॥
अतः रात्रि भोजन को त्यागो, जान बचेगी।
दर्शनविशुद्धि तीर्थंकर के, योग्य बनेगी॥

ॐ ह्रीं श्री रात्रिभोजनत्याग-मूलगुणसहित दर्शनविशुद्धि-भावनायै अर्घ्यं...॥ ३८॥

पूज्य पंचपरमेष्ठी प्रभु को, सदा भजो रे।
अ सि आ ई सा नमो नमः के, जाप जपो रे॥
णमोकार पर श्रद्धा करके, भक्ति बढ़ेगी।
दर्शनविशुद्धि तीर्थंकर के, योग्य बनेगी॥

ॐ ह्रीं श्री नित्यदेवदर्शन-मूलगुणसहित दर्शनविशुद्धि-भावनायै अर्घ्यं...॥ ३९॥

जीव मात्र से प्रेम दया के, भाव बनाना।
धर्मात्मा होने के अपने, चिन्ह दिखाना॥
जियो और जीने दो ऐसी, दया दिखेगी।
दर्शनविशुद्धि तीर्थंकर के, योग्य बनेगी॥

ॐ ह्रीं श्री दयाभाव-मूलगुणसहित दर्शनविशुद्धि-भावनायै अर्घ्यं...॥ ४०॥

पूर्णार्घ्य (हरिगीतिका)

मिथ्यात्व तज सम्यक्त्व सज, कल्याण चाहें लोक का।
तज दोष पच्चीसों व्यसन भी, काम क्या फिर शोक का॥

दर्शनविशुद्धि भावना से, पद मिले तीर्थंकरा।
'सुव्रत' नमोऽस्तु कर चढ़ाएँ, अर्घ्य भावों से भरा॥

(दोहा)

दर्शनविशुद्धि योग्य ये, अर्घ्य चढ़ा चालीस।
चढ़ा रहे पूर्णार्घ्य भी, कर नमोऽस्तु नत शीश॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि-भावनायै पूर्णार्घ्यं...।

जाप्य :— ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि-भावनायै नमः।

जयमाला

(दोहा)

मंगल मंगल प्रार्थना, करे विश्व कल्याण।
दर्शनविशुद्धि भावना, तीर्थंकर के प्राण॥

(जोगीरासा)

अनादि काल से जीव भटकते, अपने कर्मों द्वारा।
स्वयं किए जो कर्म शुभाशुभ, फल भोगे संसारा॥
कर्म रहित है मोक्ष अवस्था, कर्म सहित संसारी।
अगर चाहिए कर्म मुक्ति तो, काटो कर्म कटारी॥१॥
शुभ भावों से ओतप्रोत हो, मिथ्या दर्शन छोड़ो।
जिनशासन के बन अनुयायी, भाव भंगिमा मोड़ो॥
सम्यग्दर्शन पाने अपनी, श्रद्धा शुद्ध बनाओ।
पूज्य भावना सोलह भाकर, तीर्थंकर पद पाओ॥२॥
प्रथम भावना दर्शनविशुद्धि, आवश्यक है पहले।
इस बिन अन्य भावनाओं का, मूल्य न कुछ भी निकले॥
सो अरिहंत कथित शिव पथ का, जो निर्ग्रंथ स्वरूपा।
उसकी रुचि है दर्शनविशुद्धि, दे तीर्थंकर रूपा॥३॥
यह वात्सल्य भाव ही अपना, शुभ कल्याण कराए।
माता शिशु के आँचल जैसा, श्वेत रक्त झलकाए॥
गर्व जन्म तप ज्ञान मोक्ष के, कल्याण हो पाँचो।
दर्शनविशुद्धि की बलिहारी, मोक्षमहल में नाचो॥४॥
अतः मोह भय राग-द्वेष दुख, ईर्ष्या शोक कषायें।

ये दुर्भाव त्यागने हम भी, धार्मिक भाव बनायें॥
तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥५॥

(दोहा)

यही प्रार्थना ईश से, सुखी रहे संसार।
कर नमोऽस्तु यह भावना, 'सुव्रत' करें विचार॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि-भावनायै अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

दर्शनविशुद्धि नित करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, दर्शनविशुद्धि भाय॥

(पुष्पांजलिं...)

२. विनयसम्पन्नता भावना-पूजन

स्थापना (शंभु)

निर्ग्रंथ रूप नवदेवों के, श्रुत ज्ञान आदि रतनत्रय के।
सम्मान विनय मन से करके, झट द्वार खुलें सिद्धालय के॥
ये विनयसम्पन्न भावनाएँ, प्रभु तीर्थंकर पद दान करें।
सो करके नमोऽस्तु हम पूजें, मन मंदिर में आह्वान करें॥

ॐ ह्रीं श्री विनयसम्पन्नता भावना अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(हरिगीतिका)

हम मान के ही साथ जन्मे, मान जीवन भर करें।
फिर कंस रावण कौरवों सम, मान करके लड़ मरें॥
यह जन्म मृत्यु मान का जल, हे! प्रभु शोषण करें।
निर्मल विनयसम्पन्नता जल, भक्त पर सिंचन करें॥

ॐ ह्रीं श्री विनयसम्पन्नता-भावनायै जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

अभिमान कर क्रोधाग्नि के, संताप से संतप्त हैं।
मानी हिमालय पर डटे पर, हो सके ना तृप्त हैं॥

यह मान का संताप हरने, छाँव कुंदन सी करें।
शीतल विनयसम्पन्नता से, चेतना चंदन करें॥

ॐ ह्रीं श्री विनयसम्पन्नता-भावनायै संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

इस मान की आपूर्ति को हम, भूल बैठे धर्म को।
कितने किए भव चक्र कितने, सह चुके दुख कर्म को॥
यह मान का चक्कर मिटाने, पुंज पथ मंगल करें।
अक्षय विनयसम्पन्नता से, चेतना उज्जवल करें॥

ॐ ह्रीं श्री विनयसम्पन्नता-भावनायै अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

इस मान के बागान में तो, काम के काँटे खिलें।
जो रात दिन चुभते रहे दुख, दर्द के आँसू मिलें॥
अब ब्रह्म का उद्यान महके, पुष्प वह सुरभित करें।
सम्यक् विनयसम्पन्नता की, निज गली विकसित करें॥

ॐ ह्रीं श्री विनयसम्पन्नता-भावनायै कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

अभिमान के पकवान खाकर, हुई विषैली आतमा।
यह जहर हर ओर फैला, क्या करें परमातमा॥
सद्ज्ञान के नैवेद्य से विष, मान का निर्विष करें।
अमृत विनयसम्पन्नता का, दान अब हमको करें॥

ॐ ह्रीं श्री विनयसम्पन्नता-भावनायै क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

अभिमान के जंजाल में, संसार सारा फँस रहा।
कुछ भी दिखे ना सामने, अध्यात्म हम पर हँस रहा॥
इस मान का पर्दा हटाने, ज्ञान को रोशन करें।
ज्योति विनयसम्पन्नता की, प्रगट अंतर में करें॥

ॐ ह्रीं श्री विनयसम्पन्नता-भावनायै मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

अभिमान के ऊँचे शिखर से, नर्क में मानी गिरें।
दुर्गंध की पा वेदनाएँ, गर्त में प्राणी गिरें॥
इस मान का गिरिवर गलाने, धूप संयम की करें।
सुरभित विनयसम्पन्नता की, धूप निज घट में भरें॥

ॐ ह्रीं श्री विनयसम्पन्नता-भावनायै अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

अभिमान को बोकर मिलेंगे, बीज फल अभिमान के।
अर्हम फसल कैसे मिलेगी, इस अहं खलियान से॥

इस मान के फल भस्म करने, ध्यान की ज्वाला करें।
मंगल विनयसम्पन्नता का, भक्ति फल हम में भरें॥

ॐ ह्रीं श्री विनयसम्पन्नता-भावनायै मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

अभिमान को सम्मान दो, सम्मान पत्र प्रमाण दो।
ऐसा न संभव हो सके तो, प्राण लो या प्राण दो॥
इस मान का संग्राम हरने, अर्घ्य से अर्चन करें।
उत्तम विनयसम्पन्नता से, धर्म पथ मार्दव करें॥

ॐ ह्रीं श्री विनयसम्पन्नता-भावनायै अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अर्घ्यावली (विष्णु)

स्वार्थ सिद्ध को त्याग मोक्ष के, योग्य ज्ञान करना।
पूर्ण व्यवस्थित करके सादर, ग्रंथों को पढ़ना॥
श्रुत अभ्यास याद भी रखना, यह है ज्ञान विनय।
करें विनय सम्पन्न भावना, तीर्थंकर की जय॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानविनयभावनायै अर्घ्यं...॥ १॥

शंकादिक हर दोष बिना ही, जिन तत्त्वार्थों की।
सम्यक् श्रद्धा साध्य सिद्धि दे, निज परमार्थों की॥
धैर्य धारकर श्रद्धा रखना, ये हैं दर्शन विनय।
करें विनय सम्पन्न भावना, तीर्थंकर की जय॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविनयभावनायै अर्घ्यं...॥ २॥

सम्यग्दृष्टि ज्ञान प्राप्त कर, क्रिया पवित्र करें।
क्रिया बिना क्या मूल ज्ञान का, सो चारित्र धरें॥
परम धर्म चारित्र धारना, है चारित्र विनय।
करें विनय सम्पन्न भावना, तीर्थंकर की जय॥

ॐ ह्रीं श्री चारित्रविनयभावनायै अर्घ्यं...॥ ३॥

गुरु आचार्य आदि आने पर, उठ कर विनय करें।
परोक्ष में भी आज्ञा पालें, गुरु गुण हृदय धरें॥
नमस्कार त्रियोग से करना, यह उपचार विनय।
करें विनयसम्पन्न भावना, तीर्थंकर की जय॥

ॐ ह्रीं श्री उपचारविनयभावनायै अर्घ्यं...॥ ४॥

पूर्णार्घ्य (हरिगीतिका)

कर ज्ञान दर्शन की विनय, चारित्र की उपचार की।
सो शीघ्र कुंजी प्राप्त होगी, मोक्षपुर के द्वार की॥
इस विनयसम्पन्नता से, पद मिले तीर्थंकरा।
'सुव्रत' नमोऽस्तु कर चढ़ाएँ, अर्घ्य भावों से भरा॥

ॐ ह्रीं श्री विनयसम्पन्नता-भावनायै पूर्णार्घ्यं...।

जाप्य :— ॐ ह्रीं श्री विनयसम्पन्नता-भावनायै नमः।

जयमाला

(दोहा)

विनय महातप रूप है, विनय धर्म का सार।
विनय बिना कैसे खुले, मोक्षमहल का द्वार॥

(ज्ञानोदय)

संसारी जो जीव अनंतों, सभी कर्म से बँधे हुए।
सभी अशुद्ध विभाव दशा की, दुख दलदल में फँसे हुए॥
किंतु जिन्हें निज मोक्ष चाहिए, वे तत्त्वार्थ मनन करते।
कर्मास्रव का निरोध करके, संवर तत्त्व हृदय धरते॥१॥
संवर और निर्जरा का जो, रहा विशेष हेतु प्यारा।
बारह प्रकार का सम्यक् तप, जिसने आतम शृंगारा॥
अनशन आदिक बाह्य तपों छह, आभ्यान्तर तप भी छह हैं।
जिनमें विनय महातप माना, जिससे कर्म हुए क्षय हैं॥२॥
परम पूज्य पुरुषों के आदर, विनय चार विध की करना।
सभी तपों का यही महातप, आत्म तत्त्व का है गहना॥
सभी धर्म का मूल धर्म यह, तप चारित्र खजाना है।
विनय बिना कुछ काम बने ना, अतः विनय अपनाना है॥३॥
सोलहकारण पूज्य भावना, इसमें विनय भावना को।
मुख्य रूप से गिना गया है, अपनी मोक्ष साधना को॥
तीर्थंकर का जगत पूज्य पद, विनय बिना तो मिल न सके।
कर्म दोष का ऊँचा पर्वत, विनय बिना तो हिल न सके॥४॥
धर्म साधना आत्म भावना, भक्त प्रार्थना की धारा।
विनय बिना तो बह न सकेगी, जिनशासन की मुनि धारा॥

अतः विनयसम्पन्न भावना, भाना ही सर्वोत्तम है।
तीर्थंकर बनने को 'सुव्रत', विनय भावना उत्तम है॥५॥

ॐ ह्रीं श्री विनयसम्पन्नता-भावनायै अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

विनयभावना नित करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, विनयभावना भाय॥

(पुष्पांजलिं...)

३. शीलव्रतेष्वनतिचार भावना-पूजन

स्थापना (शंभु)

जिन धर्म अहिंसा सत्य आदि, व्रत पालन में जो बाधक हैं।
उन क्रोध आदि का त्याग करण, ये शील धर्म शिव साधक हैं॥
ये शीलव्रतों की भावनाएँ, प्रभु तीर्थंकर पद दान करें।
सो करके नमोऽस्तु हम पूजें, मन मंदिर में आह्वान करें॥

ॐ ह्रीं श्री शीलव्रतेष्वनतिचार भावना अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

यह जन्म मरण की बाधा, सबको दुख दे कुछ ज्यादा।
सो नीर चढ़ा सुख खोजें, निर्दोष शीलव्रत पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री शीलव्रतेष्वनतिचार-भावनायै जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

व्रत शील रहित जो तपते, कब उनके निज घर वसते।
सो कुंदन चंदन खोजें, निर्दोष शीलव्रत पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री शीलव्रतेष्वनतिचार-भावनायै संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

क्षत-विक्षत यात्रा पाई, सो भव-भव ठोकर खायी।
निज कुंज पुंज से खोजें, निर्दोष शीलव्रत पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री शीलव्रतेष्वनतिचार-भावनायै अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

दुर्भाव काम के पाए, हम लाज गवाँ पछताए।
सो बह्म भाव अब खोजें, निर्दोष शीलव्रत पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री शीलव्रतेष्वनतिचार-भावनायै कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

जो चखें भोग की चटनी, उनकी चटनी नित बटनी।
सो ज्ञान भोग हम खोजें, निर्दोष शीलव्रत पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री शीलव्रतेष्वनतिचार-भावनायै क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

अंधे हो पाप व्यसन में, कब दीप जले जीवन में।
सो धर्म दीप हम खोजें, निर्दोष शीलव्रत पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री शीलव्रतेष्वनतिचार-भावनायै मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

है कर्म महा बलशाली, सो जीव करें हम्माली।
शुद्धात्म धूप हम खोजें, निर्दोष शीलव्रत पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री शीलव्रतेष्वनतिचार-भावनायै अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

जो बोते वो फल होते, कब आम नीम से होते।
हम सरस भक्ति फल खोजें, निर्दोष शीलव्रत पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री शीलव्रतेष्वनतिचार-भावनायै मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

दुख दर्द भले आ जाएँ, व्रत शील न डिगने पाएँ।
यों साहस मानस खोजें, निर्दोष शीलव्रत पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री शीलव्रतेष्वनतिचार-भावनायै अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अर्घ्यावली

(सखी)

व्रत शील भाव नव बाड़ी, जो निज पर को कल्याणी।
सो शील बाड़ से सज लें, ले अर्घ्य शीलव्रत भज लें॥

ॐ ह्रीं श्री नवबाड़सहित शीलव्रतेष्वनतिचार-भावनायै अर्घ्यं...॥ १॥

नारी तन देख सरागी, क्या धर्म पले वैरागी।
सो अवलोकन यह तज लें, ले अर्घ्य शीलव्रत भज लें॥

ॐ ह्रीं श्री रागसहितस्त्रीतनावलोकनत्याग-शीलबाड़सहित शीलव्रतेष्वनतिचार-भावनायै अर्घ्यं...॥ २॥

जो वाणी राग बढ़ाए, वो संयम शील नशाए।
सो राग वचन हम तज लें, ले अर्घ्य शीलव्रत भज लें॥

ॐ ह्रीं श्री रागचवनरहित शीलव्रतेष्वनतिचार-भावनायै अर्घ्यं...॥ ३॥

जो भोग पूर्व में भोगे, वो सोच धर्म खो दोगे।
सो पूर्व भोग हम तज लें, ले अर्घ्य शीलव्रत भज लें॥

ॐ ह्रीं श्री पूर्वभोगचिंतारहित शीलव्रतेष्वनतिचार-भावनायै अर्घ्यं...॥ ४॥

यदि भोजन इष्ट गरिष्टा, तो क्या हो सम्यक् चेष्टा।
सो यह भोजन हम तज लें, ले अर्घ्य शीलव्रत भज लें॥

ॐ ह्रीं श्री गरिष्टभोजनरहित शीलव्रतेष्वनतिचार-भावनायै अर्घ्यं...॥ ५॥

जो तन शृंगार सजाएँ, वो निज व्रत शील भुलाएँ।
सो तन सजना हम तज लें, ले अर्घ्य शीलव्रत भज लें॥

ॐ ह्रीं श्री तनशृंगाररहित शीलव्रतेष्वनतिचार-भावनायै अर्घ्यं...॥ ६॥

नारी निस्तार जहाँ पर, सो वहाँ न जाए व्रती नर।
नारी शय्यासन तज लें, ले अर्घ्य शीलव्रत भज लें॥

ॐ ह्रीं श्री स्त्रीशय्यासनरहित शीलव्रतेष्वनतिचार-भावनायै अर्घ्यं...॥ ७॥

सुख काम कथा ना देती, दे पाप फलों की खेती।
सो पाप कथा हम तज लें, ले अर्घ्य शीलव्रत भज लें॥।

ॐ ह्रीं श्री कामकथारहित शीलव्रतेष्वनतिचार-भावनायै अर्घ्यं...॥ ८॥

भर पेट करें जो भोजन, व्रत शील करें वह खण्डन।
सो पूर्णोदर हम तज लें, ले अर्घ्य शीलव्रत भज लें॥

ॐ ह्रीं श्री पूर्णोदरभोजनरहित शीलव्रतेष्वनतिचार-भावनायै अर्घ्यं...॥ ९॥

यदि करें काम की इच्छा, तो खंडित हो व्रत दीक्षा।
सो काम कामना तज लें, ले अर्घ्य शीलव्रत भज लें॥

ॐ ह्रीं श्री कामेच्छारहित शीलव्रतेष्वनतिचार-भावनायै अर्घ्यं...॥ १०॥

यदि काम बाण दे पीड़ा, तो भस्म हुआ व्रत हीरा।
सो कामबाण दुख तज लें, ले अर्घ्य शीलव्रत भज लें॥

ॐ ह्रीं श्री संतापकामबाणरहित शीलव्रतेष्वनतिचार-भावनायै अर्घ्यं...॥ ११॥

जब मन में काम सताये, व्रत शील कहाँ फिर भाये।
सो यह उच्चाटन तज लें, ले अर्घ्य शीलव्रत भज लें॥

ॐ ह्रीं श्री उच्चाटनकामबाणरहित शीलव्रतेष्वनतिचार-भावनायै अर्घ्यं...॥ १२॥

जो हुए काम के वश में, वो हुए कलंकित यश में।
ये वशीकरण हम तज लें, ले अर्घ्य शीलव्रत भज लें॥

ॐ ह्रीं श्री वशीकरणकामबाणरहित शीलव्रतेष्वनतिचार-भावनायै अर्घ्यं...॥ १३॥

जो करें काम सम्मोहन, वो कर न सके व्रत शोधन।
यह सम्मोहन हम तज लें, ले अर्घ्य शीलव्रत भज लें॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मोहनकामबाणरहित शीलव्रतेष्वनतिचार-भावनायै अर्घ्यं...॥ १४॥

ये पाँच काम के तीरा, जय करें व्रती अतिवीरा।
सो पाँच काम यह तज लें, ये अर्घ्य शीलव्रत भज लें॥

ॐ ह्रीं श्री पाँचकामबाणरहित शीलव्रतेष्वनतिचार-भावनायै अर्घ्यं...॥ १५॥

(चौपाई)

काम भाग में उत्सुक रहना, देख पुरुष नारी को हँसना।
ये उत्सुकता शील नशायें, सो ये त्यागें अर्घ्य चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री कामौत्सुक्यहास्य-कामबाणरहित शीलबाढ़सहित शीलव्रतेष्वनतिचार-भावनायै अर्घ्यं...॥ १६॥

नारी नर, नर नारी देखें, तो व्रत शील पलेंगे कैसे।
ये अवलोकन शील नशायें, सो ये त्यागें अर्घ्य चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री अवलोकन-कामबाणरहित शीलबाढ़सहित शीलव्रतेष्वनतिचार-भावनायै अर्घ्यं...॥ १७॥

देख-देख नर नार हसेंगे, तो धर्मी के धर्म लजेंगें।
काम हास्य व्रत शील नशायें, सो यह त्यागें अर्घ्य चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री हास्य-कामबाणरहित शीलबाढ़सहित शीलव्रतेष्वनतिचार-भावनायै अर्घ्यं...॥ १८॥

नयन विलास करें यदि कामी, तो व्रत शील नशें आगामी।
दृग संचालक शील नशायें, सो ये त्यागें अर्घ्य चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री नेत्रसंचालन-कामबाणरहित शीलबाढ़सहित शीलव्रतेष्वनतिचार-भावनायै अर्घ्यं...॥ १९॥

कामुक मंद मधुर मुस्कायें, तो नर नारी शील लजाएँ।
मंद हास्य व्रत शील नशायें, सो ये त्यागें अर्घ्य चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री मंदहास्य-कामबाणरहित शीलबाढ़सहित शीलव्रतेष्वनतिचार-भावनायै अर्घ्यं...॥२०॥

काम भाव जब व्यथित करेंगे, तो कामी कुछ भेंट करेंगे।
कामुक आदर शील नशायें, सो ये त्यागें अर्घ्य चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री स्त्रीसत्कार-दोषरहित शीलबाढ़सहित शीलव्रतेष्वनतिचार-भावनायै अर्घ्यं...॥ २१॥

अगर मिलें कामी नर-नारी, तो कैसे रहें ब्रह्मचारी।
काम-मेल व्रत शील नशायें, सो यह त्यागें अर्घ्य चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री स्त्रीमिलाप-कामबाणरहित शीलबाढ़सहित शीलव्रतेष्वनतिचार-भावनायै अर्घ्यं...॥२२॥

मन-वच-तन से काम विचारें, शक्ति हनन कर स्वास्थ्य बिगाड़ें।
वीर्यपात व्रत शील नशायें, सो ये त्यागें अर्घ्य चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री वीर्यपात-अतिचाररहित शीलबाढ़सहित शीलव्रतेष्वनतिचार-भावनायै अर्घ्यं...॥२३॥

पूर्णार्घ्य (हरिगीतिका)

निर्दोष अपने शीलव्रत का, पालना सौभाग्य दे।
जग में यही यशवान करके, शांति दे वैराग्य दे॥
व्रत शील की यह भावना से, पद मिले तीर्थंकरा।
'सुव्रत' नमोऽस्तु कर चढ़ाएँ, अर्घ्य भावों से भरा॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वदोषरहित शीलव्रतेष्वनतिचार-भावनायै पूर्णार्घ्यं...।

जाप्य :— ॐ ह्रीं श्री शीलव्रतेष्वनतिचार-भावनायै नमः।

जयमाला

(दोहा)

शीलव्रतों की भावना, सकल धर्म शृंगार।
तीर्थंकर पद दे यही, सुखी करे संसार॥

(ज्ञानोदय)

तीन लोक में तीन काल में, धर्म कलश चारित्र रहा।
हिंसा झूठ कुशील परिग्रह, तथा चौर्य परित्याज्य जहाँ॥
धर्म अहिंसा सत्य आदि का, पालन व्रत कहलाता है।
क्रोध आदि हर दोष त्याग कर, यही शील बन जाता है॥१॥
शीलव्रतादिक के पालन में, जो निर्दोष क्रिया रखना।
शीलव्रतानतिचार यही है, इसको सदा याद रखना॥
शील और व्रत के आपस में, कुछ ऐसे संबंध रहे।
एक अंक के तुल्य शील है, शून्य तुल्य व्रत अन्य रहे॥२॥
अतः शील बिन व्रत पालन का, मूल्य नहीं कुछ होगा रे।
लेकिन शील सहित व्रत पालन, मूल्यवान ही होगा रे॥
अतः अठारह हजार शील के, अतिचारों का त्याग करें।
यही भावना भाकर हम भी, तीर्थंकर अनुराग करें॥३॥
स्वर्ग लोक भी शील पूजकर, शीलवान के गुण गाता।
सिंहासन कमलासन देकर, यशगाथा का यश गाता॥
अतः भला गिरि से गिरना है, नाग पकड़ना रहा भला।
भला आग से जलना लेकिन, दाग शील का नहीं भला॥४॥
रण में प्रण की रक्षा करने, निज प्राणों के दाव लगें।

शीलव्रतों के पालन में यों, निज प्राणों का राग तजें॥
शील स्वभाव हमारे प्रकटें, तीर्थंकर सम हम होवें।
'विद्या' के 'सुव्रतसागर' के, सब सुव्रत सु-व्रत होवें॥५॥

ॐ ह्रीं श्री शीलव्रतेष्वनतिचार-भावनायै अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

भाव शीलव्रत नित करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, भाव शीलव्रत भाय॥

(पुष्पांजलिं...)

४. अभीष्णज्ञानोपयोग भावना-पूजन

स्थापना (शंभु)

जो जीव तत्त्व आदिक समझे, फिर निज पर का सद्ज्ञान करे।
वो पूजित सम्यग्ज्ञान उसी का, नित करना अभ्यास अरे॥
ये अभीष्ण ज्ञान भावनाएँ, प्रभु तीर्थंकर पद दान करें।
सो करके नमोऽस्तु हम पूजें, मन मंदिर में आह्वान करें॥

ॐ ह्रीं श्री अभीष्णज्ञानोपयोग भावना अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(लय—चौबीसी वत्)

जब तक है मिथ्याज्ञान, जन्म मरण होवें।
सो दुख से हो हैरान, भव-भव में रोवें॥
दो नैया सम्यग्ज्ञान, भव जल तैर सकें।
कर ज्ञान भावना ध्यान, प्रभु पद पूज भजें॥

ॐ ह्रीं श्री अभीक्ष्णज्ञानोपयोग-भावनायै जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

बिन ज्ञान मिले संताप, आकुल व्याकुल हों।
सो होते सारे पाप, कब हम शीतल हों॥
दो चंदन सा निज ज्ञान, भव का ताप हरें।
कर ज्ञान भावना ध्यान, प्रभु पद पूज भजें॥

ॐ ह्रीं श्री अभीक्ष्णज्ञानोपयोग-भावनायै संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

हो स्वच्छंद कोरा ज्ञान, खोदे पाप कुआँ।
जब संयम लगे लगाम, तब जग पूज्य हुआ॥
दो अक्षय केवलज्ञान, भव का भ्रमण हरें।
कर ज्ञान भावना ध्यान, प्रभु पद पूज भजें॥

ॐ ह्रीं श्री अभीक्ष्णज्ञानोपयोग-भावनायै अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

जब धर्म बाग लहराए, श्रद्धा कली खिले।
जो ज्ञान पुष्प महकाए, आतम गंध मिले॥
दो सम्यक पुष्प महान, कामुक कीट हरें।
कर ज्ञान भावना ध्यान, प्रभु पद पूज भजें॥

ॐ ह्रीं श्री अभीक्ष्णज्ञानोपयोग-भावनायै कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

जो करें ज्ञान के भोग, आतम तृप्त करें।
वो हरें विश्व के रोग, सब को स्वस्थ करें॥
दो ज्ञानामृत रसपान, हम भी क्षुधा हरें।
कर ज्ञान भावना ध्यान, प्रभु पद पूज भजें॥

ॐ ह्रीं श्री अभीक्ष्णज्ञानोपयोग-भावनायै क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

हो जहाँ मोह अंधयार, हो अज्ञान वहाँ।
हो जहाँ ज्ञान उजियार, हो कल्याण वहाँ॥
दो ज्ञानदीप भगवान, हम मोहान्ध हरें।
कर ज्ञान भावना ध्यान, प्रभु पद पूज भजें॥

ॐ ह्रीं श्री अभीक्ष्णज्ञानोपयोग-भावनायै मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

यदि कर्म हुए बलवान, तो ना कर्म कटें।
यदि आतम है बलवान, तो फिर कर्म कटें॥
पा यही भेद विज्ञान, हम भी कर्म हरें।
कर ज्ञान भावना ध्यान, प्रभु पद पूज भजें॥

ॐ ह्रीं श्री अभीक्ष्णज्ञानोपयोग-भावनायै अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

जो जैसे करते कर्म, वैसे फल पाते।
बो करके कड़बी नींम, आम कहाँ आते॥
फल मिले मोक्ष का धाम, ऐसे भाव करें।
कर ज्ञान भावना ध्यान, प्रभु पद पूज भजें॥

ॐ ह्रीं श्री अभीक्ष्णज्ञानोपयोग-भावनायै मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हैं अशुभ भाव संसार, सबको दुखी करें।
शुभ शुद्ध मोक्ष के द्वार, आतम सुखी करें॥
तज अशुभ करें शुभ ज्ञान, सो यह अर्घ्य धरें।
कर ज्ञान भावना ध्यान, प्रभु पद पूज भजें॥

ॐ ह्रीं श्री अभीक्ष्णज्ञानोपयोग-भावनायै अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अर्घ्यावली(अडिल्ल)

इंद्रिय मन से होता सम्यग्ज्ञान जो।
तीन शतक छत्तीस रूप मतिज्ञान वो॥
दोष रहित मतिज्ञान भावना हम भजें।
अर्घ्य चढ़ा तीर्थंकर पदवी से सजें॥

ॐ ह्रीं श्री मतिज्ञानोपयोग-भावनायै अर्घ्यं...॥ १॥

सुमतिज्ञान पूर्वक जो सम्यग्ज्ञान हो।
दो अनेक बारह विध का श्रुतज्ञान वो॥
आठ निमित्त श्रुतज्ञान भावना हम भजें।
अर्घ्य चढ़ा तीर्थंकर पदवी से सजें॥

ॐ ह्रीं श्री श्रुतज्ञानोपयोग-भावनायै अर्घ्यं...॥ २॥

अंग बाह्य रू अंग प्रविष्ट दो भेद हैं।
अंग बाह्य के तो अनेक श्रुत भेद हैं॥
अनादिनिधन श्रुतज्ञान भावना हम भजें।
अर्घ्य चढ़ा तीर्थंकर पदवी से सजें॥

ॐ ह्रीं श्री अंगबाह्यनिमित्तश्रुतज्ञानोपयोग-भावनायै अर्घ्यं...॥ ३॥

अंग प्रविष्ट के आचारादि नाम जो।
द्वादशांग जिनवाणी है श्रुतज्ञान वो॥
परोक्ष प्रमाण ज्ञान भावना हम भजें।
अर्घ्य चढ़ा तीर्थंकर पदवी से सजें॥

ॐ ह्रीं श्री अंगप्रविष्टश्रुतज्ञानोपयोग-भावनायै अर्घ्यं...॥ ४॥

नभ में सूरज चांद सितारे मेघ के।
चिन्ह शुभाशुभ निमित्त कहना देख के॥
अंतरिक्ष श्रुतज्ञान भावना हम भजें।

अर्घ्य चढ़ा तीर्थंकर पदवी से सजें॥

ॐ ह्रीं श्री अंतरिक्षनिमित्तश्रुतज्ञानोपयोग-भावनायै अर्घ्यं...॥ ५॥

सोना चांदी रत्न आदि भू धाम के।
देख शुभाशुभ निमित्त कहना जान के॥
भौम निमित्त श्रुतज्ञान भावना हम भजें।
अर्घ्य चढ़ा तीर्थंकर पदवी से सजें॥

ॐ ह्रीं श्री भौमनिमित्तश्रुतज्ञानोपयोग-भावनायै अर्घ्यं...॥ ६॥

रूप रंग आदिक मानव तिर्यंच के।
देख शुभाशुभ निमित्त कहना अंग के॥
अंग निमित्त श्रुतज्ञान भावना हम भजें।
अर्घ्य चढ़ा तीर्थंकर पदवी से सजें॥

ॐ ह्रीं श्री अंगनिमित्तश्रुतज्ञानोपयोग-भावनायै अर्घ्यं...॥ ७॥

सुन मानव तिर्यंच वचन श्रुतज्ञान से।
चिन्ह शुभाशुभ निमित्त कहना ध्यान से॥
स्वर निमित्त श्रुतज्ञान भावना हम भजें।
अर्घ्य चढ़ा तीर्थंकर पदवी से सजें॥

ॐ ह्रीं श्री स्वरनिमित्तश्रुतज्ञानोपयोग-भावनायै अर्घ्यं...॥ ८॥

तिल भौंरी लहसुन मसादि को जाँच के।
चिन्ह शुभाशुभ निमित्त कहना बाँच के॥
व्यंजन निमित्त श्रुतज्ञान भावना हम भजें।
अर्घ्य चढ़ा तीर्थंकर पदवी से सजें॥

ॐ ह्रीं श्री व्यंजननिमित्तश्रुतज्ञानोपयोग-भावनायै अर्घ्यं...॥ ९॥

शंख चक्र आदिक कर-लक्खण देख के।
चिन्ह शुभाशुभ निमित्त कहना लेख के॥
लक्षण निमित्त श्रुतज्ञान भावना हम भजें।
अर्घ्य चढ़ा तीर्थंकर पदवी से सजें॥

ॐ ह्रीं श्री लक्षणनिमित्तश्रुतज्ञानोपयोग-भावनायै अर्घ्यं...॥ १०॥

मूषकादि से वस्त्र आदि जब छिन्न हों।
देख शुभाशुभ निमित्त कहना चिन्ह हों॥

छिन्न निमित्त श्रुतज्ञान भावना हम भजें ।
अर्घ्य चढ़ा तीर्थंकर पदवी से सजें॥

ॐ ह्रीं श्री छिन्ननिमित्तश्रुतज्ञानोपयोग-भावनायै अर्घ्यं...॥ ११॥

निज पर के सपनों के फल क्या हों भला।
चिन्ह शुभाशुभ निमित्त कहना है कला॥
स्वप्न निमित्त श्रुतज्ञान भावना हम भजें।
अर्घ्य चढ़ा तीर्थंकर पदवी से सजें॥

ॐ ह्रीं श्री स्वप्ननिमित्तश्रुतज्ञानोपयोग-भावनायै अर्घ्यं...॥ १२॥

(चौपाई)

सीमित मूर्तिक वस्तु जानता, मिली देश प्रत्यक्ष मान्यता।
दो विध अवधिज्ञान भावना, अर्घ्य चढ़ा हम करें अर्चना॥

ॐ ह्रीं श्री अवधिज्ञानोपयोग-भावनायै अर्घ्यं...॥ १३॥

अवधिज्ञान है भव प्रत्यय जो, देव नारकी नहीं पूज्य वो।
सो सयंम की ज्ञान भावना, अर्घ्य चढ़ा हम करें अर्चना॥

ॐ ह्रीं श्री भवप्रत्यय-अवधिज्ञानोपयोग-भावनायै अर्घ्यं...॥ १४॥

क्षयोपशम के त्रय अवधिज्ञान तो, हुये शेष तिर्यंच मनुज को।
सो सयंम की ज्ञान भावना, अर्घ्य चढ़ा हम करें अर्चना॥

ॐ ह्रीं श्री क्षयोपशमप्रत्यय-अवधिज्ञानोपयोग-भावनायै अर्घ्यं...॥ १५॥

देशावधि तिर्यंच मनुज को, षट् विध हो पशु पूज्य नहीं हो।
सो सयंम की ज्ञान भावना, अर्घ्य चढ़ा हम करें अर्चना॥

ॐ ह्रीं श्री देशावधिज्ञानोपयोग-भावनायै अर्घ्यं...॥ १६॥

संयत नर परमावधि पाएँ, असंख्यात भव काल बतायें।
मिले मुक्ति की ज्ञान भावना, अर्घ्य चढ़ा हम करें अर्चना॥

ॐ ह्रीं श्री परमावधिज्ञानोपयोग-भावनायै अर्घ्यं...॥ १७॥

परमावधि से आगे जाएँ, संयत नर सर्वावधि पाएँ।
पाएँ आतम ज्ञान भावना, अर्घ्य चढ़ा हम करें अर्चना॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वावधिज्ञानोपयोग-भावनायै अर्घ्यं...॥ १८॥

निज पर मन के सरल विषय जो, जाने पर गिरना संभव हो।
पाएँ ऋजुमति ज्ञान भावना, अर्घ्य चढ़ा हम करें अर्चना॥

ॐ ह्रीं श्री ऋजुमतिमनःपर्ययज्ञानोपयोग-भावनायै अर्घ्यं...॥ १९॥

निज पर मन के कुटिल विषय जो, जाने पर प्रतिपात नहीं हो।
मिले विपुलमति ज्ञान भावना, अर्घ्य चढ़ा हम करें अर्चना॥

ॐ ह्रीं श्री विपुलमतिमनःपर्ययज्ञानोपयोग-भावनायै अर्घ्यं...॥ २०॥

जब ज्ञानावरणी सब नाशा, तब ही लोकालोक प्रकाशा।
पाएँ केवलज्ञान भावना, अर्घ्य चढ़ा हम करें अर्चना॥

ॐ ह्रीं श्री केवलज्ञानोपयोग-भावनायै अर्घ्यं...॥ २१॥

पूर्णार्घ्यं (हरिगीतिका)

है ज्ञान की महिमा जगत में, बात यह स्वीकार ले।
संयम बिना संसार दुख दे, धार संयम तार दे॥
शुभ ज्ञान की ये भावना से, पद मिले तीर्थंकरा।
'सुव्रत' नमोऽस्तु कर चढ़ाएँ, अर्घ्य भावों से भरा॥

ॐ ह्रीं श्री अभीक्ष्णज्ञानोपयोग-भावनायै पूर्णार्घ्यं...।

जाप्य :— ॐ ह्रीं श्री अभीक्ष्णज्ञानोपयोग-भावनायै नमः।

जयमाला (ज्ञानोदय)

तत्त्व द्रव्य पदार्थ आदि का, आतम हित के साधन में।
सम्यग्ज्ञान प्राप्त कर लगना, सदा जिनागम मंथन में॥
अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग भावना, इतनी तब तक कर डालें।
जब तक अपने शुद्धातम में, केवलज्ञान न प्रकटा लें॥१॥
जिनशासन में ज्ञान वही जो, राग हरे वैराग्य भरे।
श्रेयसपथ की रुचि बढ़ाये, मैत्री प्रशस्त राग करे॥
सो तीर्थंकर प्रकृति बंधेगी, पर्व पंचकल्याणक हों।
गर्भ जन्म तप ज्ञान मोक्ष के, भव्य जनों के साधक हों॥२॥
वाह! वाह! क्या गर्भ पर्व में, रत्नों की वर्षा होती।
दुख दरिद्र जग से नश जाते, जलने लगे धर्म ज्योति॥
धन्य! धन्य! हो जन्म पर्व में, तीन लोक में शांति हुई।
शचि का शिशु को गोद उठाना, ताण्डव की फिर धूम हुई॥३॥
अहा! अहा! तप कल्याणक का, वैरागी उत्सव होना।
मानव की पर्याय सफल कर, मुनि बनना साँचा सोना॥
दिव्य! दिव्य! हो ज्ञान महोत्सव, समोसरण की सभा सजें।

आठ भूमियाँ गंधकुटी में, अरिहंतों को भक्त भजें॥४॥
भव्य! भव्य! हो मोक्ष महोत्सव, भक्त सिद्ध निर्वाण भजें।
ज्ञान भावना की बलिहारी, धर्म ज्ञान के ढोल बजें॥
लेकिन इतना रखें स्मरण, मद न ज्ञान का चढ़ जाये।
अगर चढ़ा तो ज्ञान भावना, फलीभूत ना हो पाये॥५॥
जिनसंयम के साथ ज्ञान तो, प्राण रहा कल्याण रहा।
लेकिन संयम बिना ज्ञान तो, भ्रमण योग्य भव श्वान रहा॥
'सुव्रत' ज्ञान चेतना पाने, ज्ञान भावना पूज रहे।
दुखदायक अज्ञान भावना, हरने पथ हम बूझ रहे॥६॥

(दोहा)

सम्यक् सम्यग्ज्ञान का, करना नित अभ्यास।
अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग को, करते नमोऽस्तु दास॥
दुनिया में हर जीव का, बड़ा लाड़ला ज्ञान।
पाने सम्यग्ज्ञान हम, करके नमोऽस्तु ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अभीक्ष्णज्ञानोपयोग-भावनायै अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

ज्ञानभावना नित करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, ज्ञानभावना भाय॥

(पुष्पांजलिं...)

५. संवेग भावना-पूजन

स्थापना (शंभु)

संसार कर्म के मेले में, सुख दुख के हों गोरख धंधे।
दुख बिक न सके सुख मिल न सके, व्यापार करें फिर क्यों अंधे॥
ऐसी संवेग भावनाएँ, प्रभु तीर्थंकर पद दान करें।
सो करके नमोऽस्तु हम पूजें, मन मंदिर में आह्वान करें॥

ॐ ह्रीं श्री संवेग भावना अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(विष्णु)

जो संसार महाघट भरने, घट पनघट चाहें।
घट न भरें पर जनम मरण के, घट मरघट पाएँ॥
पुनरपि जननं पुनरपि मरणं, कैसे पार करें।
सो संवेग भावना भजकर, जल की धार करें॥

ॐ ह्रीं श्री संवेग-भावनायै जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

जो संसार विषय भोगों की, इच्छाएँ रखते।
वो तो पूरी हो न सकें पर, भव भव में तपते॥
इच्छा निरोध तप करके हम, शीतल शांति वरें।
सो संवेग भावना भजकर, चंदन धार करें॥

ॐ ह्रीं श्री संवेग-भावनायै संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

जो संसार महल में भटकें, उन्हें न छाँव मिली।
पर क्षत-विक्षत हुई चेतना, दुख पर्याय मिली॥
तीर्थंकर की छत्र-छाँव में, हम भी वास करें।
सो संवेग भावना भजकर, अक्षत पुंज धरें॥

ॐ ह्रीं श्री संवेग-भावनायै अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

जो संसार पुष्प पाकर के, काम बाग महके।
ब्रह्म बाग सो उजड़ेगा ही, चेतन क्या चहके॥
प्रभु पग तल के पुष्प बनें हम, नाथ विहार करें।
सो संवेग भावना भजकर, हम भी पुष्प धरें॥

ॐ ह्रीं श्री संवेग-भावनायै कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

जो संसार स्वाद को चखके, जड़ में लीन हुये।
निजानन्द ना उन्हें मिले जो, प्रभु से हीन हुये॥
चढ़ा-चढ़ा निर्वाण लाडू हम, भव के भोग तजें।
सो संवेग भावना भजकर, यों नैवेद्य धरें॥

ॐ ह्रीं श्री संवेग-भावनायै क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

जो संसार प्रकाशित है वो, मोह अंधेरा है।
सूर्य चाँद खुद घूम रहे तो, कहाँ सबेरा है॥
तीर्थंकर जैसे ज्योतित हों, यों अध्यात्म वरें।

सो संवेग भावना भजकर, रोशन द्वीप करें॥
ॐ ह्रीं श्री संवेग-भावनायै मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

जो संसार कर्म करते हैं, पाते कर्म वही।
कर्मों से संसार मिले फिर, कटते कर्म नहीं॥
प्रभु जैसे संसार कर्म का, हम भी त्याग करें।
सो संवेग भावना भजकर, धूप सुगंध करें॥
ॐ ह्रीं श्री संवेग-भावनायै अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

जो संसार वृक्ष फल खाते, कटुक जहर जैसे।
हर प्रकार के दुख वे भोगें, स्वस्थ रहें कैसे॥
सभी भावनाओं के फल हैं, मंगल भाव करें।
सो संवेग भावना भजकर, फल के गुच्छ धरें॥
ॐ ह्रीं श्री संवेग-भावनायै मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

जो संसार इष्ट है उसको, पाकर सब रोते।
अगर मोक्ष चाहा होता तो, मुक्त हुए होते॥
भावों के सब खेल जगत में, नर को नाथ करें।
सो संवेग भावना भजकर, चरणों अर्घ्य धरें॥
ॐ ह्रीं श्री संवेग-भावनायै अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अर्घ्यावली (हाकलिका)

योनि लाख चौरासी हैं, भव तन भोग विनाशी हैं।
सो भव से भयभीत रहें, पूज्य भाव संवेग भजें॥
ॐ ह्रीं श्री संसारभय-संवेगभावनायै अर्घ्यं...॥ १॥

विषय भोग दुखदायक हों, जीवन भर मन के दुख हों।
सुरगति से भयभीत रहें, पूज्य भाव संवेग भजें॥
ॐ ह्रीं श्री देवगतिदुःखविरक्त-संवेगभावनायै अर्घ्यं...॥ २॥

गर्भ जन्म मरने तक हों, मन वच तन धन के दुख हों।
नरगति से भयभीत रहें, पूज्य भाव संवेग भजें॥
ॐ ह्रीं श्री मनुष्यगतिदुःखविरक्त-संवेगभावनायै अर्घ्यं...॥ ३॥

तन मन क्षेत्र जन्म आदि, जहाँ चार विध दुख व्याधि।
नरकों से भयभीत रहें, पूज्य भाव संवेग भजें॥
ॐ ह्रीं श्री नरकगतिदुःखविरक्त-संवेगभावनायै अर्घ्यं...॥ ४॥

वध बन्धन छेदन-भेदन, भूख प्यास दुख घोर सहन।
पशुगति से भयभीत रहें, पूज्य भाव संवेग भजें॥

ॐ ह्रीं श्री तिर्यंचगतिदुःखविरक्त-संवेगभावनायै अर्घ्यं...॥ ५॥

(चौपाई)

मिट्टी हीरा चाँदी सोना, सहें कर्म फल आदि चेतना।
पृथ्वी कायिक दुख से डरना, सो संवेग भावना भजना॥

ॐ ह्रीं श्री पृथ्वीकायिकगतिदुःखविरक्त-संवेगभावनायै अर्घ्यं...॥ ६॥

ओस मेघ हिम ओले कुहरे, दुख सहते स्थावर दुहरे।
जलकायिक के दुख से डरना, सो संवेग भावना भजना॥

ॐ ह्रीं श्री जलकायिकगतिदुःखविरक्त-संवेगभावनायै अर्घ्यं...॥ ७॥

दीप ज्योति ज्वाला अंगारे, दुख सहते तपते बेचारे।
अग्नि कायिक दुख से डरना, सो संवेग भावना भजना॥

ॐ ह्रीं श्री अग्निकायिकगतिदुःखविरक्त-संवेगभावनायै अर्घ्यं...॥ ८॥

श्वांसें कूलर एसी पंखा, देते हैं दुख करो न शंका।
वायुकायिक दुख से डरना, सो संवेग भावना भजना॥

ॐ ह्रीं श्री वायुकायिकगतिदुःखविरक्त-संवेगभावनायै अर्घ्यं...॥ ९॥

लता पेड़ पौधे फल पत्ते, दुख सहने से बच नहीं सकते।
वनस्पति के दुख से डरना, सो संवेग भावना भजना॥

ॐ ह्रीं श्री वनस्पतिकायिकगतिदुःखविरक्त-संवेगभावनायै अर्घ्यं...॥ १०॥

एक श्वांस में जन्म अठारह, एक श्वांस में मरण अठारह।
निगोद वाले दुख से डरना, सो संवेग भावना भजना॥

ॐ ह्रीं श्री निगोददुःखविरक्त-संवेगभावनायै अर्घ्यं...॥ ११॥

शंख आदि को कर्म चेतना, देती है दुख दर्द वेदना।
दो इंद्री के दुख से डरना, सो संवेग भावना भजना॥

ॐ ह्रीं श्री द्वीन्द्रियदुःखविरक्त-संवेगभावनायै अर्घ्यं...॥ १२॥

चींटी खटमल कुंथू आदि, सहते दुख की पीड़ा व्याधि।
त्रय इंद्री के दुख से डरना, सो संवेग भावना भजना॥

ॐ ह्रीं श्री त्रीन्द्रियदुःखविरक्त-संवेगभावनायै अर्घ्यं...॥ १३॥

मक्खी मच्छर भ्रमर टिड्डियाँ, इनके दुख सुन कपें हड्डियाँ।
चऊ इंद्री के दुख से डरना, सो संवेग भावना भजना॥

ॐ ह्रीं श्री चतुरिन्द्रियदुःखविरक्त-संवेगभावनायै अर्घ्यं...॥ १४॥

चऊ गतियों के तन मन धारी, कह न सकें दुख सहते भारी।
पंचेन्द्री के दुख से डरना,सो संवेग भावना भजना॥
ॐ ह्रीं श्री पंचेन्द्रियदुःखविरक्त-संवेगभावनायै अर्घ्यं...॥ १५॥

जनम तुल्य दुख कहीं न होता, दुनियाँ हँसती जातक रोता।
जनम शोर के दुख से डरना, सो संवेग भावना भजना॥
ॐ ह्रीं श्री जन्मदुःखविरक्त-संवेगभावनायै अर्घ्यं...॥ १६॥

मरण तुल्य भय दुख ना दूजा, मरण पूर्व कुछ कर लें पूजा।
मृत्यु सूतक दुख से डरना, सो संवेग भावना भजना॥
ॐ ह्रीं श्री मरणदुःखविरक्त-संवेगभावनायै अर्घ्यं...॥ १७॥

मित्र पुत्र तिय आज्ञाकारी, धन धान्यादिक सुख दातारी।
इष्ट वियोग के दुख से डरना, सो संवेग भावना भजना॥
ॐ ह्रीं श्री इष्टवियोगदुःखविरक्त-संवेगभावनायै अर्घ्यं...॥ १८॥

कर्मोदय से आपद आई, मिले शत्रु परिजन दुखदाई।
अनिष्ट संयोग दुख से डरना, सो संवेग भावना भजना॥
ॐ ह्रीं श्री अनिष्टसंयोगदुःखविरक्त-संवेगभावनायै अर्घ्यं...॥ १९॥

तन पीड़ा से जब मन भटके, प्राण कंठ तक आकर लटके।
आर्त्तध्यान के दुख से डरना, सो संवेग भावना भजना॥
ॐ ह्रीं श्री आर्त्तध्यानदुःखविरक्त-संवेगभावनायै अर्घ्यं...॥ २०॥

महा भयंकर हो दुख पीड़ा, सहने में हो हृदय अधीरा।
रौद्रध्यान के दुख से डरना, सो संवेग भावना भजना॥
ॐ ह्रीं श्री रौद्रध्यानदुःखविरक्त-संवेगभावनायै अर्घ्यं...॥ २१॥

पूर्णार्घ (हरिगीतिका)

संसार ही दुख रूप है तो, सुख कहाँ से पाइये।
दुख से बचाने चेतना को, देख दुख डर जाइये॥
संवेग की यह भावना से, पद मिले तीर्थंकरा।
'सुव्रत' नमोऽस्तु कर चढ़ाएँ, अर्घ्य भावों से भरा॥
ॐ ह्रीं श्री संवेगभावनायै अनर्घपदप्राप्तये पूर्णार्घ्यं...।

जाप्य :— ॐ ह्रीं श्री संवेग-भावनायै नमः।

जयमाला (ज्ञानोदय)

पुरुष रूप संस्थान लोक का, सब चाहें सुख शांति यहाँ।
सो संसार विषय में उलझें, मिलती है बस भ्रांति यहाँ।
जो संसार विषय सुख होता, तीर्थंकर क्यों त्याग करें।
क्यों सुख शांति मोक्ष पाने को, भव दुख से संवेग धरें॥१॥
जिन माता बापू ने जन्मा, उनके भी तो मोह तजें।
मित्र बंधु हर रिश्ते नाते, राज-पाट साम्राज्य तजें॥
जड़-जीवों के भोग भोगकर, किसको आतम भोग मिलें।
राग द्वेष के बीज बपन कर, किसके चेतन बाग खिलें॥२॥
तीन लोक में तीन काल में, सभी जीव तो दुखी दिखें।
कोई तन से कोई मन से, कोई धन से दुखी दिखें॥
कोई सुत से कोई तिय से, कोई रिपु से दुखी दिखें।
देव नारकी मानव पशु सब, केवल केवल दुखी दिखें॥३॥
भव दुख से भयभीत हुये जो, उन्हें रुचे संसार नहीं।
यह संवेग भावना जानो, इस बिन हो उद्धार नहीं॥
सो वैराग्य उन्हें हो जाता, बनें दिगम्बर मुनिवर वे।
तीर्थंकर अरिहंत सिद्ध बन, सुख से करें स्वयंवर वे॥४॥
निज संसार दुखों को काटें, सुख से रहकर सुख बाँटें।
इंद्री सुख की अभिलाषाएँ, करके विजय कर्म काटें॥
सुखी स्वस्थ संसार रहे ये, मंगल भाव हमारे हैं।
विद्या के 'सुव्रतसागर' ने, धार्मिक भाव संवारे हैं॥५॥

(दोहा)

त्याग दुखी संसार को, मिले सुखी चैतन्य।
कर नमोऽस्तु सुख भावना, हो जाएँ हम धन्य॥

ॐ ह्रीं श्री संवेग-भावनायै अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

संवेग भावना नित करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, संवेग भावना भाय॥

(पुष्पांजलिं...)

६. शक्तितस्त्याग भावना-पूजन

स्थापना (शंभु)

अपने पर के उपचार हेतु, जो विधि पूर्वक चारों विध का।
निज यथाशक्ति से दान करें, वह त्याग धर्म है साधक का॥
इन त्याग भावनाओं के फल, प्रभु तीर्थंकर पद दान करें।
सो करके नमोऽस्तु हम पूजें, मन मंदिर में आव्हान करें॥

ॐ ह्रीं श्री त्यागभावना अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(लय—माता तू...)

मूर्च्छा से जन्म मिलें, फिर जीवन भर मूर्च्छा।
मरने में फिर मूर्च्छा, कब छूटे यह मूर्च्छा॥
दो ज्ञान भरे छींटे, मूर्च्छा से जग जाएँ।
नित त्याग भावना कर, तीर्थंकर पद ध्याएँ॥

ॐ ह्रीं श्री त्याग-भावनायै जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

मूर्च्छा पूरी करने, हम भव-भव भटक रहे।
इस मूर्च्छा में तपके, बस आँसू टपक रहे॥
मूर्च्छा का ताप तजें, जिन ज्ञान छाँव पाएँ।
नित त्याग भावना कर, तीर्थंकर पद ध्याएँ॥

ॐ ह्रीं श्री त्याग-भावनायै संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

मूर्च्छा की आंधी में, हम कहो किधर जाएँ।
पुरुषार्थ करें फिर भी, चैतन्य बिखर जाएँ॥
सह लें ये वज्र प्रहार, अक्षय संबल पाएँ।
नित त्याग भावना कर, तीर्थंकर पद ध्याएँ॥

ॐ ह्रीं श्री त्याग-भावनायै अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

मूर्च्छा के बागों में, जब काम पुष्प महकें।
तब प्राणी कामुक हों, फिर ब्रह्म कहाँ चहकें॥
सो रूप दिगम्बर ले, आतम विलास पाएँ।
नित त्याग भावना कर, तीर्थंकर पद ध्याएँ॥

ॐ ह्रीं श्री त्याग-भावनायै कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

मूर्च्छा के भोजन कर, भोगों में मस्त हुये।
खुद को ही भूख बना, भोगी आसक्त हुए॥
यह मूर्च्छा भोग तजें, आतम रस झलकाएँ।
नित त्याग भावना कर, तीर्थंकर पद ध्याएँ॥

ॐ ह्रीं श्री त्याग-भावनायै क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

मूर्च्छा के दीप जलें, तो जगत अंधेरा हो।
सो भटकें संसारी, कब धर्म सबेरा हो॥
यह मूर्च्छा दीप बुझा, प्रभु ज्ञान किरण पाएँ।
नित त्याग भावना कर, तीर्थंकर पद ध्याएँ॥

ॐ ह्रीं श्री त्याग-भावनायै मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

मूर्च्छा ही परिग्रह है, हर कर्म बँधें जिससे।
परिग्रह के त्याग बिना, कब कर्म कटें किससे॥
खे धूप तजें मूर्च्छा, परमातम महकाएँ।
नित त्याग भावना कर, तीर्थंकर पद ध्याएँ॥

ॐ ह्रीं श्री त्याग-भावनायै अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

मूर्च्छा के फल क्या हों, बस राग-द्वेष क्रीड़ा।
जिससे हर जीव दुखी, होकर सहते पीड़ा॥
मूर्च्छा की जड़ काटें, फल मुक्ति के पाएँ।
नित त्याग भावना कर, तीर्थंकर पद ध्याएँ॥

ॐ ह्रीं श्री त्याग-भावनायै मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

मूर्च्छा से सुख चाहें, पर दुख ही दुख होता॥
निर्ग्रंथ स्वरूपी जो, बस उनको सुख होता॥
सो अर्घ्य चढ़ाकर हम, निर्ग्रंथ रूप पाएँ।
नित त्याग भावना कर, तीर्थंकर पद ध्याएँ॥

ॐ ह्रीं श्री त्याग-भावनायै अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अर्घ्यावली

चार दान (जोगीरासा)

त्यागी आदिक कर्मोदय से, जब रोगी हो जाएँ।
यथायोग्य दे उन्हें औषधि, शुभ उपचार कराएँ॥

औषधिदान यही देकर के, पूज्य भावना भाएँ।
नमोऽस्तु कर तीर्थंकर पद को, सादर अर्घ्य चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री औषधिदान-भावनायै अर्घ्यं...॥ १॥

सम्यक् आगम शास्त्र दान दे, दुख अज्ञान मिटाएँ।
सबको सुख के सबको हित के, सम्यक पंथ दिखाएँ॥
यथायोग्य यह ज्ञानदान दें, पूज्य भावना भाएँ।
नमोऽस्तु कर तीर्थंकर पद को, सादर अर्घ्य चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री शास्त्रदान-भावनायै अर्घ्यं...॥ २॥

दया अहिंसा करुणा करके, सबको गले लगाएँ।
हो भयभीत न कोई हमसे, सबको अभय बनायें॥
यथायोग्य शुभ अभयदान दे, पूज्य भावना भाएँ।
नमोऽस्तु कर तीर्थंकर पद को, सादर अर्घ्य चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री अभयदान-भावनायै अर्घ्यं...॥ ३॥

यथायोग्य त्यागी व्रतियों को, दया भक्ति से देना।
काय दशा तप वृद्धि हेतु ये, धर्म पुण्य कर लेना॥
प्रासुक यह आहारदान दे, पूज्य भावना भाएँ।
नमोऽस्तु कर तीर्थंकर पद को, सादर अर्घ्य चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री आहारदान-भावनायै अर्घ्यं...॥ ४॥

औषधि ज्ञान अभय आहारा, दान चार विध होते।
यथाशक्ति कर त्याग भावना, करके पुण्य सँजोते॥
लौकिक धार्मिक सभी तरह से, पूज्य भावना भाएँ।
नमोऽस्तु कर तीर्थंकर पद को, सादर अर्घ्य चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री चतुःप्रकारदान-भावनायै अर्घ्यं...॥ ५॥

पंच पाप त्याग

एकेंद्रिय त्रस आदिक प्राणी, इनके प्राण बचाना।
पूज्य अहिंसा परमो धर्मः, जीवन में अपनाना॥
द्रव्य भाव दोनों हिंसा तज, पूज्य भावना भाएँ।
नमोऽस्तु कर तीर्थंकर पद को, सादर अर्घ्य चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री हिंसात्याग-भावनायै अर्घ्यं...॥ ६॥

पर का घातक धर्म विघातक, सत्य कभी ना बोलें।
प्राण जाए पर प्रण ना जाएँ, झूठ को न मुख खोलें॥
धर्मी भक्त असत्य त्याग की, पूज्य भावना भाएँ।
नमोऽस्तु कर तीर्थंकर पद को, सादर अर्घ्य चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री असत्यत्याग-भावनायै अर्घ्यं...॥ ७॥

गिरी पड़ी भूली पर वस्तु, छूना नहीं उठाना।
निज पर को दुख दायक है ये, पर की वस्तु चुराना॥
दया हेतु यह चौर्य त्याग की, पूज्य भावना भाएँ।
नमोऽस्तु कर तीर्थंकर पद को, सादर अर्घ्य चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री चौर्यत्याग-भावनायै अर्घ्यं...॥ ८॥

माँ बहना बेटी के जैसी, देखें हर नारी को।
निज रमणी से ब्याह रचाना, रुचे ब्रह्मचारी को।
मन वच काय कुशील त्याग की, पूज्य भावना भाएँ।
नमोऽस्तु कर तीर्थंकर पद को, सादर अर्घ्य चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री कुशीलत्याग-भावनायै अर्घ्यं...॥ ९॥

अंतरंग बहिरंग परिग्रह, चौबीसों परिहारें।
रहें दिगम्बर बनें निरम्बर, निज एकत्व विचारें॥
पाप मूल परिग्रह को तज कर, पूज्य भावना भाएँ।
नमोऽस्तु कर तीर्थंकर पद को, सादर अर्घ्य चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री परिग्रहत्याग-भावनायै अर्घ्यं...॥ १०॥

कायोत्सर्ग करें जीवन में, बनने ज्ञानी ध्यानी।
परिषह वा उपसर्ग सहन कर, बनें भेद विज्ञानी॥
सम्यक् तनुममत्व-त्याग की, पूज्य भावना भाएँ।
नमोऽस्तु कर तीर्थंकर पद को, सादर अर्घ्य चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री तनुममत्व-त्याग-भावनायै अर्घ्यं...॥ ११॥

चक्रवर्ती की अतुल संपदा, भोग इंद्र के जैसे।
निज का वैभव पाने त्यागें, काक वीट के जैसे॥
राज पाठ के भोग त्याग की, पूज्य भावना भाएँ।
नमोऽस्तु कर तीर्थंकर पद को, सादर अर्घ्य चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री राजभोगत्याग-भावनायै अर्घ्यं...॥ १२॥

पूर्णार्घ्य (हरिगीतिका)

मिथ्यात्व त्यागें फिर व्यसन तज, पाँच पापों को तजें।
पर भोग वस्तु सम्पदा तज, दान सम्यक् कर सजें॥
सो त्याग की शुभ भावना से, पद मिले तीर्थंकरा।
'सुव्रत' नमोऽस्तु कर चढ़ाएँ, अर्घ्य भावों से भरा॥

ॐ ह्रीं श्री त्याग-भावनायै पूर्णार्घ्यं...।

जाप्य :— ॐ ह्रीं श्री त्याग-भावनायै नमः।

जयमाला (ज्ञानोदय)

इस दुनियाँ में त्याग धर्म बिन, कुछ भी काम न बन सकते।
घर गृहस्थी व्यापार नौकरी, त्याग बिना ना चल सकते॥
जनम मरण जीवन भर सब कुछ, त्याग बिना दम तोड़ेंगे।
फिर क्या त्याग बिना धार्मिक पथ, मोक्षमहल तक दौड़ेंगे॥१॥
इन तथ्यों का चिंतन करके, दान त्याग सम्यक समझो।
व्यर्थ वाद.विवाद करने में, कभी न आपस में उलझो॥
सबसे घातक मिथ्या त्यागो, फिर ईर्ष्या का त्याग करो।
और त्याग फिर करो बाद में, प्रथम व्यसन का त्याग करो॥२॥
पाप त्यागकर त्याग धर्म का, पालन करो कर्म त्यागो।
फिर अरिहंत सिद्ध बनकर के, शुद्धातम पा जग त्यागो॥
लौकिक त्याग पुजे दुनिया में, दुनिया धार्मिक त्याग भजे।
और कहें क्या अधिक समझ लो, त्याग बिना कुछ भी न सजे॥३॥
इतना निश्चय अगर हो गया, तो फिर आलस त्याग करो।
लौकिक धार्मिक दान त्याग से, भय न करो अनुराग करो॥
धन ब्याजों से दुगना होता, धंधे से दस गुना हुआ।
खेती से सौ गुना दान से, गुना अनंतानंत हुआ॥४॥
जोड़.जोड़ कर जंग लगेगी, गाड़े सांप भुजंग लगे।
खानपान से अंग लगेगा, दिया दान तो संग लगे।
न्याय नीति से वित्त कमाओ, लोक रीति से खर्च करो।
पाप भीति से भोग भोगना, वरना दुख का नर्क वरो॥५॥
ऐसे सम्यक त्याग धर्म कर, आतम से धनवान बनें।
त्याग भावना यथाशक्ति कर, तीर्थंकर भगवान बनें॥

त्याग धर्म अनमोल जगत में, ऐसा दृढ श्रद्धान करें।
विद्या के सुव्रत कर्मों का, त्याग करें निज ध्यान धरें॥६॥

(दोहा)

राग त्याग कर धर्म हो, त्याग धर्म से ध्यान।
ध्यान मोक्ष सुख शांति दे, अतः करें गुणगान॥

ॐ ह्रीं श्री त्याग-भावनायै अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

त्याग भावना नित करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, त्याग भावना पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, सोलहकारण भाय॥

(पुष्पांजलिं...)

७. शक्तितस्तप भावना—पूजन

स्थापना (शंभु)

निज बल को बिना छुपाये ही, जिन मोक्षमार्ग के योग्य चलें।
फिर यथाशक्ति से तप करके, अपने-पर के उपसर्ग टलें॥
ये सम्यक तपो भावनाएँ, प्रभु तीर्थंकर पद दान करें।
सो करके नमोऽस्तु हम पूजें, मन मंदिर में आह्वान करें॥

ॐ ह्रीं श्री तपो भावना अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(शुद्ध गीता)

पड़े जन्मों की भँवरों में, मरण के खा रहे गोते।
अगर कीमत समझते तो, सुखी अनमोल हम होते॥
स्वयं का मूल्य पहचानें, अतः यह जल चढ़ाते हैं।
तपों की भावना भाकर, प्रभु तीर्थेश ध्याते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री तपो-भावनायै जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

बिना तप कर तपे दुनियाँ, सदा हमको तपाती है।
झुलसती चेतना जिसमें, तनिक शांति न पाती है॥
स्वयं की शांति पा जाएँ, अतः चंदन चढ़ाते हैं।
तपों की भावना भाकर, प्रभु तीर्थेश ध्याते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री तपो-भावनायै संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

अखंडित और अविनाशी हुये, हम खंड खंडित हैं।
तभी भव-भव भटक कर हम, सदा ही दंड दंडित हैं॥
हमें अक्षय करो मंडित, अतः अक्षय चढ़ाते हैं।
तपों की भावना भाकर, प्रभु तीर्थेश ध्याते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री तपो-भावनायै अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

जगत की कामनाओं से, सदा हम वासना चाहें।
उसी की पूर्ति करने, बनें भोगी भरें आहें॥
करें निष्काम निज चेतन, अतः पुष्पम् चढ़ाते हैं।
तपों की भावना भाकर, प्रभु तीर्थेश ध्याते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री तपो-भावनायै कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

सुबह से शाम रातों तक, क्षुधा का रोग ढोना है।
नहीं यह तृप्त हो सकती, पराजित रोज होना है॥
तपस्या कर क्षुधा जीतें, अतः नैवेद्य लाते हैं।
तपों की भावना भाकर, प्रभु तीर्थेश ध्याते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री तपो-भावनायै क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

जगत के हर उजाले में, छिपा रहता अंधेरा है।
मिले सद्धर्म तो दिखता, अँधेरे में सबेरा है॥
अंधेरा हर सकें अपना, अतः दीपक जलाते हैं।
तपों की भावना भाकर, प्रभु तीर्थेश ध्याते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री तपो-भावनायै मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

शुभाशुभ कर्म के कारण, कभी खुशियाँ कभी गम हों।
इन्हीं के दुष्प्रभावों से, धरम से दूर भी हम हों॥
धरम से ना भटकने को, भगत धूपम् चढ़ाते हैं।
तपों की भावना भाकर, प्रभु तीर्थेश ध्याते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री तपो-भावनायै अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

हमारे भाव ही हमको, शुभाशुभ फल दिलाते हैं।
तभी बचकर अशुभ से हम, हृदय शुभ में लगाते हैं॥
प्रभु सम शुद्ध बनने को, चरण में फल चढ़ाते हैं।
तपों की भावना भाकर, प्रभु तीर्थेश ध्याते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री तपो-भावनायै मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

स्वयं परिपूर्ण हैं ऐसा, जहाँ विश्वास जागेगा।
उसे साकार करने को, भगत प्रभु को तलाशेगा॥
हमें तुम मिल गए स्वामी, अतः अर्घ्यम् चढ़ाते हैं।
तपों की भावना भाकर, प्रभु तीर्थेश ध्याते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री तपो-भावनायै अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अर्घ्यावली (सखी)

उपवास एक दो करना, या वर्षों तक भी रखना।
यह अनशन तप हम पूजें, जय तीर्थंकर की गूँजें॥

ॐ ह्रीं श्री अनशनतपो-भावनायै अर्घ्यं...॥ १॥

ले ग्रास एक दो आना, कम भोज्य भूख से खाना।
यह ऊनोदर तप पूजें, जय तीर्थंकर की गूँजें॥

ॐ ह्रीं श्री ऊनोदरतपो-भावनायै अर्घ्यं...॥ २॥

ले कठिन नियम मुनि जाएँ, विधि मिले तभी कुछ खायें।
वृत्तिपरिसंख्यान पूजें, जय तीर्थंकर की गूँजें॥

ॐ ह्रीं श्री वृत्तिपरिसंख्यानतपो-भावनायै अर्घ्यं...॥ ३॥

जय इंद्री निद्रा करने, रस त्यागें आगम पढ़ने।
रसपरित्याग तप पूजें, जय तीर्थंकर की गूँजें॥

ॐ ह्रीं श्री रसपरित्यागतपो-भावनायै अर्घ्यं...॥ ४॥

निर्जन में सोना रहना, तप स्वाध्याय भी करना।
विविक्तशैय्यासन पूजें, जय तीर्थंकर की गूँजें॥

ॐ ह्रीं श्री विविक्तशैय्यासनतपो-भावनायै अर्घ्यं...॥ ५॥

दे तन को कष्ट तपाना, बन योगी धर्म दिखाना।
यह कायक्लेश तप पूजें, जय तीर्थंकर की गूँजें॥

ॐ ह्रीं श्री कायक्लेशतपो-भावनायै अर्घ्यं...॥ ६॥

आलस्य त्याग तप धरना, परिहार दोष के करना।
यह प्रायश्चित तप पूजें, जय तीर्थंकर की गूँजें॥

ॐ ह्रीं श्री प्रायश्चित्ततपो-भावनायै अर्घ्यं...॥ ७॥

पद पूज्य जनों के पड़ना, नित विनय हृदय से करना।
यह विनय महातप पूजें, जय तीर्थंकर की गूँजें॥

ॐ ह्रीं श्री विनयतपो-भावनायै अर्घ्यं...॥ ८॥

मुनि तन की सेवा करना, कर उपासना खुश रहना।
तप वैयावृत्ति पूजें, जय तीर्थंकर की गूँजें॥
ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्तितपो-भावनायै अर्घ्यं...॥ ९॥

तज प्रमाद ज्ञान बढ़ाना, शुभ अंतरंग तप माना।
स्वाध्याय तपो हम पूजें, जय तीर्थंकर की गूँजें॥
ॐ ह्रीं श्री स्वाध्यायतपो-भावनायै अर्घ्यं...॥ १०॥

तज अहंकार ममकारा, तन मोह त्यागना सारा।
व्युत्सर्ग तपो यह पूजें, जय तीर्थंकर की गूँजें॥
ॐ ह्रीं श्री व्युत्सर्गतपो-भावनायै अर्घ्यं...॥ ११॥

विक्षेप चित्त का तजना, तन स्थिर कर निज भजना।
यह ध्यान महातप पूजें, जय तीर्थंकर की गूँजें॥
ॐ ह्रीं श्री ध्यानतपो-भावनायै अर्घ्यं...॥ १२॥

पूर्णार्घ्य (हरिगीतिका)

जो जगत को दिख रहे वो, बाह्य तप छह भेद के।
तप आंतरिक मन से हुये वो, भी रहे छह भेद के॥
बारह तपों की भावना से, पद मिले तीर्थंकरा।
'सुव्रत' नमोऽस्तु कर चढ़ाएँ, अर्घ्य भावों से भरा॥
ॐ ह्रीं श्री तपो-भावनायै अनर्घपदप्राप्तये पूर्णार्घ्यं...।

जाप्य :— ॐ ह्रीं श्री तपो-भावनायै नमः।

जयमाला

(ज्ञानोदय)

जब तक तन में आग रहेगी, जारी भागम भाग रहे।
ज्यों ही ठंडी आग पड़ेगी, किसको किससे राग रहे॥
सो जलने से पहले हमको, जलना पूर्ण त्यागना है।
तप की श्रेष्ठ भावना भाकर, करना पूज्य साधना है॥१॥
अगर तपस्या बिन मुक्ति के, सपने देख रहे प्यारे।
तो साकार न हो पाएँगे, अतः त्याग दो भ्रम सारे॥
जब संसार अवस्था में ही, बिन तप के कुछ काम न हों।
तो फिर मोक्षमार्ग में सुन लो, बिन तप के आराम न हों॥२॥
तप से ही हर फसलें पकतीं, तप से ही फल-फूल मिलें।

तप से ही तो भोजन मिलता, तप से जीवन मरण मिलें॥
तप से ही तो पानी बरसे, तप से आभूषण सजते।
फिर बिन तप के धर्म चले क्या, अतः तपों को हम भजते॥३॥
करके छह बहिरंग तपों को, जिनशासन का नाम करें।
अंतरंग तप करके हम भी, आतम का कल्याण करें॥
चिंतामणि सम कल्पवृक्ष सम, तप भक्तों के उपकारी।
सो विद्या के 'सुव्रतसागर', बनें तपों के अधिकारी॥४॥

(दोहा)

यह जीवन संसार यह, है तप का संग्राम।
सो सम्यक् तप हम करें, तीर्थंकर के धाम॥

ॐ ह्रीं श्री तपो-भावनायै अनर्घपदप्राप्तये पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

तपो भावना नित करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, तपो भावना भाय॥

(पुष्पांजलिं...)

८. साधुसमाधि भावना—पूजन

स्थापना (शंभु)

व्रत शीलों का पालन करते, यदि मुनि पर कुछ संकट आएँ।
तो उन्हें शांत इस विध करना, जिससे त्यागी मुनि सुख पाएँ॥
ये साधुसमाधि भावनाएँ, प्रभु तीर्थंकर पद दान करें।
सो करके नमोऽस्तु हम पूजें, मन मंदिर में आह्वान करें ॥

ॐ ह्रीं श्री साधुसमाधि भावना अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(रोला)

अगर साधु के कष्ट, हटाये हमने होते।
जनम मरण के कष्ट, हमें फिर कैसे होते॥
मिले सुखद सम भाव, करें जल से जिनअर्चन।

साधुसमाधि भाव, भजें तीर्थंकर पद हम॥

ॐ ह्रीं श्री साधुसमाधि-भावनायै जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

अगर साधु का हाथ, हमारे सिर पर होता।
तो कैसे भव ताप, सहित यह जीवन होता॥
मिले साधु की छाँव, करें चंदन से अर्चन।
साधुसमाधि भाव, भजें तीर्थंकर पद हम॥

ॐ ह्रीं श्री साधुसमाधि-भावनायै संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

अगर साधु का ध्यान, रखा कुछ हमने होता।
तो होता कल्याण, भ्रमण ना दर-दर होता॥
मिले साधु का गाँव, करें अक्षत से अर्चन।
साधुसमाधि भाव, भजें तीर्थंकर पद हम।

ॐ ह्रीं श्री साधुसमाधि-भावनायै अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अगर साधु चारित्र, पूज कर जपते माला।
तो फिर मुक्ति पवित्र, स्वयं करती वरमाला॥
मिले साधु का ब्रह्म, करें पुष्पों से अर्चन।
साधुसमाधि भाव, भजें तीर्थंकर पद हम॥

ॐ ह्रीं श्री साधुसमाधि-भावनायै कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

अगर साधु का स्वाद, जरा सा चक्खा होता।
तो पुदगल का स्वाद, लगा ना अच्छा होता॥
मिले साधु का भाव, करें नैवेद्य से अर्चन।
साधुसमाधि भाव, भजें तीर्थंकर पद हम॥

ॐ ह्रीं श्री साधुसमाधि-भावनायै क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

अगर साधु का ज्ञान, विनय से पाया होता।
तो नशता अज्ञान, उजाला घट-घट होता॥
मिले साधु की ज्योति, करें दीपों से अर्चन।
साधुसमाधि भाव, भजें तीर्थंकर पद हम॥

ॐ ह्रीं श्री साधुसमाधि-भावनायै मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

अगर साधु का धर्म, स्वयं अपनाया होता।
तो कटते सब कर्म, दुखी ना चेतन होता॥

मिले साधु का रूप, करें धूपों से अर्चन।
साधुसमाधि भाव, भजें तीर्थंकर पद हम॥

ॐ ह्रीं श्री साधुसमाधि-भावनायै अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

अगर साधु को शीश, झुकाया सादर होता।
तो मिलता आशीष, सुखों में हर पल होता॥
मिले साधु संयोग, करें फल से जिन अर्चन।
साधुसमाधि भाव, भजें तीर्थंकर पद हम॥

ॐ ह्रीं श्री साधुसमाधि-भावनायै मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

अगर साधु का दर्श, किया अंदर से होता।
तो मिलता सुख हर्ष, हृदय मंदिर सा होता॥
मिले साधु का मंत्र, अर्घ्य से करते अर्चन।
साधुसमाधि भाव, भजें तीर्थंकर पद हम॥

ॐ ह्रीं श्री साधुसमाधि-भावनायै अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

(अर्घावली)

(सुविद्या)

मूलगुणों में कभी कहीं पर, कर लें दोष अमान्य।
उत्तरगुण से रहित रहे ज्यों, मुरझाएँ हों धान्य॥
यों पुलाक मुनियों के संकट, हम कर पाएँ दूर।
पूजें साधुसमाधि भावना, हो नमोऽस्तु भरपूर॥

ॐ ह्रीं श्री पुलाकमुनि-साधुसमाधि-भावनायै अर्घ्यं...॥ १॥

जो मुनि अखंड व्रत पालें पर, तन उपकरण सजाएँ।
घिरे रहें परिवार मोह से, वही वकुश कहलाएँ॥
वकुश रूप मुनियों के संकट, हम पर पाएँ दूर।
पूजें साधुसमाधि भावना, हो नमोऽस्तु भरपूर॥

ॐ ह्रीं श्री वकुशमुनि-साधुसमाधि-भावनायै अर्घ्यं...॥ २॥

दो प्रकार के कुशील मुनि हों, जो निर्दोष सुशील।
प्रति सेवना कुशील पहले, अन्य कषाय कुशील॥
द्वय कुशील मुनियों के संकट, हम कर पाएँ दूर।
पूजें साधुसमाधि भावना, हो नमोऽस्तु भरपूर॥

ॐ ह्रीं श्री कुशीलमुनि-साधुसमाधि-भावनायै अर्घ्यं...॥ ३॥

जो परिग्रह से घिरे रहें पर, पालें हर व्रत शील।
पर उत्तर गुण कभी तोड़ लें, वो प्रतिसेव्य कुशील॥
यों कुशील मुनियों के संकट, हम कर पाएँ दूर।
पूजें साधुसमाधि भावना, हो नमोऽस्तु भरपूर॥

ॐ ह्रीं श्री प्रतिसेवनाकुशीलमुनि-साधुसमाधि-भावनायै अर्घ्यं...॥ ४॥

अन्य कषाय उदय जीते पर, रहा संज्वलन शेष।
जय हो मुनि निर्ग्रंथ हमारे, सुखी रखें हर देश॥
मुनि कषाय कुशील के संकट, हम कर पाएँ दूर।
पूजें साधुसमाधि भावना, हो नमोऽस्तु भरपूर॥

ॐ ह्रीं श्री कषायकुशीलमुनि-साधुसमाधि-भावनायै अर्घ्यं...॥ ५॥

अंतर मुहूर्त में पाएँगे, जो मुनि केवलज्ञान।
वो निर्ग्रंथ संत कहलाते, दें हमको वरदान॥
ऐसे निर्ग्रंथों के संकट, हम कर पाएँ दूर।
पूजें साधुसमाधि भावना, हो नमोऽस्तु भरपूर॥

ॐ ह्रीं श्री निर्ग्रंथमुनि-साधुसमाधि-भावनायै अर्घ्यं...॥ ६॥

चार घातिया कर्म जिन्होंने, कर डाले हैं नाश।
पूज्य केवली स्नातक वे, दें हमको संन्यास॥
स्नातक के सारे संकट, स्वयं हो चुके दूर।
पूजें साधुसमाधि भावना, हो नमोऽस्तु भरपूर॥

ॐ ह्रीं श्री स्नातकमुनि-साधुसमाधि-भावनायै अर्घ्यं...॥ ७॥

पूर्णार्घ्य (हरिगीतिका)

जो पाँच विध निर्ग्रंथ मुनि वे, पूज्य सबके संत हैं।
चारित्र के परिमाण कम-बढ़, किंतु सब निर्ग्रंथ है॥
हर विघ्न साधुसमाधि करके, पद मिले तीर्थंकरा।
'सुव्रत' नमोऽस्तु कर चढ़ाएँ, अर्घ्य भावों से भरा॥

ॐ ह्रीं श्री साधुसमाधि-भावनायै अनर्घपदप्राप्तये पूर्णार्घ्यं...।

जाप्य :— ॐ ह्रीं श्री साधुसमाधि-भावनायै नमः।

जयमाला (ज्ञानोदय)

तीन लोक में तीन काल में, जीव तत्त्व अति दुर्लभ है।
नर पर्याय देश भी उत्तम, मिलना चिंतामणि सम है॥

जिनशासन में रूप दिगम्बर, पाना सुलभ नहीं प्यारे।
अतः अगर मुनि बन न सको तो, सच्चे श्रावक बन जा रे॥१॥
श्रावक का कर्त्तव्य यही कि, नवदेवों की भक्ति करें।
मुनियों पर यदि कर्मोदय से, आएँ कुछ उपसर्ग हरें॥
मुनि संयम पर अगर कभी यों, संकट जैसे मँडराएँ।
तो मुनियों की करके रक्षा, धर्म निभाएँ सुख पाएँ॥२॥
श्रावक श्रमणों के जोड़े का, जब तक गठबंधन होगा।
भक्त और भगवान मिलेंगे, तब तक जिनशासन होगा॥
जब तक भू पर साधु दिगम्बर, सुख से गमन करेंगे जी।
तब तक इस धरती अम्बर में, सुख से मेघ झरेंगे ही॥३॥
और सुनो मुनि साधु साधना, बन जाए आदर्श कथा।
तो तीर्थंकरप्रकृति बँधेगी, जो हर लेगी कर्म व्यथा॥
ये ही साधुसमाधि भावना, मुनि को सुख देकर पाएँ।
'सुव्रत' जग में वो यश पाते, जो मुनियों के गुण गाएँ॥४॥

(दोहा)

साधुसमाधि भावना, दे जग में सम्मान।
करती रक्षा धर्म की, भक्त करे भगवान॥

ॐ ह्रीं श्री साधुसमाधि-भावनायै अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

साधुसमाधि नित करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, साधुसमाधि भाय॥

(पुष्पांजलिं...)

९. वैयावृत्य भावना-पूजन

स्थापना (शंभु)

यदि मोक्षमार्ग के मार्गी को, दुख अगर मार्ग में दुखी करें।
तो दोष रहित विधि से उनकी, सेवा कर के दुख दूर करें॥
ये वैयावृत्य भावनाएँ प्रभु तीर्थंकर पद दान करें।
सो करके नमोऽस्तु हम पूजें, मन मंदिर में आह्वान करें॥

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्य भावना अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

दुख जन्म मरण के सब भोगे, पर बचने के पथ पर न सजें।
जो इस दुख से घबराये हैं, वे साधु बनें या साधु भजें॥
सो सर्व साधुओं की सेवा, प्रासुक जल से करना चाहें।
ये वैयावृत्य भावना भा, तीर्थंकर की पूजें राहें॥

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्य-भावनायै जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

संसार ताप की ज्वाला से, सब बचने यहाँ-वहाँ भागें।
पर हाय! शरण ना मिली कहीं, अब कैसे पुण्य योग जागें॥
सो सर्व साधुओं की सेवा, चंदन द्वारा करना चाहें।
ये वैयावृत्य भावना भा, तीर्थंकर की पूजें राहें॥

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्य-भावनायै संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

चौरासी लाख योनियों में सुख, खोज रहे दुख योग मिले।
ठहराव कहीं भी मिला नहीं, बस भटकन के संयोग मिले॥
सो सर्व साधुओं की सेवा, अक्षत द्वारा करना चाहें।
ये वैयावृत्य भावना भा, तीर्थंकर की पूजें राहें॥

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्य-भावनायै अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

हम काम व्यथा से घायल हो, उपचार कराने जहाँ गये।
वो स्वयं काम से लिप्त मिले, हर बार ठगाये वहाँ गये॥
सो सर्व साधुओं की सेवा, हम पुष्प चढ़ा करना चाहें।
ये वैयावृत्य भावना भा, तीर्थंकर की पूजें राहें॥

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्य-भावनायै कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

आनन्द खोजने भोजन में, कितनी पर्यायें गवाँ चुके।
पर मिले रोग दुख बीमारी, शुभ योग पुण्य के लुटा चुके॥
सो सर्व साधुओं की सेवा, नैवेद्य चढ़ा करना चाहें।
ये वैयावृत्य भावना भा, तीर्थंकर की पूजें राहें॥

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्य-भावनायै क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

जो चीज चमकती दिखी हमें, पथ भ्रष्ट उसी ने कर डाला।
तब अंधकार ऐसा छाया, हर जगह दिखा काला-काला॥
सो सर्व साधुओं की सेवा, शुभ दीप जला करना चाहें।

ये वैयावृत्य भावना भा, तीर्थंकर की पूजें राहें॥

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्य-भावनायै मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

संसार स्वयं संचालित है, जिसमें कर्मों के खेल चलें।
हम कठपुतली सम नाच रहे, सुख जैसे दुख के जेल चलें॥
सो सर्व साधुओं की सेवा, हम धूप चढ़ा करना चाहें।
ये वैयावृत्य भावना भा, तीर्थंकर की पूजें राहें॥

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्य-भावनायै अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

दुख के बीजों को बो करके, हम सुख की फसलें चाह रहे।
ये संभव कभी न हो सकता, जो बोते वो ही काट रहे॥
सो सर्व साधुओं की सेवा, प्रासुक फल से करना चाहें।
ये वैयावृत्य भावना भा, तीर्थंकर की पूजें राहें॥

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्य-भावनायै मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हर जीवन का है सत्य यही, बिन साधु बने सुख ना पाएँ।
यदि साधु नहीं बन सकते तो, कर साधु जनों की सेवायें॥
सो सर्व साधुओं की सेवा, हम अर्घ्य चढ़ा करना चाहें।
ये वैयावृत्य भावना भा, तीर्थंकर की पूजें राहें॥

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्य-भावनायै अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अर्घावली (विष्णु)

जिनके कर कमलों से हमको, व्रत दीक्षा मिलती।
उनके पद कमलों की सेवा, पुण्यों से मिलती॥
ऐसे गुरु आचार्यश्री के, दुख हम दूर करें।
अर्घ्य चढ़ाकर करके नमोऽस्तु, वैयावृत्य करें॥

ॐ ह्रीं श्री आचार्यवैयावृत्य-भावनायै अर्घ्यं...॥ १॥

जिनके श्रीमुख चंद्र कमल से, ज्ञानामृत झरता।
उनका शुभ सान्निध्य हमारा, पथ मंगल करता॥
ऐसे उपाध्याय गुरुओं के, दुख हम दूर करें।
अर्घ्य चढ़ाकर करके नमोऽस्तु, वैयावृत्य करें॥

ॐ ह्रीं श्री उपाध्यायवैयावृत्य-भावनायै अर्घ्यं...॥ २॥

महा-महा उपवास आदि जो, अनुष्ठान करते।

जिनशासन की ध्वज फहराकर, शंखनाद करते॥
ऐसे महातपस्वी जन के, दुख हम दूर करें।
अर्घ्य चढ़ाकर करके नमोऽस्तु, वैयावृत्य करें॥

ॐ ह्रीं श्री तपस्वीसाधुवैयावृत्य-भावनायै अर्घ्यं...॥ ३॥

जैन धर्म सिद्धांत-शास्त्र जो, संयम धार पढ़ें।
शिक्षा शील त्यागियों पर यदि, कुछ दुख आन पड़ें ॥
ऐसे पूज्य शैक्ष संयत के, दुख हम दूर करें।
अर्घ्य चढ़ाकर करके नमोऽस्तु, वैयावृत्य करें॥

ॐ ह्रीं श्री शैक्षसाधुवैयावृत्य-भावनायै अर्घ्यं...॥ ४॥

तीव्र असाता रोग आदि से, जब तन क्लांत हुये।
संयत के दुख रोग देखकर, भक्त अशांत हुये॥
ऐसे पूज्य ग्लान गुरुओं के, दुख हम दूर करें।
अर्घ्य चढ़ाकर करके नमोऽस्तु, वैयावृत्य करें॥

ॐ ह्रीं श्री ग्लानसाधुवैयावृत्य-भावनायै अर्घ्यं...॥ ५॥

वृद्ध संयमी स्थिविरों का, जो समूह होता।
वही कहा गुण उनकी सेवा, पाप मैल धोता॥
ऐसे पूजित गण गुरुओं के, दुख हम दूर करें।
अर्घ्य चढ़ाकर करके नमोऽस्तु, वैयावृत्य करें॥

ॐ ह्रीं श्री गणसाधुवैयावृत्य-भावनायै अर्घ्यं...॥ ६॥

दीक्षा दाता एक गुरु का, शिष्य समूह भला।
वही शिष्य समुदाय रहा कुल, जिससे धर्म चला।
ऐसे पूजित कुल गुरुओं के, दुख हम दूर करें।
अर्घ्य चढ़ाकर करके नमोऽस्तु, वैयावृत्य करें॥

ॐ ह्रीं श्री कुलसाधुवैयावृत्य-भावनायै अर्घ्यं...॥ ७॥

मुनि आर्यिका श्रावक श्राविका, संघ चतुर्विध हो।
या फिर ऋषि मुनि यति अनगारी, श्रमण संघ ये हो॥
ऐसे पूज्य संघ गुरुओं के, दुख हम दूर करें।
अर्घ्य चढ़ाकर करके नमोऽस्तु, वैयावृत्य करें॥

ॐ ह्रीं श्री चतुःप्रकारसंघसाधुवैयावृत्य-भावनायै अर्घ्यं...॥ ८॥

दीर्घ काल के दीक्षित संयत, साधु कहाते हैं।
अगर साधु पर दुख आयें तो, भक्त हटाते हैं॥
ऐसे पूजित साधु जनों के, दुख हम दूर करें।
अर्घ्य चढ़ाकर करके नमोऽस्तु, वैयावृत्य करें॥

ॐ ह्रीं श्री साधुवैयावृत्य-भावनायै अर्घ्यं...॥ ९॥

सर्व लोक सम्मत जो साधु, वे मनोज्ञ मुनि हों।
इन्हें व्याधि दुख आ जाने पर, धर्म विमुख यदि हों॥
तो तन मन धन से सेवा कर, दुख हम दूर करें।
अर्घ्य चढ़ाकर करके नमोऽस्तु, वैयावृत्य करें॥

ॐ ह्रीं श्री मनोज्ञसाधुवैयावृत्य-भावनायै अर्घ्यं...॥ १०॥

पूर्णार्घ्यं (हरिगीतिका)

आचार्य आदिक जब परीषह, आदि से कुछ खिन्न हों।
मिथ्यात्व पालें या असंयम, के विषय उत्पन्न हों॥
उत्कृष्ट वैयावृत्य करके, पद मिले तीर्थंकरा।
'सुव्रत' नमोऽस्तु कर चढ़ाएँ, अर्घ्य भावों से भरा॥

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्य-भावनायै अनर्घपदप्राप्तये पूर्णार्घ्यं...।

जाप्य :— ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्य-भावनायै नमः।

जयमाला

(ज्ञानोदय)

श्रेष्ठ धर्म रथ के दो पहिये, श्रमण और श्रावक के हों।
जब तक दोनों रहें व्यवस्थित, रथयात्रा संचालित हों॥
रहें सुरक्षित यात्रीगण सब, मिले लक्ष्य गन्तव्य उन्हें।
सो योगी के सहयोगी बन, करना वैयावृत्त हमें॥१॥
परपस्परोपग्रहो जीवानाम्, सूत्र पालकर जीवन में।
जियो और जीने दो सबको, लीन रहो निज चेतन में॥
प्रायः यही सुना कि श्रावक, अगर धर्म से विचलित हों।
तो श्रमणों ने उन्हें संभाला, क्रिया धर्म स्थापित हों॥२॥
किंतु कभी यदि ऐसा हो कि, मुनि संयम से विचलित हों।
परिषह दुख उपसर्ग रोग में, जब मिथ्यात्व उपस्थित हों॥
तो श्रावक के कर्त्तव्यों की, रही परीक्षा भक्तों की।

सूझ-बूझ से यथाशक्ति से, करें सुरक्षा श्रमणों की॥३॥
यह तप वैयावृत्य करें जो, वो समाधि को प्राप्त करें।
ग्लानि भाव पर जय कर सम्यक्, प्रेम और वात्सल्य करें॥
साथ-साथ में यही भावना, तीर्थंकरप्रकृति बाँधे।
जिनके केवल नाम मात्र से, अपने सुप्त भाग्य जागे॥४॥
धार्मिक पथ के साथ-साथ में, यह लौकिक सुख शांति करे।
क्रोध मान माया लोभों के, बैर कषाय अशांति हरे॥
बढ़े परस्पर प्रेम जगत में, चिंता व्यसन समाप्त करें।
सुव्रत वैयावृत्य धर्म कर, विद्या का सुख प्राप्त करें॥५॥

(दोहा)

वैयावृत्य भावना, निज पर को सुखकार।
करे सुरक्षा धर्म की, दे तीर्थंकर द्वार॥

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्य-भावनायै अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

वैयावृत्य नित करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, वैयावृत्य भाय॥

(पुष्पांजलिं...)

१०. अर्हद्भक्ति भावना-पूजन

स्थापना (शंभु)

जो धरे पंच कल्याणक सुख, फिर कर्म घातिया घात दिये।
दे मोक्षमार्ग अरिहंत हुये, सो भक्त विनय से भक्ति किये॥
ये अर्हद्भक्ति भावनाएँ, प्रभु तीर्थंकर पद दान करें।
सो करके नमोऽस्तु हम पूजें, मन मंदिर के आह्वान करें॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्भक्ति भावना अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(चौपाई)

जन्म मरण का पा संसारा, दुखी हुये भूले प्रभु द्वारा।
सुख पाने जल आज चढ़ाएँ, अर्हद्भक्ति भावना भाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्भक्ति-भावनायै जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

अशुभ भाव भव.भव झुलसाएँ, हम से प्रभु की छाँव छुड़ाएँ।
चंदन सी शीतलता पाएँ, अर्हद्भक्ति भावना भाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्भक्ति-भावनायै संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

बिना भक्ति निज वैभव छूटा, भव का चक्र न अब तक टूटा।
पुंज चढ़ा अक्षयपद पाएँ, अर्हद्भक्ति भावना भाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्भक्ति-भावनायै अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

आतम राम काम कब चाहें, काम कामना दुख की राहें।
पुष्प चढ़ा निज काम नशाएँ, अर्हद्भक्ति भावना भाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्भक्ति-भावनायै कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

जिसको जड़ पकवान रुचेगें, उसको क्या भगवान दिखेंगे।
क्षुधा हरें नैवेद्य चढाएँ, अर्हद्भक्ति भावना भाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्भक्ति-भावनायै क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

दीप आरती जहाँ न होती, वहाँ जले क्या आतम ज्योति।
मोह अंध हर द्वीप जलाएँ, अर्हद्भक्ति भावना भाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्भक्ति-भावनायै मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

कर्म युद्ध ना लड़ो अकेले, कर्मजयी हों प्रभु के चेले।
धूप गंध खे कर्म नशाएँ, अर्हद्भक्ति भावना भाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्भक्ति-भावनायै अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

मिला भक्ति का जिन्हें सहारा, उनने निज आतम शृंगारा।
फल से महा मोक्षफल पाएँ, अर्हद्भक्ति भावना भाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्भक्ति-भावनायै मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

निज अर्हंत अवस्था पाने, अर्हंतों को लगे मनाने।
सो हम सादर अर्घ्य चढ़ाएँ, अर्हद्भक्ति भावना भाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्भक्ति-भावनायै अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अर्घ्यावली

अरिहंत प्रभु के ४६ मूलगुण (हाकलिका)

हुए जन्म के दस अतिशय, बिना पसीना देहालय।
अर्हद्भक्ति भाव पूजें, तीर्थंकर पदवी खोजें॥

ॐ ह्रीं श्री श्वेदरहित-अर्हद्भक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ १॥

भोजन पानी करके भी, होते ना मलमूत्र कभी।
अर्हद्भक्ति भाव पूजें, तीर्थंकर पदवी खोजें॥
ॐ ह्रीं श्री मलमूत्ररहित-अर्हद्भक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ २॥

मात दुग्ध सम श्वेत रुधिर, विश्व प्रेम झरता झर-झर।
अर्हद्भक्ति भाव पूजें, तीर्थंकर पदवी खोजें॥
ॐ ह्रीं श्री श्वेतरुधिरसहित-अर्हद्भक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ ३॥

प्रभु संस्थान सुडौल रहा, नपा तुला अनमोल रहा।
अर्हद्भक्ति भाव पूजें, तीर्थंकर पदवी खोजें॥
ॐ ह्रीं श्री समचतुरस्रसंस्थानसहित-अर्हद्भक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ ४॥

उत्तम संहनन नाथ धरें, ध्यान अग्नि से कर्म हरें।
अर्हद्भक्ति भाव पूजें, तीर्थंकर पदवी खोजें॥
ॐ ह्रीं श्री उत्तमसंहननसहित-अर्हद्भक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ ५॥

प्रभु का रूप बड़ा सुंदर, है वैराग्य शांति का घर।
अर्हद्भक्ति भाव पूजें, तीर्थंकर पदवी खोजें॥
ॐ ह्रीं श्री सुंदररूपसहित-अर्हद्भक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ ६॥

देह सुगंधित हो ऐसी, कल्पवृक्ष के पुष्पों सी।
अर्हद्भक्ति भाव पूजें, तीर्थंकर पदवी खोजें॥
ॐ ह्रीं श्री सुगंधितदेहसहित-अर्हद्भक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ ७॥

एक हजार आठ लक्षण, तन में शोभ रहे क्षण-क्षण।
अर्हद्भक्ति भाव पूजें, तीर्थंकर पदवी खोजें॥
ॐ ह्रीं श्री अष्टसहस्रलक्षणसहित-अर्हद्भक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ ८॥

मुनि वैयावृत्ति का फल, अतुल्य पाया काया बल।
अर्हद्भक्ति भाव पूजें, तीर्थंकर पदवी खोजें॥
ॐ ह्रीं श्री अतुल्यबलसहित-अर्हद्भक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ ९॥

हित-मित मोहक वाणी है, जन-जन की कल्याणी है।
अर्हद्भक्ति भाव पूजें, तीर्थंकर पदवी खोजें॥
ॐ ह्रीं श्री हित-मित-प्रियवाणीसहित-अर्हद्भक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ १०॥

हुए ज्ञान के दस अतिशय, सुभिक्षता दाता की जय।
अर्हद्भक्ति भाव पूजें, तीर्थंकर पदवी खोजें॥
ॐ ह्रीं श्री सुभिक्षतासहित-अर्हद्भक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ ११॥

अधर गगन में गमन करें, भूतल पर न चरण धरें।
अर्हद्भक्ति भाव पूजें, तीर्थंकर पदवी खोजें॥
ॐ ह्रीं श्री आकाशगमनसहित-अर्हद्भक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ १२॥

मिले प्रभु सान्निध्य जहाँ, प्राणी वध ना हुये वहाँ।
अर्हद्भक्ति भाव पूजें, तीर्थंकर पदवी खोजें॥
ॐ ह्रीं श्री प्राणिवधरहित-अर्हद्भक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ १३॥

केवलज्ञान हुआ जिनको, कवलाहार न हो उनको।
अर्हद्भक्ति भाव पूजें, तीर्थंकर पदवी खोजें॥
ॐ ह्रीं श्री कवलाहाररहित-अर्हद्भक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ १४॥

कैसे भी उपसर्ग न हों, प्रभु अरिहंत जहाँ पर हों।
अर्हद्भक्ति भाव पूजें, तीर्थंकर पदवी खोजें॥
ॐ ह्रीं श्री उपसर्गरहित-अर्हद्भक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ १५॥

समवसरण में नाथ रुकें, एक मुखी के चार दिखें।
अर्हद्भक्ति भाव पूजें, तीर्थंकर पदवी खोजें॥
ॐ ह्रीं श्री चतुर्मुखसहित-अर्हद्भक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ १६॥

हर विद्या ले जन्म इधर, हर विद्या के प्रभु ईश्वर।
अर्हद्भक्ति भाव पूजें, तीर्थंकर पदवी खोजें॥
ॐ ह्रीं श्री सर्वविद्यासहित-अर्हद्भक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ १७॥

जब तन परमौदारिक हो, पड़े न तन की छाया सो।
अर्हद्भक्ति भाव पूजें, तीर्थंकर पदवी खोजें॥
ॐ ह्रीं श्री तनछायारहित-अर्हद्भक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ १८॥

जब चंचलता ना होती, निर्निमेष दृष्टि होती।
अर्हद्भक्ति भाव पूजें, तीर्थंकर पदवी खोजें॥
ॐ ह्रीं श्री निर्निमेषदृष्टिसहित-अर्हद्भक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ १९॥

अगर दशा छद्मस्थ नहीं, बढ़ते तब नख केश नहीं।
अर्हद्भक्ति भाव पूजें, तीर्थंकर पदवी खोजें॥
ॐ ह्रीं श्री नखकेशवृद्धिरहित-अर्हद्भक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ २०॥

सुरकृत हों चौदह अतिशय, अर्धमागधी भाषा जय।
अर्हद्भक्ति भाव पूजें, तीर्थंकर पदवी खोजें॥
ॐ ह्रीं श्री अर्धमागधीभाषासहित-अर्हद्भक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ २१॥

सब जन के घर बाहर में, मैत्री करें परस्पर में।
अर्हद्भक्ति भाव पूजें, तीर्थंकर पदवी खोजें॥
ॐ ह्रीं श्री परस्परमैत्रीसहित-अर्हद्भक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ २२॥

एक साथ सब ऋतुओं के, सुख मिलते फल फूलों के।
अर्हद्भक्ति भाव पूजें, तीर्थंकर पदवी खोजें॥
ॐ ह्रीं श्री सर्वऋतुफलफूलसहित-अर्हद्भक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ २३॥

दर्पण सी धरती होती, निर्मल ज्यों हीरा मोती।
अर्हद्भक्ति भाव पूजें, तीर्थंकर पदवी खोजें॥
ॐ ह्रीं श्री दर्पणसमभूसहित-अर्हद्भक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ २४॥

प्रभु का जहाँ विहार चले, मंद सुगंधित वायु चले।
अर्हद्भक्ति भाव पूजें, तीर्थंकर पदवी खोजें॥
ॐ ह्रीं श्री सुगंधितवायुसहित-अर्हद्भक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ २५॥

सबको परमानन्द मिले, प्रभु विहार प्रभु दर्श मिले।
अर्हद्भक्ति भाव पूजें, तीर्थंकर पदवी खोजें॥
ॐ ह्रीं श्री परमानन्दसहित-अर्हद्भक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ २६॥

दसों दिशाएँ निर्मल हों, धूल शूल बिन उज्ज्वल हों।
अर्हद्भक्ति भाव पूजें, तीर्थंकर पदवी खोजें॥
ॐ ह्रीं श्री निर्मलदिशासहित-अर्हद्भक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ २७॥

गंधोदक की हो वर्षा, जिससे सबका मन हर्षा।
अर्हद्भक्ति भाव पूजें, तीर्थंकर पदवी खोजें॥
ॐ ह्रीं श्री गंधोदकवृष्टिसहित-अर्हद्भक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ २८॥

करें प्रभु पद गमन जहाँ, स्वर्णकमल सुर रचें वहाँ।
अर्हद्भक्ति भाव पूजें, तीर्थंकर पदवी खोजें॥
ॐ ह्रीं श्री स्वर्णकमलरचनासहित-अर्हद्भक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ २९॥

फल फूलों से लदे हुए, सर्व धान्य हों पके हुए।
अर्हद्भक्ति भाव पूजें, तीर्थंकर पदवी खोजें॥
ॐ ह्रीं श्री सर्वधान्यसहित-अर्हद्भक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ ३०॥

प्रभु विहार हो जब मंगल, शरद काल सा नभ निर्मल।
अर्हद्भक्ति भाव पूजें, तीर्थंकर पदवी खोजें॥
ॐ ह्रीं श्री निर्मलआकाशसहित-अर्हद्भक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ ३१॥

नभ में जय-जय ध्वनि गूँजें, आओ! आओ! प्रभु पूजें।
अर्हद्भक्ति भाव पूजें, तीर्थंकर पदवी खोजें॥
ॐ ह्रीं श्री जयकारसहित-अर्हद्भक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ ३२॥

रवि किरणों सम उज्ज्वलता, धर्मचक्र आगे चलता।
अर्हद्भक्ति भाव पूजें, तीर्थंकर पदवी खोजें॥
ॐ ह्रीं श्री धर्मचक्रसहित-अर्हद्भक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ ३३॥

प्रभु विहार में जब चलते, अष्टद्रव्य आगे मिलते।
अर्हद्भक्ति भाव पूजें, तीर्थंकर पदवी खोजें॥
ॐ ह्रीं श्री अष्टद्रव्यसहित-अर्हद्भक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ ३४॥

आठों प्रातिहार्य की जय, अशोक तरु हो मंगलमय।
अर्हद्भक्ति भाव पूजें, तीर्थंकर पदवी खोजें॥
ॐ ह्रीं श्री अशोकतरुसहित-अर्हद्भक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ ३५॥

पुष्पवृष्टि हो ऊर्ध्वमुखी, प्रभु वाणी सम करे सुखी।
अर्हद्भक्ति भाव पूजें, तीर्थंकर पदवी खोजें॥
ॐ ह्रीं श्री पुष्पवृष्टिसहित-अर्हद्भक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ ३६॥

उज्ज्वल नीचे से ऊपर, चौंसठ चमर ढुरायें सुर।
अर्हद्भक्ति भाव पूजें, तीर्थंकर पदवी खोजें॥
ॐ ह्रीं श्री चतुःषष्टिचमरसहित-अर्हद्भक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ ३७॥

कोटि सूर्य सम जो चमके, भामण्डल में भव झलके।
अर्हद्भक्ति भाव पूजें, तीर्थंकर पदवी खोजें॥
ॐ ह्रीं श्री भामण्डलसहित-अर्हद्भक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ ३८॥

कोटि-कोटि जो वाद्य बजे, देवदुन्दुभि सजे बजे।
अर्हद्भक्ति भाव पूजें, तीर्थंकर पदवी खोजें॥
ॐ ह्रीं श्री देवदुन्दुभिसहित-अर्हद्भक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ ३९॥

जिनमें रत्नों की लढ़ियाँ, तीन छत्र सिर पर बढ़ियाँ।
अर्हद्भक्ति भाव पूजें, तीर्थंकर पदवी खोजें॥
ॐ ह्रीं श्री छत्रत्रयसहित-अर्हद्भक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ ४०॥

जो ओंकार रूप होती, दिव्यध्वनि शिव सुख बोती।
अर्हद्भक्ति भाव पूजें, तीर्थंकर पदवी खोजें॥
ॐ ह्रीं श्री दिव्यध्वनिसहित-अर्हद्भक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ ४१॥

रत्न जड़ित सिंहासन हो, जिस पर प्रभु कमलासन हो।
अर्हद्भक्ति भाव पूजें, तीर्थंकर पदवी खोजें॥
ॐ ह्रीं श्री सिंहासनसहित-अर्हद्भक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ ४२॥

दर्शन आवरणी कर क्षय, अनंतकेवलदर्शन जय।
अर्हद्भक्ति भाव पूजें, तीर्थंकर पदवी खोजें॥
ॐ ह्रीं श्री अनंतदर्शनसहित-अर्हद्भक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ ४३॥

ज्ञानावरणी नष्ट हुआ, अनंत केवलज्ञान हुआ।
अर्हद्भक्ति भाव पूजें, तीर्थंकर पदवी खोजें॥
ॐ ह्रीं श्री अनंतज्ञानसहित-अर्हद्भक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ ४४॥

कर्माश्रित सब सुख त्यागा, अनन्त सम्यक् सुख जागा।
अर्हद्भक्ति भाव पूजें, तीर्थंकर पदवी खोजें॥
ॐ ह्रीं श्री अनंतसुखसहित-अर्हद्भक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ ४५॥

संसारिक बल दूर हुए, आत्म वीर्य भरपूर हुए।
अर्हद्भक्ति भाव पूजें, तीर्थंकर पदवी खोजें॥
ॐ ह्रीं श्री अनंतवीर्यसहित-अर्हद्भक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ ४६॥

पूर्णार्घ्य (हरिगीतिका)

यदि द्रव्य गुण पर्याय से, अरिहंत पद को जो छुये।
तो मूलगुण छ्यालीस भज, तीर्थंकरों सम वो हुये॥
ये भाव अर्हद्भक्ति के कर, पद मिले तीर्थंकरा।
'सुव्रत' नमोऽस्तु कर चढ़ाएँ, अर्घ्य भावों से भरा॥
ॐ ह्रीं श्री अर्हद्भक्ति-भावनायै अनर्घपदप्राप्तये पूर्णार्घ्यं...।

जाप्य :— ॐ ह्रीं श्री अर्हद्भक्ति-भावनायै नमः।

जयमाला

(ज्ञानोदय)

जिनशासन में लक्ष्य स्वरूपी, शुद्ध अचल अनुपम गति हैं।
अर्हंतों से भी पूजित जो, पूज्य सिद्ध परमेष्ठी हैं॥
लोक शिखर पर सिद्धशिला के, ऊपर जिन का वास रहा।
अतः णमो सिद्धाणं पर तो, हम सबका विश्वास रहा॥१॥
लेकिन णमोकार में दूजे, क्रम पर क्यों प्रभु सिद्ध रहे।

अर्हंतों को पहले क्रम पर, रखकर पूजें शास्त्र कहे॥
इसका कारण ऐसा है कि, सिद्ध अमूर्तिक मौन रहें।
सो भव दुख से हमे बचाने, मोक्षमार्ग फिर कौन कहें॥२॥
अतः पूज्य होने पर उनसे, बात हमारी हो न सकें।
उनसे अपनी व्यथा-कथा कह, अपना आतम धो न सकें॥
पर अर्हंतों की सन्निधि में, चरण शरण हम पाकर के।
मोक्षमार्ग के साथ मोक्ष भी, पाते शीश झुकाकर के॥३॥
सो इतने उपकारी प्रभु को, सबने पहले पूजा है।
प्रथम णमो अरिहंताणं सो, णमोकार में गूँजा है॥
हों छ्यालीस मूलगुण वाले, समवसरण के ईश रहे।
पाँच तीन दो कल्याणक के, तीर्थंकर जगदीश रहे॥४॥
शतेन्द्र सुर परिवार सहित तो, दिव्य द्रव्य ले भजें जिन्हें।
चक्री चरणों के सेवक बन, भोग त्याग कर झुकें उन्हें॥
जिन अरिहंतों के वर्णन में, सरस्वती घुटने टेकें।
उनकी भक्ति करें क्या हम बस, करके नमोऽस्तु सिर टेकें॥५॥
फिर भी यथाशक्ति से जो जन, अंतरंग अनुराग रखें।
द्रव्य गुणी पर्याय समझकर, निश्चय व व्यवहार चखें॥
तीर्थंकरप्रकृति वो बाँधें, निज-पर का उद्धार करें।
सो विद्या के 'सुव्रतसागर' नमोऽस्तु बारम्बार करें॥६॥

(दोहा)

अर्हद्भक्ति भावना, दे सुख शांति अपार।
करे संतुलित भक्त को, दे मुक्ति का द्वार॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्भक्ति-भावनायै अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

अर्हद्भक्ति नित करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, अर्हद्भक्ति भाय॥

(पुष्पांजलिं...)

११. आचार्यभक्ति भावना-पूजन

स्थापना (शंभु)

जो नग्न दिगम्बर मुनि बनकर, छत्तीस मूलगुण धार रहे।
दे शिक्षा दीक्षा शिष्यों को, निज पर चेतन शृंगार रहे॥
ये आचार्यभक्ति भावनाएँ, प्रभु तीर्थंकर पद दान करें।
सो करके नमोऽस्तु हम पूजें, मन मंदिर में आह्वान करें॥

ॐ ह्रीं श्री आचार्यभक्ति भावना अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

ले दीक्षा जग ठुकराएँ, हम जीवन सफल बनाएँ।
जल चढ़ा कृपा जल पाएँ, आचार्य गुरु को मनाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री आचार्यभक्ति-भावनायै जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

है तेज धूप भव माया, पर गुरु हैं शीतल छाया।
वह चंदन सम हम पाएँ, आचार्य गुरु को मनाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री आचार्यभक्ति-भावनायै संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

यह जग है भूल-भुलैया, गुरु तारणतरण खिवैया।
सो अक्षय गुरु पद पाएँ, आचार्य गुरु को मनाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री आचार्यभक्ति-भावनायै अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

जग काम भोग का रागी, गुरु मूरत परम विरागी।
सो ब्रह्म पुष्प महकाएँ, आचार्य गुरु को मनाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री आचार्यभक्ति-भावनायै कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

सब छोड़े राज रसोड़े, निज रस चखने जो दौड़े।
नैवेद्य उन्हीं सम पाएँ, आचार्य गुरु को मनाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री आचार्यभक्ति-भावनायै क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

हो जहाँ-जहाँ गुरु ज्योति, हो वहाँ ज्ञान सुख मोती।
सो घी के दीप जलाएँ, आचार्य गुरु को मनाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री आचार्यभक्ति-भावनायै मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

यदि हमको कर्म नशाना, चैतन्य सिद्ध सुख पाना।
तो खेकर धूप चढ़ाएँ, आचार्य गुरु को मनाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री आचार्यभक्ति-भावनायै अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

हो जितनी उम्र हमारी, लग जाए गुरु को सारी।
फल यही भक्ति का पाएँ, आचार्य गुरु को मनाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री आचार्यभक्ति-भावनायै मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

है अर्घ्य अर्चना जो भी, शुभ पुण्य साधना वो भी।
गुरु चरणों आज चढ़ाएँ, आचार्य गुरु को मनाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री आचार्यभक्ति-भावनायै अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अर्घ्यावली (हाकलिका)

चउ विध भोजन त्याग करें, अनशन तप आचार्य करें।
हम आचार्यभक्ति करते, तीर्थंकर पदवी भजते॥

ॐ ह्रीं श्री अनशनतपसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ १॥

लें कम भोजन पेट भरें, ऊनोदर आचार्य करें।
हम आचार्यभक्ति करते, तीर्थंकर पदवी भजते॥

ॐ ह्रीं श्री ऊनोदरतपसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ २॥

वृत्तिपरिसंख्यान करें, विधि भोजन आचार्य करें।
हम आचार्यभक्ति करते, तीर्थंकर पदवी भजते॥

ॐ ह्रीं श्री वृत्तिपरिसंख्यानतपसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ ३॥

भोजन षट् रस त्याग करें, आचार्य रसपरित्याग करें।
हम आचार्यभक्ति करते, तीर्थंकर पदवी भजते॥

ॐ ह्रीं श्री रसपरित्यागतपसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ ४॥

निर्जन में निज ध्यान धरें, शैयासन आचार्य करें।
हम आचार्यभक्ति करते, तीर्थंकर पदवी भजते॥

ॐ ह्रीं श्री विविक्तशैयासनतपसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ ५॥

तप कर दुखमय काय करें, कायक्लेश आचार्य करें।
हम आचार्यभक्ति करते, तीर्थंकर पदवी भजते॥

ॐ ह्रीं श्री कायक्लेशतपसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ ६॥

निज पर के दुख दूर करें, प्रायश्चित्त आचार्य करें।
हम आचार्यभक्ति करते, तीर्थंकर पदवी भजते॥

ॐ ह्रीं श्री प्रायश्चित्ततपसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ ७॥

पूज्यों का सत्कार करें, विनय तपो आचार्य करें।
हम आचार्यभक्ति करते, तीर्थंकर पदवी भजते॥

ॐ ह्रीं श्री विनयतपसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ ८॥

निज पर के दुख दूर करें, वैयावृत्य आचार्य करें।
हम आचार्यभक्ति करते, तीर्थंकर पदवी भजते॥
ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्यतपसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ ९॥

पाँच तरह अध्याय पढें, स्वाध्याय आचार्य करें।
हम आचार्यभक्ति करते, तीर्थंकर पदवी भजते॥
ॐ ह्रीं श्री स्वाध्यायतपसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ १०॥

तन मूर्च्छा का त्याग करें, व्युत्सर्ग आचार्य करें।
हम आचार्यभक्ति करते, तीर्थंकर पदवी भजते॥
ॐ ह्रीं श्री व्युत्सर्गतपसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ ११॥

श्रुत तत्त्वों में ध्यान धरें, ध्यान तपो आचार्य करें।
हम आचार्यभक्ति करते, तीर्थंकर पदवी भजते॥
ॐ ह्रीं श्री ध्यानतपसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ १२॥

क्रोध त्याग उपसर्ग हरें, क्षमाधर्म आचार्य धरें।
हम आचार्यभक्ति करते, तीर्थंकर पदवी भजते॥
ॐ ह्रीं श्री क्षमाधर्मसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ १३॥

सभी मान मद त्याग करें, मार्दव गुण आचार्य धरें।
हम आचार्यभक्ति करते, तीर्थंकर पदवी भजते॥
ॐ ह्रीं श्री मार्दवधर्मसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ १४॥

छल कपटों का त्याग करें, आर्जव गुण आचार्य धरें।
हम आचार्यभक्ति करते, तीर्थंकर पदवी भजते॥
ॐ ह्रीं श्री आर्जवधर्मसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ १५॥

लोभ पाप का त्याग करें, शौच धर्म आचार्य धरें।
हम आचार्यभक्ति करते, तीर्थंकर पदवी भजते॥
ॐ ह्रीं श्री शौचधर्मसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ १६॥

असत्य वाणी त्याग करें, सत्य धर्म आचार्य धरें।
हम आचार्यभक्ति करते, तीर्थंकर पदवी भजते॥
ॐ ह्रीं श्री सत्यधर्मसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ १७॥

इंद्री प्राणी पाप हरें, व्रत संयम आचार्य धरें।
हम आचार्यभक्ति करते, तीर्थंकर पदवी भजते॥
ॐ ह्रीं श्री संयमधर्मसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ १८॥

इच्छा पूर्ण निरोध करें, उत्तम तप आचार्य धरें।
हम आचार्यभक्ति करते, तीर्थंकर पदवी भजते॥
ॐ ह्रीं श्री तपधर्मसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ १९॥

त्यागी उत्तम दान करें, त्याग धर्म आचार्य धरें।
हम आचार्यभक्ति करते, तीर्थंकर पदवी भजते॥
ॐ ह्रीं श्री त्यागधर्मसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ २०॥

लेश मात्र ना राग करें, आकिंचन आचार्य धरें।
हम आचार्यभक्ति करते, तीर्थंकर पदवी भजते॥
ॐ ह्रीं श्री आकिंचन्यधर्मसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ २१॥

निज रमणी में रमण करें, ब्रह्मचर्य आचार्य धरें।
हम आचार्यभक्ति करते, तीर्थंकर पदवी भजते॥
ॐ ह्रीं श्री ब्रह्मचर्यधर्मसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ २२॥

शुद्ध दर्शनाचार धरें, मिथ्या मत आचार्य हरें।
हम आचार्यभक्ति करते, तीर्थंकर पदवी भजते॥
ॐ ह्रीं श्री दर्शनाचारसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ २३॥

सम्यक् ज्ञानाचार धरें, मिथ्या श्रुत आचार्य हरें।
हम आचार्यभक्ति करते, तीर्थंकर पदवी भजते॥
ॐ ह्रीं श्री ज्ञानाचारसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ २४॥

शुभ चारित्राचार धरें, मिथ्या पथ आचार्य हरें।
हम आचार्यभक्ति करते, तीर्थंकर पदवी भजते॥
ॐ ह्रीं श्री चारित्राचारसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ २५॥

तपाचार निर्दोष धरें, कुतप मार्ग आचार्य हरें।
हम आचार्यभक्ति करते, तीर्थंकर पदवी भजते॥
ॐ ह्रीं श्री तपाचारसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ २६॥

मंगल वीर्याचार धरें, परिषह दुख आचार्य हरें।
हम आचार्यभक्ति करते, तीर्थंकर पदवी भजते॥
ॐ ह्रीं श्री वीर्याचारसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ २७॥

सुख-दुख में समभाव धरें, सामायिक आचार्य करें।
हम आचार्यभक्ति करते, तीर्थंकर पदवी भजते॥
ॐ ह्रीं श्री सामायिकसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ २८॥

इक प्रभु के गुणगान करें, वंदन गुण आचार्य करें।
हम आचार्यभक्ति करते, तीर्थंकर पदवी भजते॥
ॐ ह्रीं श्री वंदनासहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ २९॥

चौबीसी गुणगान करें, स्तवन आचार्य धरें।
हम आचार्यभक्ति करते, तीर्थंकर पदवी भजते॥
ॐ ह्रीं श्री स्तवनसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ ३०॥

भूतकाल के दोष हरें, प्रतिक्रमण आचार्य करें।
हम आचार्यभक्ति करते, तीर्थंकर पदवी भजते॥
ॐ ह्रीं श्री प्रतिक्रमणसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ ३१॥

आगामी हर दोष हरें, प्रत्याख्यान आचार्य करें।
हम आचार्यभक्ति करते, तीर्थंकर पदवी भजते॥
ॐ ह्रीं श्री प्रत्याख्यानसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ ३२॥

देह-मोह तज ध्यान धरें, कायोत्सर्ग आचार्य करें।
हम आचार्यभक्ति करते, तीर्थंकर पदवी भजते॥
ॐ ह्रीं श्री कायोत्सर्गसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ ३३॥

मन के विकल्प त्याग करें, मनोगुप्ति आचार्य धरें।
हम आचार्यभक्ति करते, तीर्थंकर पदवी भजते॥
ॐ ह्रीं श्री मनोगुप्तिसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ ३४॥

वचन कथन तज मौन धरें, वचनगुप्ति आचार्य धरें।
हम आचार्यभक्ति करते, तीर्थंकर पदवी भजते॥
ॐ ह्रीं श्री वचनगुप्तिसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ ३५॥

तन के सब व्यापार हरें, कायगुप्ति आचार्य धरें।
हम आचार्यभक्ति करते, तीर्थंकर पदवी भजते॥
ॐ ह्रीं श्री कायगुप्तिसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ ३६॥

पूर्णार्घ्य (हरिगीतिका)

आचार्य गुरु छत्तीस गुणधर, जा रहे भव पार हैं।
गुरु भक्ति कर हम भक्तजन के, हो रहे उद्धार हैं॥
आचार्यभक्ति भावना भा, पद मिले तीर्थंकरा।
'सुव्रत' नमोऽस्तु कर चढ़ाएँ, अर्घ्य भावों से भरा॥
ॐ ह्रीं श्री आचार्यभक्ति-भावनायै अनर्घपदप्राप्तये पूर्णार्घ्यं...।

जाप्य :— ॐ ह्रीं श्री आचार्यभक्ति-भावनायै नमः।

जयमाला (ज्ञानोदय)

हमको पंचमकाल मिला तो, प्रभु अरिहंत न मिल पाए।
लेकिन अरिहंतों के अनुचर, गुरु आचार्य साधु पाए॥
आचार्यों के चरण शरण में, मोक्षमार्ग के चिन्ह रहे।
चलते फिरते तीर्थों को भज, हम सब भक्त प्रसन्न रहे॥१॥
गुरु आचार्य वीरशासन को, जब से अब तक चला रहे।
समवसरण सा संघ सजाकर, तत्त्व देशना सुना रहे॥
जिससे हम जैसे जीवों ने, समझे धर्म जिनेश्वर हैं।
मिथ्या व्यसन पाप तजने को, मिले सुनहरे अवसर हैं॥२॥
जिनको धर्म कठिन लगता था, उन्हें सुलभ आचार्य करें।
मोक्षमार्ग की रुचि वालों को, दीक्षा दे उद्धार करें॥
और करें क्या अधिक प्रशंसा, भक्तों के भगवान गुरु।
बने धर्म पर्याय आज हैं, अपने तो हैं प्राण गुरु॥३॥
समवसरण में जब गुरु शोभें, तब तो प्रभु अरिहंत लगें।
ध्यान समय में सिद्धों जैसे, शासक गुरु आचार्य लगें॥
व्रत संयम का पालन करके, साधु स्वरूप झलकता है।
सो आचार्यों की पूजा को, अपना हृदय मचलता है॥४॥
परम पूज्य आचार्य गुरु से, यही प्रार्थना हम करते।
गुरुओं का सान्निध्य रहे बस, यही कामना हम करते॥
गुरुओं से जो लिए नियम व्रत, वे व्रत सु-व्रत कर पालें।
'विद्या' के 'सुव्रतसागर' सम, आचार्यों के गुण गा लें॥५॥

(दोहा)

आचार्यों की भक्ति कर, ऐसे भाव बनाएँ।
तीर्थंकर पद प्राप्त कर, शीघ्र मुक्त हो जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री आचार्यभक्ति-भावनायै अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

आचार्यभक्ति नित करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, आचार्यभक्ति भाय॥

(पुष्पांजलिं...)

१२. बहुश्रुतभक्ति भावना-पूजन

स्थापना (शंभु)

जो द्वादशांग को पार किए, श्रुत शिष्यों के दे पढ़ा रहे।
उन बहुश्रुत गुरु की भक्ति करें, अज्ञान अंध जो नशा रहे॥
ये बहुश्रुतभक्ति भावनाएँ, प्रभु तीर्थंकर पद दान करें।
सो करके नमोऽस्तु हम पूजें, मन मंदिर में आह्वान करें॥

ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुतभक्ति भावना अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(विद्योदय)

जन्म मरण दुख के सागर से, भव्य डरें जो।
द्वादशांग की नाव उन्हें दे, सुखी करें वो॥
बहुश्रुत गुरु को नीर चढ़कर, नमोऽस्तु गूँजें।
बहुश्रुतभक्ति भावना भा, तीर्थंकर पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुतभक्ति-भावनायै जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

भव ज्वाला से चाह रहे जो, निज की रक्षा।
द्वादशांग की शीतल छाया, करे प्रतीक्षा॥
बहुश्रुत गुरु को चंदन से भज, नमोऽस्तु गूँजें।
बहुश्रुतभक्ति भावना भा, तीर्थंकर पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुतभक्ति-भावनायै संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

भव वन में जो भटक-भटक के, हार चुके हैं।
द्वादशांग के महल उन्हीं के, लिए खुले हैं॥
बहुश्रुत गुरु को पुंज चढ़ाकर, नमोऽस्तु गूँजें।
बहुश्रुतभक्ति भावना भा, तीर्थंकर पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुतभक्ति-भावनायै अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

काम भोग के तिड्डी दल को, अगर भगाना।
द्वादशांग के ब्रह्म बाग को, अगर बचाना॥
बहुश्रुत गुरु को पुष्प चढ़ाकर, नमोऽस्तु गूँजें।
बहुतश्रुत भक्ति भावना भा, तीर्थंकर पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुतभक्ति-भावनायै कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

जड़ भोजन के सत्य समझकर, जो घबराएँ।
द्वादशांग के भोग मनोहर, उन्हें लुभाएँ ॥
बहुश्रुत को नैवेद्य चढ़ाकर, नमोऽस्तु गूँजें।
बहुश्रुतभक्ति भावना भा, तीर्थंकर पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुतभक्ति-भावनायै क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

जिन्हें मोह अज्ञान अंध से, बाहर आना।
द्वादशांग के जगमग दीपक, उन्हें जलाना॥
बहुश्रुत गुरु को दीप जलाकर, नमोऽस्तु गूँजें।
बहुश्रुतभक्ति भावना भा, तीर्थंकर पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुतभक्ति-भावनायै मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

जो डरते हैं कर्म शत्रु की, सुन ललकारें।
द्वादशांग की सेनाओं को, वे स्वीकारें॥
बहुश्रुत गुरु को धूप चढ़ाकर, नमोऽस्तु गूँजें।
बहुश्रुतभक्ति भावना भा, तीर्थंकर पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुतभक्ति-भावनायै अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

विषय कषायों के दुख रस अब, जिन्हें न भाएँ।
द्वादशांग के सुखदायक फल, वे चख जाएँ॥
बहुश्रुत गुरु को फल अर्पित कर, नमोऽस्तु गूँजें।
बहुश्रुतभक्ति भावना भा, तीर्थंकर पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुतभक्ति-भावनायै मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

बने कूपमंडूक जगत में, मिली निम्नता।
द्वादशांग का विस्तृत नभ दे, हमें उच्चता॥
बहुश्रुत गुरु को अर्घ्य चढ़ाकर, नमोऽस्तु गूँजें।
बहुश्रुतभक्ति भावना भा, तीर्थंकर पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुतभक्ति-भावनायै अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अर्घ्यावली (दोहा)

पहला आचारांग दे, मुनि श्रावक आचार।
बहुश्रुतभक्ति भाव को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्री आचारांगसहित-बहुश्रुतभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ १॥

दूजा सूत्रकृतांग दे, धर्म क्रिया व्यवहार।
बहुश्रुतभक्ति भाव को, नमोऽस्तु बारम्बार।
ॐ ह्रीं श्री सूत्रकृतांगसहित-बहुश्रुतभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ २॥

तीजा स्थानांग जो, कहे जीव घर वार।
बहुश्रुतभक्ति भाव को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं श्री स्थानांगसहित-बहुश्रुतभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ ३॥

चौथा समवायांग जो, सम ही सभी विचार।
बहुश्रुतभक्ति भाव को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं श्री समवायांगसहित-बहुश्रुतभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ ४॥

व्याख्याप्रज्ञप्ति कहे, अस्ति नास्ति चितधार।
बहुतश्रुत भक्ति भाव को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं श्री व्याख्याप्रज्ञप्तिअंगसहित-बहुश्रुतभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ ५॥

ज्ञातृकथा का अंग दे, पुरुष शलाका का सार
बहुश्रुतभक्ति भाव को, नमोऽस्तु बारम्बार।
ॐ ह्रीं श्री ज्ञातृकथांगसहित-बहुश्रुतभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ ६॥

उपासकाध्यायानांग दे, गृहि प्रतिमा संस्कार।
बहुश्रुतभक्तिभाव को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं श्री उपासकाध्यायानांगसहित-बहुश्रुतभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ ७॥

अष्टम अंतकृतांग दे, दसों अंतकृत तार।
बहुश्रुतभक्तिभाव को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं श्री अंतकृतांगसहित-बहुश्रुतभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ ८॥

अनुत्तरदशांग में मुनि, दस-दस स्वर्ग सिधार।
बहुश्रुतभक्ति भाव को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं श्री अनुत्तरदशांगसहित-बहुश्रुतभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ ९॥

अंग प्रश्नव्याकरण दे, निमित्त ज्ञान विस्तार।
बहुश्रुतभक्तिभाव को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं श्री प्रश्नव्याकरणांगसहित-बहुश्रुतभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ १०॥

जो विपाकसूत्रांग दे, सभी कर्म फलभार।
बहुश्रुतभक्तिभाव को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं श्री विपाकसूत्रांगसहित-बहुश्रुतभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ ११॥

जन्म ध्रौव्य व्यय वस्तु के, कहे पूर्व उत्पाद।
बहुश्रुतभक्तिभाव को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं श्री उत्पादपूर्वसहित-बहुश्रुतभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ १२॥

कहे पूर्व अग्रायणी, नय दुर्नय भावार्थ।
बहुश्रुतभक्तिभाव को, नमस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं श्री अग्रायणीपूर्वसहित-बहुश्रुतभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ १३॥

वीर्यानुवाद पूर्व जो, कहे वीर्य उपकार।
बहुश्रुतभक्तिभाव को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं श्री वीर्यानुवादपूर्वसहित-बहुश्रुतभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ १४॥

अस्तिनास्ति यह पूर्व दे, अस्तिनास्ति संसार।
बहुश्रुतभक्तिभाव को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं श्री अस्तिनास्तिपूर्वसहित-बहुश्रुतभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ १५॥

ज्ञानप्रवाद पूर्व कहे, सकल ज्ञान भण्डार।
बहुश्रुतभक्तिभाव को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं श्री ज्ञानप्रवादपूर्वसहित-बहुश्रुतभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ १६॥

सत्यप्रवाद पूर्व कहे, गुप्ति समिति सत्कार।
बहुश्रुतभक्तिभाव को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं श्री सत्यप्रवादपूर्वसहित-बहुश्रुतभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ १७॥

आत्मप्रवाद पूर्व कहे, नय निश्चय व्यवहार।
बहुश्रुतभक्तिभाव को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं श्री आत्मप्रवादपूर्वसहित-बहुश्रुतभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ १८॥

कर्मप्रवाद पूर्व कहे, कर्मों का विस्तार।
बहुश्रुतभक्तिभाव को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं श्री कर्मप्रवादपूर्वसहित-बहुश्रुतभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ १९॥

प्रत्याख्यान पूर्व कहे, किस विध अघ परिहार।
बहुश्रुतभक्तिभाव को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं श्री प्रत्याख्यानपूर्वसहित-बहुश्रुतभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ २०॥

विद्यानुवाद पूर्व दे, विद्यामंत्र प्रसाद।
बहुश्रुतभक्ति भाव को, नमोऽस्तु बराबर॥
ॐ ह्रीं श्री विद्यानुवादपूर्वसहित-बहुश्रुतभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ २१॥

कल्याणवाद पूर्व दे, जिनकल्याण प्रचार।
बहुश्रत भक्ति भाव को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं श्री कल्याणवादपूर्वसहित-बहुश्रुतभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ २२॥

प्रणानुवाद पूर्व दे, तंत्र-कुमंत्र निवार।
बहुश्रुतभक्तिभाव को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं श्री प्राणानुवादपूर्वसहित-बहुश्रुतभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ २३॥

क्रियाविशाल पूर्व कहे, चौंसठ कलाधिकर।
बहुश्रुतभक्तिभाव को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं श्री क्रियाविशालपूर्वसहित-बहुश्रुतभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ २४॥

त्रिलोकबिंदु पूर्व कहे, लोक मोक्ष सरकार।
बहुतश्रुत भक्तिभाव को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं श्री त्रिलोकबिंदुपूर्वसहित-बहुश्रुतभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ २५॥

पूर्णार्घ्य (हरिगीतिका)

श्रुत पारगामी बन हरें अज्ञान दुख की आंधियाँ।
ऐसे गुरु की अर्चना कर, दूर हों भव व्याधियाँ॥
कर भक्ति बहुश्रुत भावना से, पद मिले तीर्थंकरा।
'सुव्रत' नमोऽस्तु कर चढ़ाएँ, अर्घ्य भावों से भरा॥
ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुतभक्ति-भावनायै अनर्घपदप्राप्तये पूर्णार्घ्यं...।

जाप्य :— ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुतभक्ति-भावनायै नमः।

जयमाला

(ज्ञानोदय)

यूँ तो भव्य अभव्य जीव सब, चेतन गुण के स्वामी हैं।
अतः अनंत शक्तियाँ धारें, सो सब केवलज्ञानी हैं॥
पर अभिव्यक्ति कर ना सकें जो, वो जग के अज्ञानी हैं।
और यही अज्ञान दशा ही, अपनी दुखद कहानी हैं॥१॥
अगर हमें अज्ञान दुखों से, बचकर ज्ञानी बनना है।
तो फिर ज्ञानी मुनि गुरुओं की, भक्ति अर्चना करना है॥
जग में यही प्रसिद्ध वचन कि, जिस पर जो हो वो देगा।
अज्ञानी अज्ञान दान दे, ज्ञानी ज्ञान हमें देगा॥२॥

सो ज्ञानी बनने का पहला, यही मंगलाचरण रहा।
सम्यक् विद्या गुरु से पाना, समीचीन आचरण रहा॥
चरण दूसरा निज प्रज्ञा से, हमें ज्ञान अर्जित करना।
चरण तीसरा ज्ञानी जन की, सेवा में रत नित रहना॥३॥
कुछ कुछ ज्ञान समय से होता, चौथा चरण यही समझो।
पर जो ज्ञान क्रिया बिन होता, उसको पाने ना उलझो॥
मूल बात की बात यही है, ज्ञानी मुनि की कर सेवा।
द्वादशांग का ज्ञान प्राप्त कर, बन जाओगे श्रुत देवा॥४॥
सो अज्ञान दुखों से हमको, छुटकारा मिल जाएगा।
भव सागर का हमें किनारा, गुरु पद से दिख जाएगा॥
सो बहुश्रुत की सेवा करके, शुभ सौभाग्य जगा लेंगे।
'विद्या' के मुनि 'सुव्रतसागर', दुख अज्ञान मिटा लेंगे॥५॥

(दोहा)

बहुश्रुतभक्ति भावना, हरती दुख अज्ञान।
इसके धारक बन रहे, तीर्थंकर भगवान॥

ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुतभक्ति-भावनायै अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

बहुश्रुतभक्ति नित करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, बहुश्रुतभक्ति भाय॥

(पुष्पांजलिं...)

१३. प्रवचनभक्ति भावना-पूजन

स्थापना (शंभु)

प्रभु दिव्य देशना सुनकर के, गणधर देवों ने ग्रंथ रचे।
कुछ काल दोष से नष्ट हुए, पर भक्त भजें जो शेष बचे॥
ये प्रवचनभक्ति भावनाएँ, प्रभु तीर्थंकर पद दान करें।
सो करके नमोऽस्तु हम पूजें, मन मंदिर में आह्वान करें॥

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनभक्ति भावना अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(जोगीरासा)

भले जिनागम जड़ है लेकिन, आतम को उपकारी।
मिथ्यामल को धोकर हरते, जन्म मरण दुख भारी॥
सो हम ही सम्यक् सुख पाने, प्रासुक नीर चढ़ाएँ।
प्रवचनभक्ति भावना भा कर, तीर्थंकर को ध्याएँ॥

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनभक्ति-भावनायै जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

दिव्य देशना सुनी ना लेकिन, मिली जिनागम छाया।
इस आश्रय को पाकर आतम, कभी झुलस ना पाया॥
सो हम भी शीतलता पाने, चंदन आज चढ़ाएँ।
प्रवचनभक्ति भावना भा कर, तीर्थंकर को ध्याएँ॥

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनभक्ति-भावनायै संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

शास्त्रों के स्वाध्याय बिना तो, सम्यक मार्ग न सूझें।
अर्हंतों के वियोग में घर, अपना किससे बूझें॥
सो हम भी अक्षय घर पाने, अक्षय पुंज चढ़ाएँ।
प्रवचनभक्ति भावना भा कर, तीर्थंकर को ध्याएँ॥

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनभक्ति-भावनायै अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अपना शील सुरक्षित कैसे, नर-नारी रख पाएँ।
कथा कहानी ऐसी पढ़कर, सुनकर दृढ़ता आएँ॥
सो हम भी संयम दृढ़ करने, प्रभु को पुष्प चढ़ाएँ।
प्रवचनभक्ति भावना भा कर, तीर्थंकर को ध्याएँ॥

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनभक्ति-भावनायै कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

क्षुधा तृषा की बाधाओं से, पीड़ित दुनियाँ सारी।
शास्त्रों का समता भोजन कर, सुखमय भक्त पुजारी॥
सो हम भी संतोष धारने, शुभ नैवेद्य चढ़ाएँ।
प्रवचनभक्ति भावना भा कर, तीर्थंकर को ध्याएँ॥

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनभक्ति-भावनायै क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

शास्त्र पुराणों की आँखों से, निज का वैभव झलके।
वर्ना जड़ वैभव में फँसकर, मोह अंध दुख छलके॥

सो हम भी यह मोह मिटाने, जगमग दीप जलाएँ।
प्रवचनभक्ति भावना भा कर, तीर्थंकर को ध्याएँ॥

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनभक्ति-भावनायै मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

कर्मों के सब खेल जगत में, क्या समझें अज्ञानी।
यदि शास्त्रोक्त क्रिया करते तो, कटती कर्म कहानी॥
सो हम भी जड़ कर्म काटने, प्रासुक धूप चढ़ाएँ।
प्रवचनभक्ति भावना भा कर, तीर्थंकर को ध्याएँ॥

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनभक्ति-भावनायै अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

अपने अपने कर्मों के फल, दुनियाँ भोग रही है।
पर खुद को निर्दोष समझकर, सबको कोस रही है॥
सो हम मोक्ष महल को पाने, फल को आज चढ़ाएँ।
प्रवचनभक्ति भावना भा कर, तीर्थंकर को ध्याएँ॥

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनभक्ति-भावनायै मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

नयनों में हो सम्यग्दर्शन, मुख में सम्यक वाणी।
तन सम्यक्चारित्र सम्हाले, रत्नत्रय कल्याणी॥
सो हम भी व्रत दीक्षा पाने, सादर अर्घ्य चढाएँ।
प्रवचनभक्ति भावना भा कर, तीर्थंकर को ध्याएँ॥

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनभक्ति-भावनायै अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अर्घावली (चौपाई)

द्वादशांग में ग्यारह अंग, देकर ज्ञान करें दुख भंग।
ऐसी प्रवचनभक्ति महान, हम पूजें कर लें कल्याण॥

ॐ ह्रीं श्री एकादशांगसहित-प्रवचनभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ १॥

बारहवा जो होता अंग, चौदह पूर्व उसी के भंग।
ऐसी प्रवचनभक्ति महान, हम पूजें कर लें कल्याण॥

ॐ ह्रीं श्री चौदहपूर्वसहित-प्रवचनभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ २॥

अंग प्रकीर्णक चौदह भेद, दूर करें संशय दुख खेद।
ऐसी प्रवचनभक्ति महान, हम पूजें कर लें कल्याण॥

ॐ ह्रीं श्री प्रकीर्णकांगसहित-प्रवचनभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ ३॥

सुख दुख में धर कर संतोष, सामायिक हरले सब दोष।
ऐसी प्रवचनभक्ति महान, हम पूजें कर लें कल्याण॥

ॐ ह्रीं श्री सामायिकसहित-प्रवचनभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ ४॥

भजकर तीर्थंकर चौबीस, मिले स्तवन से आशीष।
ऐसी प्रवचनभक्ति महान, हम पूजें कर लें कल्याण॥
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतिस्तवनसहित-प्रवचनभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ ५॥

भजें एक तीर्थंकर खास, करें वंदना प्रभु के दास।
ऐसी प्रवचनभक्ति महान, हम पूजें कर लें कल्याण॥
ॐ ह्रीं श्री वंदनासहित-प्रवचनभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ ६॥

लगे व्रतों में जब तब दोष, प्रतिक्रमण कर हों निर्दोष।
ऐसी प्रवचनभक्ति महान, हम पूजें कर लें कल्याण॥
ॐ ह्रीं श्री प्रतिक्रमणसहित-प्रवचनभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ ७॥

देव-शास्त्र-गुरु का सत्कार, करें वैनयिक शुद्ध विचार।
ऐसी प्रवचनभक्ति महान, हम पूजें कर लें कल्याण॥
ॐ ह्रीं श्री वैनयिकसहित-प्रवचनभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ ८॥

सबसे बड़ा यही है धर्म, करें समय से निज कृतिकर्म।
ऐसी प्रवचनभक्ति महान, हम पूजें कर लें कल्याण॥
ॐ ह्रीं श्री कृतिकर्मसहित-प्रवचनभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ ९॥

किस विध हो मुनि का आचार, दस वैकालिक दे यह द्वार।
ऐसी प्रवचनभक्ति महान, हम पूजें कर लें कल्याण॥
ॐ ह्रीं श्री दसवैकालिकसहित-प्रवचनभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ १०॥

क्या फल दे परिषह उपसर्ग, उत्तराध्ययन कह दे सर्व।
ऐसी प्रवचनभक्ति महान, हम पूजें कर लें कल्याण॥
ॐ ह्रीं श्री उत्तराध्ययनसहित-प्रवचनभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ ११॥

मुनिचर्या दोषी हो जाए, दण्ड कल्प व्यवहार बताए।
ऐसी प्रवचनभक्ति महान, हम पूजें कर लें कल्याण॥
ॐ ह्रीं श्री कल्पव्यवहारसहित-प्रवचनभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ १२॥

देख द्रव्य कालादिक भाव, करें क्रिया मुनि सहज स्वभाव।
ऐसी प्रवचनभक्ति महान, हम पूजें कर लें कल्याण॥
ॐ ह्रीं श्री कालादिभावसहित-प्रवचनभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ १३॥

जिन स्थिरकल्पी नर काम, महाकल्प दे इसका ज्ञान।
ऐसी प्रवचनभक्ति महान, हम पूजें कर लें कल्याण॥
ॐ ह्रीं श्री महाकल्पसहित-प्रवचनभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ १४॥

देव चतुर्विध के सब ज्ञान, पुण्डरीक देता धर ध्यान।
ऐसी प्रवचनभक्ति महान, हम पूजें कर लें कल्याण॥
ॐ ह्रीं श्री पुण्डरीकसहित-प्रवचनभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ १५॥

क्या अहमिन्द्र इंद्र का रूप, कहें महापुण्डरीक स्वरूप।
ऐसी प्रवचनभक्ति महान, हम पूजें कर लें कल्याण॥
ॐ ह्रीं श्री महापुण्डरीकसहित-प्रवचनभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ १६॥

प्रमाद से हों निद्रा पाप, निषद्यका दे बचने जाप।
ऐसी प्रवचनभक्ति महान, हम पूजें कर लें कल्याण॥
ॐ ह्रीं श्री निषद्यकांगबाह्यसहित-प्रवचनभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ १७॥

प्रथमानुयोग ग्रंथ सम्राट, पुरुष शलाका का दे पाठ।
ऐसी प्रवचनभक्ति महान, हम पूजें कर लें कल्याण॥
ॐ ह्रीं श्री प्रथमानुयोगसहित-प्रवचनभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ १८॥

करणानुयोग से समझ विचार, तजें शुभाशुभ शुद्ध संवार।
ऐसी प्रवचनभक्ति महान, हम पूजें कर लें कल्याण॥
ॐ ह्रीं श्री करणानुयोगसहित-प्रवचनभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ १९॥

चरणानुयोग है सबका मित्र, पढ़कर करें शुद्ध चारित्र।
ऐसी प्रवचनभक्ति महान, हम पूजें कर लें कल्याण॥
ॐ ह्रीं श्री चरणानुयोगसहित-प्रवचनभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ २०॥

द्रव्यानुयोग के सुन सिद्धांत, ज्ञान ध्यान सीखे अध्यात्म।
ऐसी प्रवचनभक्ति महान, हम पूजें कर लें कल्याण॥
ॐ ह्रीं श्री द्रव्यानुयोगसहित-प्रवचनभक्ति-भावनायै अर्घ्यं...॥ २१॥

पूर्णार्घ्य

(हरिगीतिका)

श्रुत द्वादशांगी रूप के जो, शास्त्र आगम ग्रंथ हों।
श्रुत भक्ति कर अज्ञान हर, अरिहंत सिद्ध महंत हों॥
ये भक्ति प्रवचन भावना से, पद मिले तीर्थंकरा।
'सुव्रत' नमोऽस्तु कर चढ़ाएँ, अर्घ्य भावों से भरा॥
ॐ ह्रीं श्री प्रवचनभक्ति-भावनायै अनर्घपदप्राप्तये पूर्णार्घ्यं...।

जाप्य :— ॐ ह्रीं श्री प्रवचनभक्ति-भावनायै नमः।

जयमाला

(ज्ञानोदय)

हर पर वस्तु क्या दुख देगी, ये एकांत ना समझो रे।
हर निज वस्तु क्या सुख देगी, ये सिद्धांत भी समझो रे॥
जैसे घाव रोग बीमारी, ये अपने हों दुख देते।
लेकिन औषध मल्हम दवाई, पर होकर भी सुख देते॥१॥
सो पर साधन का प्रभाव तो, निश्चित हम पर पड़ता है।
निमित्त का भी उपादान पर, प्रभाव पड़ता दिखता है॥
अतः अगर निमित्त शुभ हो तो, उपादान शुभ हो सकता।
किंतु अशुभ हो तो फिर कैसे, उपादान शुभ हो सकता॥२॥
यह सिद्धांत समझने आगम, शास्त्रों का अध्ययन करना।
सम्यक ज्ञान आठ अंगों मय, करके भक्ति विनय करना॥
जिससे अपना सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान शुद्ध होगा।
और सुनो इस शास्त्र भक्ति से, पद तीर्थेश बद्ध होगा॥३॥
सो यह प्रवचनभक्ति भावना, दुख दरिद्र मिटा देगी।
हमें बना देगी तीर्थंकर, जल्दी मुक्ति दिला देगी॥
केवलज्ञान मिले बस इतना, शास्त्रों को सविनय पढ़ लें।
'विद्या' के 'सुव्रत' प्रवचन की, करके भक्ति विजय कर लें॥४॥

(दोहा)

प्रवचनभक्ति भावना, शास्त्रों के भण्डार।
हरें मान अज्ञान सो, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनभक्ति-भावनायै अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

प्रवचनभक्ति नित करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, प्रवचनभक्ति भाय॥

(पुष्पांजलिं...)

१४. आवश्यकापरिहाणि भावना—पूजन

स्थापना (शंभु)

निज षट्–आवश्यक क्रियायें, जो यथा समय पर शुद्ध करें।
वे तीर्थंकर प्रकृति बाँधे, दुख पाप हरें निज शुद्ध करें॥
ये ही आवश्यकापरिहाणि, प्रभु तीर्थंकर पद दान करें।
सो करके नमोऽस्तु हम पूजें, मन मंदिर में आह्वान करें॥

ॐ ह्रीं श्री आवश्यकापरिहाणि भावना अत्र अवतर–अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(विष्णु)

यह जल केवल कुछ पल अपनी, प्यास बुझा सकता।
लेकिन जनम मरण की धारा, ये न मिटा सकता॥
अतः चढ़ाकर ये प्रासुक जल, तृप्ति खोज रहे।
आवश्यकापरिहाणि भावना, हम भी पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री आवश्यकापरिहाणि–भावनायै जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

शीतल चंदन शीतलता बस, कुछ क्षण दे पाते।
लेकिन भव संताप मिटाने, काम न ये आते॥
अतः चढ़ाकर शीतल चंदन, प्रभु पद खोज रहे।
आवश्यकापरिहाणि भावना, हम भी पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री आवश्यकापरिहाणि–भावनायै संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

इंद्रों का भण्डार सागरों तक, तो चल सकता।
लेकिन उससे निज निधि का कुछ, पता न मिल सकता॥
अतः चढ़ाकर अक्षत हम भी, निज निधि खोज रहे।
आवश्यकापरिहाणि भावना, हम भी पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री आवश्यकापरिहाणि–भावनायै अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

निज पुरुषत्व गँवाकर हमको, लगता पुष्प खिलें।
लेकिन यह भ्रम जाल स्वयं बुन, निज को स्वयं छलें॥
अतः चढ़ाकर पुष्प ब्रह्म सुख, हम भी खोज रहे।
आवश्यकापरिहाणि भावना, हम भी पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री आवश्यकापरिहाणि–भावनायै कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

क्षुधा रोग जड़ पकवानों से, शांत हुआ लगता।

सो इनकी आपूर्ति करने, निज को निज ठगता॥
अतः चढ़ा नैवेद्य चरण में, निज रस खोज रहे।
अवश्यकापरिहाणि भावना, हम भी पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री आवश्यकापरिहाणि-भावनायै क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

दीप उजाले कर के लगता, अंध समाप्त हुआ।
लेकिन कुछ पल बाद देख लो, उठता मोह धुआँ॥
अतः जलाकर दीप आरती, आतम खोज रहे।
आवश्यकापरिहाणि भावना, हम भी पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री आवश्यकापरिहाणि-भावनायै मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

यदि कर्मों से सुख होता तो, जगत सुखी होता।
फिर क्यों भाग्य कोसते अपना, क्यों यह जग रोता॥
अतः चढ़ाकर धूप सिद्ध पद, अपना खोज रहे।
अवश्यकापरिहाणि भावना, हम भी पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री आवश्यकापरिहाणि-भावनायै अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

बड़े मनोहर फल लगते जो, सुख भी कुछ पल दें।
सडने गलने वाले कैसे, महा मोक्ष फल दें॥
अतः चढ़ाकर प्रभु चरणों में, शिवफल खोज रहे।
अवश्यकापरिहाणि भावना, हम भी पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री आवश्यकापरिहाणि-भावनायै मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

पुण्यवान बहुमूल्य जगत के, विभव माँगते हैं।
लेकिन प्रभु के भक्त प्रभु की, भक्ति चाहते हैं॥
अतः चढ़ाकर अर्घ्य स्वयं का, वैभव खोज रहे।
आवश्यकापरिहाणि भावना, हम भी पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री आवश्यकापरिहाणि-भावनायै अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अर्घ्यावली (विष्णु)

शत्रु मित्र में काँच कनक में, सुख-दुख वन घर में।
योग वियोगों जन्म मरण में, सेवक ईश्वर में॥
ममता तजना समता भजना, निज सामायिक है।
तीर्थंकर की भजें भावना, ये आवश्यक है॥

ॐ ह्रीं श्री सामायिकसहित-आवश्यकापरिहाणि-भावनायै अर्घ्यं...॥ १॥

वृषभनाथ से महावीर तक, प्रभु चौबीस रहे।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, अपना शीश रहे॥
चौबीसों की स्तुति करना, विघ्न विनाशक है।
तीर्थंकर की भजें भावना, ये आवश्यक है॥

ॐ ह्रीं श्री स्तवनसहित-आवश्यकापरिहाणि-भावनायै अर्घ्यं...॥ २॥

किसी एक तीर्थंकर को या, अर्हत् सिद्धों को।
तीन काल में तीन योग से, भजना प्रभुओं को॥
करके नमोऽस्तु करे वंदना, धर्म सहायक है।
तीर्थंकर की भजें भावना, ये आवश्यक है॥

ॐ ह्रीं श्री वंदनासहित-आवश्यकापरिहाणि-भावनायै अर्घ्यं...॥ ३॥

वीतकाल में प्रमाद से जो, निज व्रत संयम में।
लगे दोष अपराध हुये जो, उनके शोधन में॥
निन्दा गर्हा आलोचन ये, प्रतिक्रमण गुण है।
तीर्थंकर की भजें भावना, ये आवश्यक है॥

ॐ ह्रीं श्री प्रतिक्रमणसहित-आवश्यकापरिहाणि-भावनायै अर्घ्यं...॥ ४॥

भविष्य में निज व्रत संयम के, दोषों से बचने।
अयोग्य वस्तुएँ त्याग करना, आतम में रमने॥
प्रत्याख्यान यही सुखदाई, शांति विधायक हैं।
तीर्थंकर की भजें भावना, ये आवश्यक है॥

ॐ ह्रीं श्री प्रत्याख्यानसहित-आवश्यकापरिहाणि-भावनायै अर्घ्यं...॥ ५॥

अपने शरीर से भी ममता, मूर्च्छा त्याग करें।
बाहुबली सम होकर कुछ तो, स्थिर देह करें॥
कायोत्सर्ग यही दुख हर्त्ता, मोक्ष प्रदायक है।
तीर्थंकर की भजें भावना, ये आवश्यक है॥

ॐ ह्रीं श्री कायोत्सर्गसहित-आवश्यकापरिहाणि-भावनायै अर्घ्यं...॥ ६॥

पूर्णार्घ्य (हरिगीतिका)

समता धरें जिन थुति करें, प्रभु वंदना अनिवार्य हो।
कर रोज प्रत्याख्यान प्रतिक्रम, ध्यान कायोत्सर्ग हो॥
षट्कर्म आवश्यक समय से, पद मिले तीर्थंकरा।

'सुव्रत' नमोऽस्तु कर चढ़ाएँ, अर्घ्य भावों से भरा॥

ॐ ह्रीं श्री आवश्यकापरिहाणि-भावनायै अनर्घपदप्राप्तये पूर्णार्घ्यं...।

जाप्य :— ॐ ह्रीं श्री आवश्कापरिहाणि-भावनायै नमः।

जयमाला (ज्ञानोदय)

जैसे तिल में तेल समाहित, ज्यों लकड़ी में अग्न रहे।
जैसे मधुर दूध में घी हो, ज्यों तन में चैतन्य रहे॥
ऐसे ही धर्मात्मा जन में, धर्म समाहित नित रहते।
नख से शिख तक मूलगुणों की, मणियों से शोभित रहते॥१॥
मूलगुणों में षट् आवश्यक, यथाकाल विधियोग्य करें।
तीर्थंकर प्रकृति के आस्रव, करने में सहयोग करें॥
जो वश में हो नहीं किसी के, उन्हें अवश भगवन कहते।
अवश कार्य ही आवश्यक हैं, निश्चय क्रिया इन्हें कहते॥२॥
राग-द्वेष में समता रखकर, सामायिक समभाव धरें।
चौबीसों प्रभु भज स्तुति कर, देववंदना शुद्ध करें॥
प्रतिक्रमण कर दोष नशाएँ, प्रतिदिन प्रत्याख्यान करें।
कायोत्सर्ग करें बन ध्यानी, षट्-आवश्यक नित्य करें॥३॥
करने योग्य छहों ही हों सो, करें नियम से शुद्ध रखें।
रोग दोष अपवाद हरें ये, श्रमण साधु को स्वस्थ रखें॥
और करें क्या अधिक प्रशंसा, तीर्थंकर पद तक दे दें।
सो 'सुव्रत' यह चाहें इनसे, धर्म ध्वजा भी फहरा दें॥४॥

(दोहा)

षट्-आवश्यक भावना, करें शुद्ध दिन-रात।
विघ्न हरण मंगल करण, हो नमोऽस्तु नत माथ॥

ॐ ह्रीं श्री आवश्यकापरिहाणि-भावनायै अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

षट्-आवश्यक नित करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, षट्-आवश्यक भाय॥

(पुष्पांजलिं...)

१५. मार्गप्रभावना भावना-पूजन

स्थापना (शंभु)

तप ज्ञान दान जिनपूजा से, जो धर्म प्रकाश करें जग में।
व्यवहार क्रिया का धर्म यही, जो नहीं भटकने दे भव में॥
ये मार्ग प्रभावना भावनाएँ, जो तीर्थंकर पद दान करें।
सो करके नमोऽस्तु हम पूजें, मन मंदिर में आह्वान करें॥

ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावना भावना अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(शुद्धगीता)

हमें मिथ्यात्व ने मारा, जन्म भर दीं व्यथाएँ हैं।
कहो कैसे मिले मुक्ति, सभी की ये कथाएँ हैं॥
व्यथाएँ दूर करने हम, चरण में जल चढ़ाते हैं।
भजें जिन भावना पथ की, प्रभु तीर्थेश ध्याते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावना-भावनायै जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

कभी इसका कभी उसका, सदा ही ध्यान हम रखते।
इसी उलझन में तपके हम, स्वयं के ध्यान से भटके॥
स्वयं में डूब जाने को, चरण चंदन चढ़ाते हैं।
भजें जिन भावना पथ की, प्रभु तीर्थेश ध्याते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावना-भावनायै संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

चरण में हम पढ़े कब से, हृदय में अब पधारो जी।
हृदय में आ विराजो वा, हमें निजसम निखारो जी॥
भ्रमण भव का मिटाने को, चरण अक्षत चढ़ाते हैं।
भजें जिन भावना पथ की, प्रभु तीर्थेश ध्याते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावना-भावनायै अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

बुरे सब भाव दुख देते, भले सब भाव सुख देते।
इसी से काम भावों को, विरागी भव्य तज देते॥
विकारी भाव तजने को, चरण पुष्पम चढ़ाते हैं।
भजें जिन भावना पथ की, प्रभु तीर्थेश ध्याते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावना-भावनायै कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

अगर भोजन क्षुधा हरते, तभी तो स्वस्थ सब होते।
अगर सब स्वस्थ होते तो, दवा उपचार क्यों होते॥

क्षुधा का रोग हरने को, चरण नैवेद्य लाते हैं।
भजें जिन भावना पथ की, प्रभु तीर्थेश ध्याते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावना-भावनायै क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

मिले वह दीप ज्योति जो, निहारे आपको स्वामी।
यही तम मोह हर करके, करे अरिहंत आगामी॥
महातम मोह हरने को, चरण दीपक जलाते हैं।
भजें जिन भावना पथ की, प्रभु तीर्थेश ध्याते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावना-भावनायै मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

करम के हम सताए हैं, धरम अपना लुटा बैठे।
सुखी सिद्धों के जैसे हैं, मगर संसार पा बैठे॥
करम के चक्र हरने को, भगत धूपम् चढ़ाते हैं।
भजें जिन भावना पथ की, प्रभु तीर्थेश ध्याते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावना-भावनायै अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

सदा हम दोष जग को दें, यही भूलें अपावन हैं।
स्वयं के फल स्वयं भोगें, पराये मात्र साधन हैं॥
तजें संसार फल सारे, अतः ये फल चढ़ाते हैं।
भजें जिन भावना पथ की, प्रभु तीर्थेश ध्याते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावना-भावनायै मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

जगत के मार्ग में उलझे, अतः कल्याण कैसे हो।
मगर अब मार्ग सम्यक् पा, कहो निर्वाण क्यों ना हो॥
शिला सिद्धों की पाने को, चरण अर्घ्यम् चढ़ाते हैं।
भजें जिन भावना पथ की, प्रभु तीर्थेश ध्याते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावना-भावनायै अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अर्घ्यावली (चौपाई)

पूज्य चैत्य चैत्यालय आगम, संघ चतुर्विध को दे निजधन।
इनमें द्रव्य लगाते रहना, प्रभावना जिनपथ की करना॥

ॐ ह्रीं श्री द्रव्यतः-मार्गप्रभावना-भावनायै अर्घ्यं...॥ १॥

निज दल बल से करें सुरक्षा, धर्म तीर्थ धरमी की रक्षा।
यथाशक्ति से सेवा करना, प्रभावना जिन पथ की करना॥

ॐ ह्रीं श्री शक्तितः-मार्गप्रभावना-भावनायै अर्घ्यं...॥ २॥

दे आदेश धर्म पलवाना, हिंसा पाप व्यसन रुकवाना।
आज्ञा दान धर्म को करना, प्रभावना जिनपथ की करना॥

ॐ ह्रीं श्री आज्ञातः-मार्गप्रभावना-भावनायै अर्घ्यं...॥ ३॥

तन से करके खूब तपस्या, धर्म दिखाकर हरें समस्या।
तप से उच्च धर्म को करना, प्रभावना जिनपथ की करना॥

ॐ ह्रीं श्री तपस्तः-मार्गप्रभावना-भावनायै अर्घ्यं...॥ ४॥

अपने मन से धर्म सम्हालें, मन को शुद्ध करें सुख पा लें।
अतः धर्म मन से ही करना, प्रभावना जिनपथ की करना॥

ॐ ह्रीं श्री मनस्तः-मार्गप्रभावना-भावनायै अर्घ्यं...॥ ५॥

पाकर अद्भुत ज्ञान कलाएँ, चमत्कार खुद ही दिख जाएँ।
धर्म ज्ञान से ऊँचा करना, प्रभावना जिनपथ की करना॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानतः-मार्गप्रभावना-भावनायै अर्घ्यं...॥ ६॥

देकर दान चेतना सजिए, प्राण जाएँ पर दान न तजिए।
अतिशय पूर्ण दान को करना, प्रभावना जिनपथ की करना॥

ॐ ह्रीं श्री दानतः-मार्गप्रभावना-भावनायै अर्घ्यं...॥ ७॥

दोषी को दे दण्ड सँभल के, जिससे सत्य अहिंसा झलके।
न्याय धर्म-संरक्षक करना, प्रभावना जिनपथ की करना॥

ॐ ह्रीं श्री न्यायतः-मार्गप्रभावना-भावनायै अर्घ्यं...॥ ८॥

रहें समर्पित करें भक्तियाँ, जिसे देख हो प्रकट शक्तियाँ।
ऊँचा धर्म भक्ति से करना, प्रभावना जिन पथ की करना॥

ॐ ह्रीं श्री भक्तितः-मार्गप्रभावना-भावनायै अर्घ्यं...॥ ९॥

रोग शोक में कुपथ न पालें, खुद सँभलें सद्धर्म सँभालें।
समता धार धर्म को करना, प्रभावना जिनपथ की करना॥

ॐ ह्रीं श्री समताभावतः-मार्गप्रभावना-भावनायै अर्घ्यं...॥ १०॥

पूर्णार्घ (हरिगीतिका)

तप ज्ञान आज्ञा शक्ति धन मन, दान समता न्याय से।
जिन धर्म को ऊँचा उठाना, भक्ति आदिक भाव से॥
जिन मार्ग की ये भावना से, पद मिले तीर्थंकरा।
'सुव्रत' नमोऽस्तु कर चढ़ाएँ, अर्घ्य भावों से भरा॥

ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावना-भावनायै अनर्घपदप्राप्तये पूर्णार्घ्यं...।

जाप्य :— ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावना-भावनायै नमः।

जयमाला

(ज्ञानोदय)

यह जिज्ञासा विचलित करती, डँवाडोल से जग जन को।
भगवन धर्म बनाते हैं या, धर्म बनाता भगवन को॥
यदि भगवन यह धर्म बनाते, तो फिर धर्म अनादि नहीं।
मतलब धर्म बनाता भगवन, स्वयं हुआ है सिद्ध यही॥ १॥
धर्म कृपा से भक्त जगत के, बन सकते भगवान अरे।
फिर क्यों हों भयभीत धर्म से, धर्म स्वर्ग सुख मोक्ष करें॥
अतः श्रेष्ठ यह प्रभावना कि, अप्रभावना से बचना।
जैसे तैसे कैसे ऐसे, प्रभावना की हो रचना॥२॥
सात क्षेत्र में द्रव्य दान दें, ज्ञान भक्ति तप आज्ञा से।
न्याय शक्ति से साम्य भाव से, मन की धार्मिक श्रद्धा से॥
धर्म तीर्थ मंदिर बनवाना, बिम्ब प्रतिष्ठा करवाना।
गजरथ फेरी धर्म महोत्सव, करके आगम लिखवाना॥३॥
भव भोगों से विरक्त होकर, व्रत दीक्षा ले तप करना।
ज्ञान भेद विज्ञान तर्क से, जिनशासन शोभित करना॥
पाप व्यसन हिंसा के ताण्डव, रोग महामारी हरने।
'विद्या' के 'सुव्रत' जिनपथ की, निकले प्रभावना करने॥४॥

(दोहा)

प्रभावना जिन मार्ग की, करके धर्म दिखाएँ।
निज पर का सहयोग कर, जिन चैतन्य सजाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावना-भावनायै अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

मार्गप्रभावना नित करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, मार्गप्रभावना भाय॥

(पुष्पांजलिं...)

१६. प्रवचनवात्सल्य भावना-पूजन

स्थापना (शंभु)

गौ बछड़े सम स्नेह रखें, साधर्मी से निश्छल होकर।
सो धर्म विमुख संसारी को, दें धर्म प्रेम निस्पृह होकर॥
वात्सल्य भरी ये भावनाएँ, प्रभु तीर्थंकर पद दान करें।
सो करके नमोऽस्तु हम पूजें, में मंदिर में आह्वान करें॥

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनवात्सल्य भावना अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(राज)

हम अनादि के सताये आ रहे।
राग के वश जन्म मृत्यु पा रहे॥
प्रेम का जल दीजिए सुन प्रार्थना।
हम भजें वात्सल्य की शुभ भावना॥

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनवात्सल्य-भावनायै जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

द्वेष से भवताप हमको हो रहा।
छाँव पाने आपकी मन हो रहा॥
छाँव चंदन सी करो सुन प्रार्थना।
हम भजें वात्सल्य की शुभभावना॥

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनवात्सल्य-भावनायै संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

कौन देता साथ इस संसार में।
छोड़ देते नाव सब मझधार में॥
धाम अक्षय दीजिए सुन प्रार्थना।
हम भजें वात्सल्य की शुभभावना॥

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनवात्सल्य-भावनायै अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

काम ने जब प्रेम को अपना लिया।
भक्त ने निज ब्रह्म तब महका लिया॥
काम दुख हर लीजिए सुन प्रार्थना।
हम भजें वात्सल्य की शुभभावना॥

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनवात्सल्य-भावनायै कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

प्रेम बिन आहार होता है जहर।
प्रेम से विषयुक्त भोजन हो मधुर॥
प्रेम का नैवेद्य दो सुन प्रार्थना।
हम भजे वात्सल्य की शुभभावना॥

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनवात्सल्य-भावनायै क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

दीप से दीपक जले उजयार हो।
प्रेम बिन मानव जले अँधयार हो॥
प्रेम का दीपक जले सुन प्रार्थना।
हम भजें वात्सल्य की शुभभावना॥

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनवात्सल्य-भावनायै मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

प्रेम बिन संग्राम होते कर्म के।
जीव होते भ्रष्ट सुख के धर्म से॥
प्रेम की दो धूप सुनकर प्रार्थना।
हम भजें वात्सल्य की शुभभावना॥

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनवात्सल्य-भावनायै अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

प्रेम के फल से सुखी घर वार हो।
प्रेम बिन दुख से दुखी हर द्वार हो॥
प्रेम के फल दीजिए सुन प्रार्थना।
हम भजें वात्सल्य की शुभभावना॥

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनवात्सल्य-भावनायै मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

प्रेम बिन जब ना मिले जग में हँसी।
तो कहो कैसे मिले जग की खुशी॥
प्रेम का दो अर्घ्य सुनकर प्रार्थना।
हम भजें वात्सल्य की शुभभावना॥

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनवात्सल्य-भावनायै अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अर्घ्यावली

(अडिल्ल)

मुनि आर्यिका श्रावक श्रविका संघ में।
गौ बछड़ों सम सहज प्रेम हो धर्म में॥

साधर्मी से प्रीति कर आतम सजें।
यह प्रवचनवात्सल्य भावना हम भजें॥

ॐ ह्रीं श्री साधर्मी-प्रवचनवात्सल्य-भावनायै अर्घ्यं...॥ १॥

धर्म भाव से मात पिता परिवार पर।
रखकर धार्मिक प्रेम धर्म उपकार कर॥
धार्मिक कुल से प्रीति कर आतम सजें।
यह प्रवचनवात्सल्य भावना हम भजें॥

ॐ ह्रीं श्री धार्मिककुल-प्रवचनवात्सल्य-भावनायै अर्घ्यं...॥ २॥

चार तरह के श्रमण संघ से राग कर।
उन जैसे बनने को कुछ वैराग्य धर॥
चतुर्वर्ण से प्रीति कर आतम सजें।
यह प्रवचनवात्सल्य भावना हम भजें॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्वर्ण-प्रवचनवात्सल्य-भावनायै अर्घ्यं...॥ ३॥

द्वादशांग जिनवाणी का सत्कार कर।
सिद्धांतों की नैया से भव पार कर॥
द्वादशांग से प्रीति कर आतम सजें।
यह प्रवचनवात्सल्य भावना हम भजें॥

ॐ ह्रीं श्री द्वादशांग-प्रवचनवात्सल्य-भावनायै अर्घ्यं...॥ ४॥

रत्नत्रय या रत्नत्रय के नाथ से।
विनय भक्ति अनुराग मोक्ष तक साथ दे॥
रत्नत्रय से प्रीति कर आतम सजें।
यह प्रवचनवात्सल्य भावना हम भजें॥

ॐ ह्रीं श्री रत्नत्रय-प्रवचनवात्सल्य-भावनायै अर्घ्यं...॥ ५॥

नवदेवों की करना सादर अर्चना।
दुख का चक्र मिटाने होगी साधना॥
नवदेवों में प्रीति कर आतम सजें।
यह प्रवचनवात्सल्य भावना हम भजें॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता-प्रवचनवात्सल्य-भावनायै अर्घ्यं...॥ ६॥

मोक्षमार्ग के शरण भूत साधक रहे।

आचार्यों उपाध्याय साधु को गुरु कहे॥
सम्यक् गुरु से प्रीति कर आतम सजें।
यह प्रवचनवात्सल्य भावना हम भजें॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्गुरु-प्रवचनवात्सल्य-भावनायै अर्घ्यं...॥ ७॥

जड़ चेतन के सभी भोग उपभोग को॥
त्याग गुप्ति में रहे शुद्ध-उपयोग को।
पर तज निज से प्रीति कर आतम सजें।
यह प्रवचनवात्सल्य भावना हम भजें॥

ॐ ह्रीं श्री निज-प्रवचनवात्सल्य-भावनायै अर्घ्यं...॥ ८॥

वैयावृत्य आचार्य आदि की भी करें।
यथायोग्य अनुकूल प्रेम से ही करें॥
वौयावृत्य से प्रीति कर आतम सजें।
यह प्रवचनवात्सल्य भावना हम भजें॥

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्य-प्रवचनवात्सल्य-भावनायै अर्घ्यं...॥ ९॥

राग-द्वेष मद मायाचारी छोड़ के।
साधर्मी का आदर करना दौड़ के॥
सरलभाव से प्रीति कर आतम सजें।
यह प्रवचनवात्सल्य भावना हम भजें॥

ॐ ह्रीं श्री सरलभाव-प्रवचनवात्सल्य-भावनायै अर्घ्यं...॥ १०॥

पूर्णार्घ्य (हरिगीतिका)

सहधर्मियों से प्रेम करना छोड़, हर दुर्भावना।
सो धर्म दौड़ेगा निरंतर, सिद्ध हो हर साधना॥
वात्सल्य प्रवचन भावना से, पद मिले तीर्थंकरा।
'सुव्रत' नमोऽस्तु कर चढ़ाएँ, अर्घ्य भावों से भरा॥

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनवात्सल्य-भावनायै अनर्घपदप्राप्तये पूर्णार्घ्यं...।

जाप्य :— ॐ ह्रीं श्री प्रवचनवात्सल्य-भावनायै नमः।

जयमाला (ज्ञानोदय)

आत्म ध्यान से भले मोक्ष हो, किंतु धर्म पथ चलें नहीं।
तीर्थंकर सम धर्म प्रवर्तक, अन्य कोई भी भले नहीं॥

जिस हेतु वात्सल्य भावना, जिन पथ धर्म सहायक है।
सहधर्मी से निश्छल होकर, प्रेमभाव आवश्यक है॥१॥
निश्छल प्रेम दया को पाकर, हिंसक शेर आदि प्राणी।
शीघ्र दयालु बन जाते हैं, अपने पर को कल्याणी॥
दल-बल से जो राज करें वो, केवल तन पर राज करें।
प्रेम दया में रमने वाले, तन-मन दिल पर राज करें॥२॥
प्रेम चेतना का गुण होता, क्रोध कषाय विकारी हैं।
प्रेम अनंतानंत हुआ सो, राग-द्वेष संसारी हैं॥
अतः प्रेम जब अनंत होता, रोम-रोम तब संत बनें।
देह बने देवालय जैसा, चेतन प्रभु भगवंत बनें॥३॥
सभी धर्म की उत्तम शिक्षा, जीव मात्र से प्रेम करो।
धर्म ध्वजा को रखो सुरक्षित, आतम में सुख क्षेम भरो॥
टूटे दिल को रूठे मन को, छूटे जन को स्वस्थ रखें।
'विद्या' के 'सुव्रत' मुनि चाहें, सबसे नित वात्सल्य रखें॥४॥

(दोहा)

वात्सल्य की भावना, सभी रखें भरपूर।
शंखनाद कर धर्म का, रोग शोक हों दूर॥

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनवात्सल्य-भावनायै अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

वात्सल्य भावना नित करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, वात्सल्य भावना भाय॥

(पुष्पांजलिं...)

समुच्चय महाऽर्घ्य (दोहा)

अर्घ्य तीन सौ चार ले, दस लेकर पूर्णार्घ्य।
सोलहकारण का भजें, महासमुच्चय अर्घ्य॥
तीन शतक पंद्रह रहे, अर्घ्य भक्ति के रूप।
कर नमोऽस्तु हम चाहते, चित् चैतन्य स्वरूप॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारण-भावनायै पंचदशाधिक-त्रिशतक अर्घ्यरूप समुच्चय महार्घ्यं...।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

सोलहकारण भावना, भाकर बनें महान।
हम नमोऽस्तु कर पूजते, तीर्थंकर भगवान॥

(ज्ञानोदय)

जो जैसे भावों को करते, वैसे फल उनको मिलते।
अशुभ भाव से मिले नरक गति, मात्र अशुभ से पशु बनते॥
शुभ भावों से मानव बनते, शुभ-शुभ द्वारा देव बनें।
त्याग शुभाशुभ शुद्ध भाव से, देवों के भी देव बनें॥१॥
अशुभ भाव संसार भ्रमण दे, शुभ भावों से स्वर्ग मिले।
शुद्ध भाव से बने केवली, परम शुद्ध से मोक्ष मिले॥
अतः अशुभ भावों को त्यागो, सदा भाव शुभ शुद्ध रखो।
सोलहकारण भाय भावना, तीर्थंकर के चरण भजो॥२॥
पहली दर्शनविशुद्धि भावना, सम्यग्दर्शन से पाना।
पूज्य विनयसम्पन्न भावना, विनय भाव से अपनाना॥
शीलव्रताननिचार भावना, शुद्ध शील व्रत रख पाना।
अभीक्ष ज्ञानपयोग भावना, सम्यग्ज्ञान सहित ध्याना॥३॥
फिर संवेग भावना भाकर, भव दुख से भयभीत रहें।
त्याग भावना यथाशक्ति से, करें धर्म के मीत रहें॥
यथाशक्ति तपरूप भावना, करके कर्म नशा डालें।
साधुसमाधि भावना भाकर, साधु के संकट टालें॥४॥
वैयावृत्य भावना भाकर, गुणियों के दुख दूर करें।
अर्हत गुरुवर बहुश्रुत प्रवचन, विनय भक्ति भरपूर करें॥
आवश्यकापरिहाणि भावना, भाकर निज कर्त्तव्य करें।
धर्म मार्ग की प्रभावना को, ज्ञान दान तप नित्य करें॥५॥
कर प्रवचनवात्सल्य भावना, साधर्मी से प्रेम करें।
अलग अलग वा एक साथ में, करें भावना कर्म हरें॥
जिससे रिश्ते नाते सुधरें, वातावरण मनोहर हो।
तीर्थंकर सम 'विद्या' पाकर, 'सुव्रत' धर्म धरोहर हो॥ ६॥

(दोहा)

सोलहकारण से बनें, तीर्थंकर जगदीश।
सुखी स्वस्थ सुव्रत रहें, दो ऐसा आशीष॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारण-भावनायै समुच्चय जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

सोलहकारण नित करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, सोलहकारण भाय॥

(पुष्पांजलिं...)

प्रशस्ति

विश्व महामारी पड़ी, कोरोना के दर्द।
सोलहकारण लिख किये, गुरु पूर्णिमा पर्व॥
छत्री वाले शिवपुरी, दो हजार सन् बीस।
'विद्या' के 'सुव्रत' रचे, गुरु प्रभु को नत शीश॥

(इति शुभम्)

विधान आरती

(लय—बाजे छम-छम-छम....)

बाजे छम-छम-छम छमाछम, बाजे घुँघरू....बाजे घुँघरू।
हाथों में दीपक लेकर आरती करूँ॥
सोलहकारण भजें भावना, जिनशासन की करें साधना।
तीर्थंकर की वंदना करूँ, हाथों में.....॥ १॥
इन्हीं भावनाओं को भाके, प्रभु तीर्थंकर का पद पा के।
भव से बचने प्रार्थना करूँ, हाथों में.....॥ २॥
समवसरण में प्रभुजी सोहें, मोक्षमार्ग दे सबको मोहें।
आतम ध्याने भावना करूँ, हाथों में.....॥ ३॥
करूँ आरती शुभ भावों से, बचूँ रोग दुख दुर्भावों से।
'सुव्रत' धरकर मुक्ति वरूँ, हाथों में.....॥ ४॥